04 - संवैधानिक मर्यादा का खुलेआम अतिक्रमण

05 - बोझिल भविष्य में सुख देंगी कलाएं

06 - भगवान परशुराम जन्मोत्सव पर 151 जोड़े करेंगे भगवान धारेश्वर...

07 - जिले में अनेक स्थानों पर जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत...

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

भोपाल

मंगलवार, 24 मार्च, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 200, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

ईरान संकट को समझने में जूझ रहे भारतीय मुस्लिम बुद्धिजीवी

आमना बेगम

अमेरिका-इज़रायल और ईरान के बीच युद्ध सिर्फ एक अंतरराष्ट्रीय मामला नहीं है, जो घर से बहुत दूर कहीं चल रहा हो। यह सीमाओं को सैनिकों के जरिए नहीं, बल्कि विचारों, भावनाओं और नैरेटिव के जरिए पार करता है और उन समाजों में भी बातचीत और राजनीतिक सोच को प्रभावित करता है, जो युद्ध के मैदान से बहुत दूर हैं।

इस बात पर पहले ही बहुत कुछ लिखा जा चुका है कि भारत के दक्षिणपंथ के कुछ हिस्से इज़रायल का समर्थन क्यों करते हैं और यह अक्सर इस्लाम को लेकर उनकी अपनी सोच से जुड़ा होता है। मैंने भी पहले लिखा है कि भारतीय शिया मुसलमानों को आयतुल्ला अली खामेनेई के लिए शांति से मातम मनाने का अधिकार है, भले ही वे एक बेहद विवादित शख्सियत हों। मैंने भारतीय दक्षिणपंथ की इस बात के लिए भी आलोचना की है कि वह पूरे समुदाय को खलनायक की तरह पेश करता है। लेकिन जिस बात को हम उसी ईमानदारी से बहुत कम देखते हैं, वह दूसरी तरफ है–आखिर भारतीय मुसलमानों के कुछ हिस्से, जिनमें कुछ बौद्धिक आवाज़ें भी शामिल हैं, ईरान के समर्थन में क्यों बोलते हैं। इस प्रतिक्रिया को क्या चीज़ आकार देती है? क्या यह सिर्फ धार्मिक एकजुटता है, राजनीतिक स्थिति है, या इससे भी गहरी कोई चीज है, जो पहचान और वैश्विक जुड़ाव की भावना से जुड़ी है?

कई मुस्लिम समुदाय, चाहे शिया हों या सुन्नी, अक्सर इस पर धार्मिक नज़रिए से प्रतिक्रिया देते हैं और सच कहूं तो, यह नज़रिया धीरे-धीरे कबीलाई सोच में बदल जाता है, जो उम्माह जैसी धारणाओं या धार्मिक नेताओं के संदेशों से बनती है। ईरान के मामले में, खासकर शिया मुसलमानों के बीच, सहानुभूति की एक परत इतिहास से भी जुड़ी है। खामेनेई को सिर्फ एक राजनीतिक नेता के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है जिसने पश्चिमी प्रभुत्व को चुनौती दी, जिसने शिया पहचान को एक निष्क्रिय चीज से बदलकर राजनीतिक रूप से मुखर बनाया।

भारत में शिया समुदायों ने ज्यादातर अपनी बात शांतिपूर्ण मातम और प्रदर्शन के जरिए रखी है, लेकिन पाकिस्तान में, यही भावनाएं ज्यादा तीखे और कई बार हिंसक प्रदर्शनों में भी दिखी हैं, जहां अपने ही राज्य पर अमेरिका के साथ मिला होने के आरोप लगाए गए।

मैं इन भावनाओं को समझ सकती हूं। ये धार्मिक पहचान और कबीलाई सोच से बनती हैं, लेकिन जो बात मुझे बेचैन करती है, वह यह है कि बौद्धिक आवाज़ें भी अक्सर इसी कबीलाई ढांचे से बाहर नहीं निकल पातीं। आप उनसे ज्यादा परतदार, ज्यादा संतुलित नजरिए की उम्मीद करते हैं। लेकिन कई बार तर्क पहचान की सीमा के भीतर ही बंद रह जाता है। मैंने ऐसे तर्क सुने हैं कि ईरान भारत का दोस्त रहा है, इसलिए भारत को ईरान के साथ खड़ा होना चाहिए, लेकिन फिर इज़रायल का क्या? इज़रायल ने भी भारत का कई अहम मौकों पर साथ दिया है, खासकर रक्षा, खुफिया और तकनीक के क्षेत्र में। अगर विदेश नीति को चुनिंदा यादों या पहचान के आधार पर पक्ष चुनने तक सीमित कर दिया जाए, तो वह विश्लेषण नहीं रह जाती, बल्कि सिर्फ एक पक्ष के साथ खड़ा होना बन जाती है।

और शायद यही वह रेखा है, जिसे पार करने में कई भारतीय मुस्लिम बुद्धिजीवी अब भी संघर्ष कर रहे हैं। दूसरा तर्क जो मैं बार-बार सुनती हूं, वह इज़रायल द्वारा किए गए मानवाधिकार उल्लंघनों को लेकर है और यह चिंता बिल्कुल जायज है। जब खामेनेई के तहत ईरानी शासन मानवाधिकार उल्लंघन करता है, तब यही आवाज़ें कहां होती हैं?

मैं त्रासदियों की तुलना करने या दुख को कम-ज्यादा बताने की कोशिश नहीं कर रही हूं। लेकिन एक सत्तावादी नेता का जश्न मनाना या उसे महिमामंडित करना और दूसरी तरफ किसी दूसरे पक्ष की मिलती-जुलती या अलग तरह की हिंसा के लिए निंदा करना–यह वह बात नहीं है, जिसकी उम्मीद किसी बुद्धिजीवी या खुद को उदारवादी कहने वाले लोगों से की जाती है। मानवाधिकार ऐसा नज़रिया है, जिसे चुनकर लागू नहीं किया जा सकता।

जिस एक तर्क से मैं सच में सहमत होती हूं, वह इससे भी आसान है, कि युद्ध ऐसी चीज़ नहीं है, जिस पर खुशी मनाई जाए. इसकी कीमत बहुत भारी होती है और अपने मूल में यह अब भी आक्रामकता ही है। हम इसके लिए चाहे जो भाषा इस्तेमाल करें–रणनीति, सुरक्षा, रोकथाम–हकीकत वही रहती है।

साथ ही, ईरान में मानवाधिकार उल्लंघनों को सैन्य हमले को सही ठहराने के आधार के रूप में इस्तेमाल करना एक खतरनाक दरवाजा खोल देता है क्योंकि अगर यही तर्क बन जाए, तो फिर कोई भी देश किसी दूसरे देश की आंतरिक विफलताओं का हवाला देकर उस पर हमला करने का हक जताने लगेगा। फिर उसका अंत कहां होगा?

मैं कुछ प्रमुख भारतीय मुस्लिम आवाजों के इंटरव्यू और भाषणों में बार-बार पैन-इस्लामिज्म, यानी एकजुट उम्माह की बात सुनती हूं और यहीं पर वे खुद को सामने ला देते हैं। इस तरह की सोच का इंसानियत से बहुत कम और पहचान से बहुत ज्यादा लेना-देना है। अगर हम आज की भू-राजनीतिक सच्चाई को देखें, तो एकजुट उम्माह की बात व्यवहार में कहीं दिखती भी नहीं है। मुस्लिम बहुल देश खुद अपने हितों, गठबंधनों और राजनीति के आधार पर बंटे हुए हैं। फिर भी, इस विचार की भावनात्मक ताकत अब भी प्रतिक्रियाओं को आकार देती है।

यह सिर्फ दूर कहीं चल रहे युद्ध की बात नहीं है; यह यह भी दिखाता है कि हम कैसे सोचते हैं और हमारी नैतिक समझ को कौन-सी चीज़ें आकार देती हैं। किसी एक पक्ष को चुन लेना आसान है, पहचानों के साथ खड़ा होना आसान है, दुनिया को 'हम बनाम वे' के नजरिए से देखना आसान है। यह स्वाभाविक भी लगता है, और कई बार सुकून देने वाला भी।

लेकिन इसी समय हम कुछ बहुत ज़रूरी चीज़ खो भी देते हैं। जब बुद्धिजीवी, यानी वे आवाज़ें जिनसे उम्मीद की जाती है कि वे तुरंत उभरी भावनाओं से ऊपर उठेंगी, वही कबीलाई रेखाएं दोहराने लगती हैं, तब ईमानदार सोच की जगह छोटी होने लगती है। अगर युद्ध, मानवाधिकार और न्याय पर हमारी राय इस बात के हिसाब से बदलती है कि मामला किससे जुड़ा है, तो फिर वे सच में सिद्धांत नहीं हैं।

भारत, अपनी सारी विविधता के साथ, हमेशा से इन संकीर्ण पहचानों से आगे सोचने का मौका रखता आया है। दुनिया की घटनाओं को धार्मिक एकजुटता या राजनीतिक सुविधा के नजरिए से नहीं, बल्कि एक ज्यादा जमीन से जुड़े, मानवीय नज़रिए से देखने की ज़रूरत है और यह सिलसिला आगे भी जारी रहना चाहिए।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

हमला रुके...होर्मुज खुले और शांति आए

- संसद में मोदी बोले-कमर्शियल जहाजों पर हमले बर्दाश्त नहीं
- कहा-होर्मुज जैसे अंतरराष्ट्रीय जलमार्गों की नाकेबंदी अस्वीकार्य

पश्चिम एशिया संकट पर कहा- बातचीत से हो समस्या का हल

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया संकट और होर्मुज स्ट्रेट में फंसी जहाजों के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में कहा कि कमर्शियल जहाजों पर हमले और होर्मुज स्ट्रेट जैसे अंतरराष्ट्रीय जलमार्गों की नाकेबंदी अस्वीकार्य है। भारत इस युद्ध जैसे माहौल में भी, भारतीय जहाजों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए कूटनीति के माध्यम से लगातार प्रयास कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को लोकसभा में कहा कि पश्चिम एशिया की स्थिति चिंताजनक है। उन्होंने पश्चिम एशिया के अधिकांश देशों के राष्ट्राध्यक्षों से दो दौर में फोन पर बात की है। उन सभी ने भारतीयों की सुरक्षा का आश्वासन दिया है। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि भारत शांति व्यवस्था बनाए रखने का पक्षधर है। उन्होंने सभी देशों से युद्ध खत्म करने और तनाव कम करने का आग्रह किया। मोदी ने कहा कि भारत बातचीत और कूटनीति के जरिये मसलों को सुलझाने का पक्षधर रहा है।

- **वैश्विक कूटनीति में भारत की भूमिका स्पष्ट**– पश्चिम एशिया संघर्ष पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, कूटनीति में भारत की भूमिका स्पष्ट है। शुरू से ही, हमने इस संघर्ष को लेकर अपनी गहरी चिंता व्यक्त की है। मैंने व्यक्तिगत रूप से पश्चिम एशिया के सभी संबंधित नेताओं से बात की है।
- **हर चुनौती का सामना धैर्य, संयम से करना है**– प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, हमें हर चुनौती का सामना धैर्य, संयम और शांत मन से करना चाहिए। यही हमारी पहचान है, यही हमारी ताकत है। हमें बहुत सावधान और सतर्क भी रहना होगा। जो लोग इस स्थिति का फायदा उठाना चाहते हैं, वे झूठ फैलाने की कोशिश करेंगे। हमें उनके प्रयासों को सफल नहीं होने देना है। मैं इस सदन के माध्यम से सभी राज्य सरकारों से भी अपील करूंगा। ऐसे समय में कालाबाजारी करने वाले और जमाखोर सक्रिय हो जाते हैं। इसके लिए कड़ी निगरानी जरूरी है। जहां कहीं भी ऐसी शिकायतें आती हैं, कार्रवाई हो।

यूपीएससी में सिलेक्ट एमपी के 61 युवाओं का सम्मान

सीएम डॉ. मोहन यादव बोले–आपका चयन स्थायी, हमें तो हर 5 साल में परीक्षा देनी पड़ती है

भोपाल। कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में शनिवार को यूपीएससी (UPSC) के चयनित अभ्यर्थियों के लिए 'सफलता के मंत्र' सम्मान समारोह आयोजित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मौजूदगी में हुए इस कार्यक्रम में उन 61 चेहरों की चमक दिखी, जिन्होंने संघर्ष और सीमित संसाधनों के बीच देश की सबसे कठिन परीक्षा क्रैक की। यहां मुख्यमंत्री ने कहा कि लोकतंत्र की यही खूबसूरती है कि यहां एक चाय वाला प्रधानमंत्री बनता है और एक गाय वाला मुख्यमंत्री। हमें हर 5 साल में जनता के बीच परीक्षा देनी पड़ती है, नीतियों के आधार पर उनका विश्वास जीतना पड़ता है। इस दौरान सीएम ने 'प्रतिभाओं का परचम' पुस्तिका का विमोचन किया और अभ्यर्थियों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में उच्च शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार, अनुपम राजन और हिंदी ग्रंथ अकादमी के डायरेक्टर अशोक कड़ेल भी मौजूद रहे।

37 से 61 तक पहुंचा सफर- 22 बच्चे सरकारी कॉलेजों के अपर मुख्य सचिव अनुपम राजन ने बताया कि यह सिलसिला 2020 में तब शुरू हुआ था जब डॉ. मोहन यादव उच्च शिक्षा मंत्री थे। तब चयनित बच्चों की संख्या केवल 37 थी, जो अब बढ़कर 61 हो गई है। खास बात यह है कि इनमें 20 बेटियां हैं और 22 अभ्यर्थी ऐसे हैं जिन्होंने किसी महंगे प्राइवेट कॉलेज के बजाय सरकारी कॉलेजों से पढ़ाई की है।

सीएम बोले–2047 में आजादी के अमृतकाल को देखेंगे

सीएम के मंत्रः 'चाय वाला पीएम और गाय वाला सीएम बन सकता है, यह लोकतंत्र की खूबसूरती' मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आप सौभाग्यशाली हैं जो 2047 के अमृतकाल में भारत को नंबर-1 बनते देखेंगे। सीएम ने खुद का उदाहरण देते हुए कहा कि पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती, उन्होंने खुद राजनीति में रहते हुए कई डिग्रियां हासिल कीं। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने जब अपनी तुलना नवनियुक्त अफसरों से की, तो पूरा हॉल ठहाकों से गूंज उठा। सीएम ने कहा कि 'लोकतंत्र में आप सौभाग्यशाली हैं कि एक बार परीक्षा पास की और आपका चयन पक्का हो गया। लेकिन हम राजनीतिज्ञों की परीक्षा हर पांच साल में होती है। हमें जनता के बीच जाना पड़ता है, अपनी नीतियों का हिसाब देना पड़ता है और फिर से उनका भरोसा जीतना पड़ता है। यह व्यवस्था ही देश को जीवंत रखती है।' उन्होंने संदेश दिया कि पद मिलने के बाद अहंकार नहीं, बल्कि सेवा का भाव होना चाहिए क्योंकि असली परीक्षा 'मैदान' (फील्ड) में होती है।

इतिहास जानने वाला ही भविष्य बना सकता है

सीएम ने कहा कि अधिकतर युवा आईटी बैकग्राउंड से होने के बावजूद साहित्य और इतिहास विषय लेकर सफल हो रहे हैं, यह अच्छी बात है। जो अपने देश के इतिहास को नकारता है, वह भविष्य में आगे नहीं बढ़ सकता। उन्होंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस और शहीद भगत सिंह का उदाहरण देते हुए कहा कि आज बलिदान का नहीं, बल्कि देश के लिए जीने और वंचितों के लिए काम करने का समय है। समारोह में एसीएस अनुपम राजन ने अपने संबोधन में कहा कि अब यूपीएससी के लिए दिल्ली जाना या बड़े संस्थानों में पढ़ना जरूरी नहीं है। अनूपपुर, डिंडोरी, छतरपुर और सतना जैसे छोटे जिलों के युवाओं ने साबित कर दिया है कि प्रतिभा हर जगह से रास्ता बनाती है। कई चयनित अभ्यर्थी किसान परिवारों से हैं, जिन्होंने आईआईटी या स्टीफेंस जैसे टैग के बिना सफलता पाई। इस बार की एक बड़ी उपलब्धि यह भी है कि इन 61 में से 22 अभ्यर्थी जो सरकारी कॉलेजों से सीधे स्नातक हैं ऐसे हैं जिन्होंने अपनी पढ़ाई मध्य प्रदेश के सरकारी कॉलेजों और यूनिवर्सिटीज से की है।

शरद की सुबह

ये न कह तू ही सही है

तू कहे जो सच वही है।

कह चुकीं सब कुछ किताबें

बात पर कुछ अनकही है।

तू अकेला ही नहीं है

पीर तो सबने सही है।

हर कोई खुद को कहे सच

सत्य की पीड़ा यही है।

है भरम कि दिन उगा है

दोस्त, अब तक रात ही है।

झिरिया ही फूटी सदा, कब

ज्ञान की गंगा बही है।

आंख के परदे हटा तो

मैं हूं जो तू भी वही है।

– दिनेश मालवीय 'अश्क'

मगध के इतिहास में दर्ज होगा सीएम नीतिश कुमार का नाम

सम्राट ने की जमकर तारीफ, कहा-पंडित चाणक्य की तरह बनेंगे इतिहास पुरुष

जहानाबाद (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने समृद्धि यात्रा के तहत जहानाबाद को 252 करोड़ रुपये की योजनाओं का उपहार दिया। उन्होंने 161 विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इस दौरान सीएम ने जीविका दीदियों के कार्यों की सराहना की और पहले की लालू-राबड़ी सरकार के शासनकाल पर जमकर निशाना साधा। इस दौरान डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी बिहार की गौरवशाली इतिहास में नीतिश कुमार के नाम शुमार होने की बात कही।

प्रयागराज में कोल्ड स्टोरेज ढहा चार की मौत

- 20 लोगों के दबने की आशंका, रेस्क्यू ऑपरेशन जारी

एक किमी तक फैली गैस, मैनेजर को हिरासत में लिया गया

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में सोमवार को कोल्ड स्टोरेज की बिल्डिंग ढह गई है। इस घटना में 4 लोगों की मौत हो गई है। मलबे में 20 लोगों के दबे होने की आशंका है। 5 जेसीबी से रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया जा रहा है। करीब 1 किलोमीटर तक अमोनिया गैस का रिसाव हुआ है। एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीम को भी बुलाया गया है। गैस की बदबू के चलते ज्यादातर लोग मुंह पर कपड़ा (रुमाल, गमछा) बांधे हुए हैं। हादसा सोमवार दोपहर ढाई बजे फाफामऊ इलाके में हुआ। पुलिस ने कोल्ड स्टोरेज के मैनेजर को हिरासत में ले लिया है। उसे थाने लेकर गई है। घटना से जुड़ा वीडियो सामने आया है। इसमें दिख रहा है कि मौके पर अफरा-तफरी का माहौल है। लोग घायलों को उठाकर ले जा रहे हैं। कोल्ड समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक स्टोरेज अंसार अहमद का बताया जा रहा है। यह करीब 60 एकड़ जमीन में फैला है। यहां 100 से ज्यादा लोग काम करते हैं। पूर्व मंत्री अंसार अहमद का लखनऊ रोड पर चांदपुर गांव के सामने आदर्श कोल्ड स्टोर है। सोमवार दोपहर कोल्ड स्टोर में आलू रखी जा रही थी। इसी बीच अचानक अमोनिया गैस से भरे टैंक में तेज विस्फोट हुआ। धमाका इतना तेज था कि छत गिर गई।

भयंकर युद्ध के बीच

होर्मुज में आगे बढ़े दो भारतीय टैंकर

'जग वसंत और पाइन गैस' को भी ईरान सरकार की हरी झंडी!

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में ईरान और इजरायल-अमेरिका के बीच जारी भयंकर युद्ध के बीच भारत को एक और बहुत बड़ी कूटनीतिक सफलता मिलती नजर आ रही है। जानकारी के अनुसार दो और भारतीय एलपीजी टैंकरों को होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने की ईरान ने मंजूरी दे दी है। भारतीय एलपीजी टैंकर 'जग वसंत और पाइन गैस' को भी ईरान के इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड कोर से होर्मुज स्ट्रेट पार करने की मंजूरी मिलने की सूचना आ रही है। इंडियन नेवी के सूत्रों ने बताया है कि ईरान के साथ बैकचैनल कोशिशों की वजह से यह संभव हुआ है। 'जग वसंत और पाइन गैस' से पहले दो भारतीय एलपीजी टैंकरों शिवालिक, नंदा देवी और एक कच्चा तेल टैंकर जग

लाडकी फारस की खाड़ी पार कर स्वदेश आ चुके हैं। बता दें कि आईआरजीसी ने कुछ खास देशों को इजाजात दी है।

- **भारत की कूटनीति को एक और सफलता**– रिपोर्ट में भारतीय नौ सेना के अंदरूनी सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि भले ही पश्चिम एशिया में तनाव चरम पर है, लेकिन बैकचैनल (भारतीय कूटनीति) बातचीत की वजह से ईरान की ओर से भारत को यह ग्रीन सिग्नल मिला है। वैसे नौ सेना अधिकारियों के मुताबिक इस्लामिक रिवॉल्यूशनरी गार्ड कोर इस समय संकटों से जूझ रहा है।

छठवां स्वरूप कात्यायनी

सूक्ष्म जगत जो अदृश्य, अव्यक्त है, उसकी सत्ता मां कात्यायनी चलाती हैं। वह अपने इस रूप में उन सब की सूचक हैं, जो अदृश्य या समझ के परे है। मां कात्यायनी दिव्यता के अति गुप्त रहस्यों की प्रतीक हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 24 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

भोपाल में युवक पर जानलेवा हमले का आरोपी गिरफ्तार

गालियां देने पर एक युवक के पेट में चाकू घोंपा था, दूसरे की उंगलिया काट दी थीं

भोपाल। भोपाल की हबीबगंज मल्टी में शनिवार की रात को बहन के घर के बाहर खड़े युवक के पेट और उसके दोस्त के हाथ की उंगलियां काटने वाले आरोपी अमित उर्फ मास पुलिस के हात्थे चढ़ गया है। उसने दोनों युवकों को नशे में धुत होकर गालिंया दी थीं। फलतू खड़े होने की वजह पूछी और युवकों ने विरोध किया तो छुरी से जानलेवा हमला कर दिया था। सोमवार की सुबह आरोपी को मल्टी पीसी नगर से गिरफ्तार किया गया। उसके पास से वारदात में इस्तेमाल छुरी को जब्त कर लिया गया है। पुलिस के मुताबिक शनिवार की रात को फरियादी गणेश कपिल पीसी नगर मल्टी स्थित अपनी बहन ज्योति के फ्लैट के नीचे दोस्त शुभम के साथ खड़ा था। तभी इलाके का बदमाश अमित भालेराव उर्फ मास उनके पास आया। उसने वहां खड़े होने की वजह पूछी और गालियां देना शुरू कर दिया। दोनों ने युवकों ने गाली देने का विरोध किया तो आरोपी ने अपनी कमर में फंसी छुरी को निकाल लिया। उसने शुभम के पेट में छुरी घोंप दी। बचाव करने आए गणेश के आरोपी ने हाथ पर वार किया। वार रोकने के प्रयास में उसके एक हाथ की उंगलियां और हथैली बुरी तरह से कट गई। दोनों का इलाज हमीदिया अस्पताल में चल रहा है। वारदात के बाद पुलिस ने आरोपी अमित को पीसी नगर स्थित उसके घर गिरफ्तार कर लिया। आरोपी ने शराब के नशे में वारदात को अंजाम दिया और घर जाकर सो गया था। अगले दिन गिरफ्तारी के डर से घर में ही छिपा रहा। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी अमित के खिलाफ पूर्व में भी एक दर्जन से अधिक आपराधिक केस दर्ज हैं।

2.18 लाख सैनिकों की चतुरंगिणी सेना बनाएंगे अविमुक्तेश्वरानंद

काशी में कहा- गाय, शास्त्र और मंदिर की रक्षा करेंगे

वाराणसी (एजेंसी)। वाराणसी में शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने सोमवार को चतुरंगिणी सेना बनाने का ऐलान किया। उन्होंने कहा- चतुरंगिणी सेना में 2 लाख 18 हजार 700 सैनिक होंगे। इसमें देशभर से लोग भर्ती होंगे। उन्होंने बताया- यह सेना गोरक्षा, धर्म रक्षा, शास्त्र रक्षा और मंदिर रक्षा का कार्य करेगी। उनकी ड्रेस पीली होगी। हाथ में परशु (फरसा) होगा। अविमुक्तेश्वरानंद ने चतुरंगिणी सेना बनाने के लिए

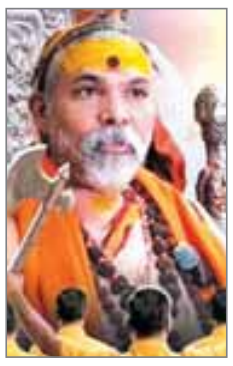

श्रीशंकराचार्य चतुरंगिणी सभा का गठन किया है। इसमें 27 सदस्य होंगे। इसका अध्यक्ष वे खुद होंगे। शंकराचार्य ने अपनी सेना के काम करने के तरीके बताए। उन्होंने कहा- पहले टोको, यानी टोकेंगे। कहो कि यह गलत हो रहा है। नहीं माने तो रोको। भाई, आपको रुकना पड़ेगा। नहीं तो फिर ठोको। ठोको का मतलब सीधे प्रहार करना नहीं है। मुकदमा करना, शिकायत करना और पंचायत करना भी ठोको में आएगा। ये सभी संवैधानिक तरीके अपनाते हुए काम करेंगी। शंकराचार्य बोले- एक टीम में 10 लोग होंगे शंकराचार्य ने कहा- 1 पत्ती (टीम) में 10 लोग होंगे। 21 हजार 870 टीमें बनेंगी तो सेना तैयार हो जाएगी। भारत में अभी करीब 800 जिले हैं। अगर हर जिले में 27 टीमें, यानी 270 लोग तैयार हो गए, तो 2 लाख 16 हजार लोग तैयार हो जाएंगे।

मध्यप्रदेश में पहली बार आंगनवाड़ी बच्चों का 'विद्यारंभ समारोह'

भोपाल। मध्यप्रदेश में प्रारंभिक शिक्षा को नई पहचान देने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल की जा रही है। राज्य में पहली बार आंगनवाड़ी केंद्रों में शाला पूर्व शिक्षा प्राप्त कर रहे 5 से 6 आयु वर्ष के बच्चों को 'विद्यारंभ प्रमाण-पत्र' प्रदान कर उन्हें औपचारिक स्कूली शिक्षा की ओर अग्रसर किया जाएगा। प्रदेश में 24 मार्च को आयोजित होने वाले बाल चौपाल (ECCE Day) के अवसर पर प्रदेश के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों में एक साथ समारोहपूर्वक प्रमाण-पत्र वितरण किया जाएगा, जिससे शाला पूर्व शिक्षा को सामाजिक और संस्थागत मान्यता मिल सके। इस पहल को राज्य स्तर पर प्रदर्शित करने के लिए भोपाल में विशेष राज्य स्तरीय 'ग्रेजुएशन सेरेमनी' का आयोजन किया जा रहा है। महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया बच्चों को प्रमाण-पत्र वितरित कर उनके उज्ज्वल शैक्षणिक भविष्य की शुभकामनाएँ देंगी। यह कार्यक्रम भोपाल जिले की बाणगंगा परियोजना के अंतर्गत आंगनवाड़ी केंद्र क्रमांक 1061 और 859 में आयोजित होगा, जहां 35 बच्चों को विद्यारंभ प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे। यह पहल केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के निर्देशों के अनुरूप की जा रही है, जिसके अंतर्गत आंगनवाड़ी केंद्रों में पंजीकृत 5-6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को विद्यारंभ प्रमाण पत्र देकर उनके शैक्षणिक जीवन की औपचारिक शुरुआत को मान्यता दी जाएगी।

देश की ज्यूडिशियरी हद से ज्यादा सख्त हो रही है

● सुप्रीम कोर्ट जज बोले-इसलिए लोग जेलों में सड़ रहे ● कहा- यह विकसित भारत का आदर्श नहीं हो सकता है

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस उज्ज्वल भुइयां ने कहा कि ज्यूडिशियरी के कुछ हिस्से 'मोर लॉयल देन द किंग सिंड्रोम' से ग्रस्त हैं। यानी ये हिस्से राजा से भी ज्यादा वफादार होने की प्रवृत्ति अपना चुके हैं। इसके कारण ही लोग महीनों तक जेलों में सड़ते रहते हैं। जस्टिस भुइयां ने यह बात रविवार को बेंगलुरु में हुए सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन की पहली नेशनल समिट के दौरान कही। 'विकसित भारत में न्यायपालिका की भूमिका' विषय पर पैनल डिस्कशन के दौरान जस्टिस भुइयां ने कहा- कुछ मामलों में सिस्टम इतना ज्यादा सख्त हो रहा है कि जरूरत से ज्यादा केस दर्ज हो रहे हैं।

बार एंड बेंच की एक खबर के मुताबिक जस्टिस भुइयां ने सरकार और न्यायपालिका के संबंधों, कुछ कानूनों के जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने विरोध प्रदर्शन और सोशल मीडिया एक्टिविटी जैसे छोटे मुद्दों पर मनमाने ढंग से क्रिमिनल केस दर्ज किए जाने की निंदा की। अपनी स्पीच के दौरान जस्टिस भुइयां ने धन शोधन निवारण अधिनियम और गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम जैसे कानूनों के तहत आरोपियों को लंबे समय तक हिरासत में रखे जाने पर चिंता जताई। उन्होंने कहा-प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट, ऐसे मामलों से निपटने का एक बड़ा साधन है, लेकिन कानून ज्यादा सख्त है।

विकसित भारत राजनीतिक नारा, अदालतें इससे अलग रहें

जस्टिस भुइयां ने न्यायपालिका को विकसित भारत जैसे राजनीतिक नारों से बहुत ज्यादा जोड़ने के खिलाफ भी चेतावनी दी। उन्होंने कहा- विकसित भारत का विचार एक राजनीतिक लक्ष्य है और अदालतों को अपने कामकाज में स्वतंत्र रहना चाहिए। जब हम विकसित भारत की बात करते हैं, तो बहस और असहमति के लिए गुंजाइश होनी चाहिए। असहमति को अपराध नहीं माना जाना चाहिए। पैनल डिस्कशन के दौरान जस्टिस भुइयां बोले- भारत में दलितों से भेदभाव जैसी सामाजिक दरारें बर्दाश्त नहीं की जा सकतीं। माता-पिता यह जिद नहीं कर सकते कि बच्चे दलित महिला के हाथ का बना खाना नहीं खाएंगे। हम ऐसी स्थिति बर्दाश्त नहीं कर सकते जहां दलित पुरुषों, अनुसूचित जाति के पुरुषों को गलियारों में खड़ा किया जाए और लोग उन पर पेशाब करें। यह विकास का मॉडल नहीं हो सकता। व्यक्ति के सम्मान की रक्षा की जानी चाहिए।

फेक निकली संभागायुक्त कार्यालय को बम से उड़ाने की धमकी

भोपाल। भोपाल में संभागीय कमिश्नर कार्यालय को बम से उड़ने की धमकी फेक निकली। हर बार की तरह यह धमकी भी ईमेल के माध्यम से दी गई थी। मेल में लिखा गया है कि डिविजनल कार्यालय में 15 छोटे-छोटे आरडीएक्स बम धमाकों के लिए तैयार हैं। दोपहर 1:15 बजे से पहले सभी को कार्यालय से बाहर कर दें। जानकारी के मुताबिक ईमेल में तमिल सरकार में मंत्री सेंथिल बालाजी पर से सीबीआई केस हटाए जाने की बात भी लिखी है। इस धमकी भरे ईमेल में तेलुगु फिल्म राजू वेड्स राम बाई की जमकर तारीफ भी की गई है। धमकी भरे मेल की सूचना मिलने के बाद कोहेफिजा पुलिस सहित बम डिस्पोजल और डॉग स्क्वायड की टीम सर्चिंग में जुट गई है। हालांकि सर्चिंग में किसी प्रकार की संदिग्ध वस्तु पुलिस के हाथ नहीं लगी है। पुलिस आईपी एड्रेस के आधार पर मेल भेजने वाली की तलाश कर रही है।

एसएटीआई कॉलेज में 39 करोड़ के ग्रांट रोकने की मांग

भोपाल में आरटीआई एक्टिविस्ट ने सूचियों में गड़बड़ी के लगाए आरोप, पदों को लेकर भी उठे सवाल

भोपाल। विदिशा के एसएटीआई इंजीनियरिंग कॉलेज में ग्रांट और एरियर्स भुगतान को लेकर विवाद सामने आया है। आरटीआई एक्टिविस्ट और सामाजिक कार्यकर्ता चेतन सिंह राजपूत ने वित्त विभाग को शिकायत भेजकर आरोप लगाया है कि करीब 39 करोड़ रुपए के इस मामले में नियमों की अनदेखी की गई। अपात्र लोगों को लाभ देने और पात्र कर्मचारियों को बाहर रखने की कोशिश की गई है। शिकायत में गंभीर वित्तीय अनियमितताओं और लोकधन के दुरुपयोग की आशंका जताई गई है। साथ ही जांच पूरी होने तक भुगतान रोकने और जिम्मेदारों पर कार्रवाई की मांग की गई है, जिससे पूरे मामले में पारदर्शिता सुनिश्चित हो सके।

सूची में पात्रता की प्रक्रिया पारदर्शी नहीं- सोमवार को राजधानी के एमपी नगर के पास मौजूद एक रेस्टोरेंट में प्रेसवार्ता के दौरान चेतन सिंह ने कहा कि कॉलेज द्वारा तैयार की गई ग्रांट और एरियर्स की सूची में पात्रता तय करने की

प्रक्रिया पारदर्शी नहीं है। आरोप है कि कई ऐसे लोगों के नाम शामिल कर दिए गए, जो नियमों के अनुसार पात्र नहीं थे। वहीं, कई पात्र कर्मचारियों को सूची से बाहर रखा गया। इससे चयन प्रक्रिया पर पक्षपात और मनमानी के आरोप लगे हैं। इस मामले में डॉ. वाईके जैन से संपर्क करने की कोशिश की गई, लेकिन उनका पक्ष सामने नहीं आ सका। ऐसे में अब सभी की नजर प्रशासनिक जांच और आगे की कार्रवाई पर टिकी है। आरटीआई से मिली जानकारी के आधार पर दावा किया है कि कुछ कर्मचारियों को नियमों के विरुद्ध एरियर्स का लाभ दिया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, जिनकी सेवा अवधि कम थी या जो तय तारीख के बाद नियुक्त हुए, उन्हें भी लाभ देने की बात सामने आई है। वहीं कई पात्र कर्मचारियों के एरियर्स तैयार ही नहीं किए गए, जिससे उनके अधिकार प्रभावित हुए हैं। शिकायत में यह भी आरोप लगाया है कि प्रबंधन समिति द्वारा स्वीकृत पदों पर कार्यरत कर्मचारियों को शासन द्वारा स्वीकृत पदों पर कार्यरत दिखाकर अनुदान लेने का प्रयास किया गया। इसे भ्रामक जानकारी देकर आर्थिक लाभ लेने की कोशिश बताया गया है। मामले में कॉलेज के संचालक डॉ. वाईके जैन और उनके सहयोगियों की भूमिका पर भी सवाल उठाए गए हैं। शिकायत में कहा है कि उन्हें पहले सेवा से अलग किया गया था, लेकिन बाद में दोबारा नियुक्त कर दिया गया। आरोप है कि एरियर्स की गणना में उस अवधि का वेतन भी जोड़ दिया गया, जब वे सेवा में नहीं थे।

हरियाणा में बेकाबू कैंटर ने 7 को रौंदा, 3 की मौत

● सड़क पर बिखरीं लाशें, फ्लाईओवर के 2 पिलर के बीच फंसकर रुका

झज्जर (एजेंसी)। हरियाणा के झज्जर में सोमवार की दोपहर एक कैंटर ने सात लोगों को कुचल दिया। इस हादसे में 3 लोगों की मौत हो गई, जबकि एक महिला सहित चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा तेज रफ्तार की वजह से हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, पहले टैंकर ड्राइवर ने सड़क पार कर रहे दो युवकों को कुचला। इसके बाद भी ड्राइवर नहीं रुका और तेज गति से कैंटर दौड़ा दिया। इसी भागमभागम में कई और लोगों को भी चपेट में ले लिया। इनमें एक और बाइक सवार युवक की मौत हो गई, जबकि चपेट में

आकर ऑटो सवार महिला समेत चार घायल हो गए।

इसके बाद बेकाबू कैंटर फ्लाईओवर के दो पिलर के बीच फंस कर रुक गया तो ड्राइवर कूदकर कर फरार हो गया। हादसे के बाद सड़क पर अफरातफरी मच गई।

मामा चौक पर हादसा, पहले 2 युवकों को मारी टक्कर

जानकारी अनुसार, हादसा बहादुरगढ़ में दिल्ली-रोहतक रोड पर स्थित आधुनिक औद्योगिक क्षेत्र के मामा चौक पर सोमवार की दोपहर हुआ। चौक की तरफ से आ रहे तेज रफ्तार कैंटर ने सड़क पार कर रहे दो युवकों को सीधी टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि दोनों युवकों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। पहले हादसे के बाद ड्राइवर रुका नहीं, बल्कि पकड़े जाने के डर से कैंटर को और तेज भगाते हुए बाईपास की ओर ले गया। बाईपास पर कैंटर ने एक मोटरसाइकिल को रौंद दिया। इस हादसे में कानोंदा निवासी योगेंद्र (30) की मौत हो गई, जबकि उसका साथी प्रवीण गंभीर रूप से घायल हो गया। इसके बाद बेकाबू कैंटर ने एक ऑटो को जोरदार टक्कर मारी।

अमेरिका को सबक सिखाने की तैयारी में ईरान

तेहरान (एजेंसी)। अमेरिका को सबक सिखाने के लिए ईरान एक घातक कदम उठाने की तैयारी में है। ईरान ने चेतावनी दी है कि यदि उसके तटीय क्षेत्रों या द्वीपों पर हमला किया गया तो वह पूरी फारस की खाड़ी में बारूदी सुरंगें बिछाकर सभी समुद्री मार्गों को बंद कर देगा। रिपोर्ट के मुताबिक ईरान की रक्षा परिषद ने कहाकि गैर-युद्धरत देशों के लिए होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने का एकमात्र तरीका ईरान के साथ समन्वय करना होगा। परिषद ने कहाकि ईरान के तटों या द्वीपों पर अगर किसी भी दुश्मन देश ने हमला किया तो फारस की खाड़ी और तटीय क्षेत्रों के सभी रास्तों और संचार लाइनों को विभिन्न प्रकार की नौसैनिक बारूदी सुरंगों से भर दिया जाएगा। बयान में

● अब समुद्र के नीचे तबाही मचाने की दे दी वॉर्निंग

कहा गया कि ऐसी स्थिति में पूरी फारस की खाड़ी प्रभावी रूप से बंद हो जाएगी। इसकी जिम्मेदारी उस पक्ष पर होगी जो हमला करेगा। यह चेतावनी ऐसे समय में आई है जब ईरान की सेना पहले ही होर्मुज जलडमरूमध्य को बंद करने और क्षेत्रीय ढांचे को निशाना बनाने की बात कह चुकी है। गौरतलब है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप चेतावनी दे चुके

हैं कि अगर होर्मुज को नहीं खोला गया तो वह ईरान के बिजली संयंत्रों पर हमला कर देंगे। इससे पहले ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार देर रात फोन पर हुई बातचीत के दौरान होर्मुज जलडमरूमध्य संकट पर चर्चा की। ब्रिटिश प्रधानमंत्री के कार्यालय डाउनिंग स्ट्रीट की ओर से जारी एक बयान में कहा गया कि वे इस बात पर सहमत हुए कि वैश्विक ऊर्जा बाजार में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए होर्मुज जलडमरूमध्य को फिर से खोलना जरूरी है। बयान में यह भी कहा गया कि वे जल्द ही फिर से बात करेंगे। यह बातचीत स्टार्मर द्वार ईरान के साथ चल रहे युद्ध में ब्रिटेन के शामिल होने से इनकार के बाद ट्रंप और अन्य यूरोपीय सहयोगियों की तीखी आलोचना के बाद हुई है। ब्रिटेन उन 22 देशों में शामिल है, जिन्होंने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण होर्मुज जलडमरूमध्य के माध्यम से सुरक्षित नौवहन सुनिश्चित करने के प्रयासों में योगदान देने की इच्छा व्यक्त की है। दुनिया के सबसे व्यस्त नौवहन मार्गों में से एक इस जलमार्ग से यातायात 28 फरवरी से 95 प्रतिशत तक गिर गया है।

14 केजी के सिलेंडर में 10 केजी घरेलू गैस देने की तैयारी

● दाम भी घटेंगे, ईरान युद्ध के चलते तेल कंपनियों का स्टॉक बचाने का प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकारी तेल कंपनियां अब घरों में इस्तेमाल होने वाले 14.2 किलो के एलपीजी गैस सिलेंडर में 10 किलो गैस भरकर देने की तैयारी कर रही है। इसका मकसद लिमिटेड स्टॉक को ज्यादा से ज्यादा परिवारों तक पहुंचाना है। इसके साथ ही सिलेंडर के दाम भी कम किए जा सकते हैं। अमेरिका-इजराइल की ईरान से चल रही जंग के बीच हाल ही में ईरान ने मिडिल-ईस्ट में ऊर्जा ठिकानों पर मिसाइल हमले किए। इससे प्लांट को हुए नुकसान और होर्मुज रूट बंद होने से भारत में एलपीजी गैस की किल्लत आगे और भी बढ़ सकती है। इस कारण तेल कंपनियों ने ये फैसला लिया है।

सिलेंडर के दाम भी घटेंगे, पहचान के लिए स्टिकर लगेगा

अगर यह योजना लागू होती है, तो सिलेंडर की कीमतें भी उसी अनुपात में कम की जाएंगी। अभी दिल्ली में 14.2 किलो के सिलेंडर की कीमत 913 और मुंबई में 912.50 है। 10 किलो गैस मिलने पर ग्राहकों को कम पैसे चुकाने होंगे। पहचान के लिए इन सिलेंडरों पर एक नया स्टिकर लगाया जाएगा, जिस पर गैस की सही मात्रा लिखी होगी।

रंधावा सुसाइड केस में पूर्व एएपी मंत्री गिरफ्तार

● शाह के सीबीआई जांच के भरोसे के बाद ऐक्शन

पूर्व मंत्री की पत्नी ने पुलिस अफसर बैरंग लौटाए थे

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब में वेयरहाउस के डिस्ट्रिक्ट मैनेजर गगनदीप सिंह रंधावा के सुसाइड केस में आम आदमी पार्टी (एएपी) सरकार के पूर्व मंत्री लालजीत भुल्लर को गिरफ्तार कर लिया गया है। बताया जा रहा है कि भुल्लर को फतेहगढ़ साहिब के मंडी गोबिंदगढ़ से गिरफ्तार किया गया है। वहीं, रंधावा का अभी तक पोस्टमॉर्टम नहीं हुआ। उनकी लाश अमृतसर के अस्पताल में रखी गई है। आज एसीपी रविंदर पाल सिंह टीम के साथ परिजनों से

डीएम का मोबाइल फोन लेने गए। उन्होंने कहा कि उसमें कुछ सबूत हो सकते हैं। हालांकि, परिजनों ने अधिकारी को बिना मोबाइल दिए लौटा दिया और कहा कि पहले आरोपी को पकड़ो। अब इस मामले की जांच सीबीआई को सौंपी जा सकती है। कांग्रेस सांसद गुरजीत औजला ने लोकसभा में यह मुद्दा उठाया। जिसके बाद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि वह सीबीआई को जांच दे देंगे। शाह ने लोकसभा में कहा-यह पंजाब का मामला है।

नगर निगम का बजट पेश...पुराने वादे अभी भी अधूरे

राजधानी में हर वार्ड को मिलेंगे 50 लाख रुपए

सड़कों पर खर्च होंगे 30 करोड़

भोपाल। भोपाल नगर निगम के सदन में महापौर मालती राय बजट पेश कर रही है। शहर में विकास के लिए हर वार्ड को 50 लाख रुपए वार्ड नियोजन निधि के तहत दिए जाएंगे। अब पुराने अधूरे वादों के बीच भोपाल 'शहर सरकार' फिर नए वादे कर रही है। इस बार शहर का बजट करीब 3500 करोड़ रुपए का रखा गया है। इसमें शहर के विकास से जुड़े कई मुद्दे रखे जा रहे, हालांकि, पिछले 2 साल से किए जा रहे 7 हेरिटेज गेट, गीता भवन बनाने जैसे वादे अब भी अधूरे हैं। 1 साल में सिर्फ दो हेरिटेज गेट के लिए भोपाल-इंदौर स्टेट हाईवे और होशंगाबाद रोड पर भूमिपूजन हुआ है। मंत्री-विधायकों की आपत्ति के बाद प्रॉपर्टी या जल कर बढ़ाने की संभावना कम ही है। पिछली बार कुल 3611 करोड़ रुपए का बजट पेश किया गया था।

सदन में गोमांस को लेकर हुआ हंगामा- इससे पहले, बैठक में गोमांस को लेकर हंगामा चला। प्रश्नकाल में नेता प्रतिपक्ष शाबिस्ता जकी ने गोमांस और स्लॉटर हाउस पर पहला प्रश्न किया। इस पर एमआईसी मेंबर आरके सिंह बघेल ने जवाब दिया। इस दौरान महापौर और नेता प्रतिपक्ष के बीच नोंक-झोंक हुई। बीजेपी के सीनियर पार्षद सुरेंद्र बाडिका और विलास राव घड़गे ने भी गोमांस के मुद्दे पर विरोध जताया। सभी ने जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग की। इस बीच, नई पार्किंग व्यवस्था बनाने का प्रस्ताव, कंडम (बेकार) वाहनों को हटाने का प्रस्ताव पास किया गया। वहीं, लिगेसी वेस्ट (पुराना कचरा) हटाने का प्रस्ताव पास नहीं हो पाया। भोपाल में प्रॉपर्टी टैक्स में 10 फीसदी का इजाफा, जलकर में 15 फीसदी की बढ़ोतरी पिछले बजट में परिषद ने जल, प्रॉपर्टी और ठोस एवं अपशिष्ट पर टैक्स बढ़ाने के साथ कुछ ऐसे फैसले भी लिए थे, जिन्होंने सबको चौंका दिया था। शहर सरकार ने जनता पर टैक्स का बोझ डाला था तो दूसरी तरफ जनप्रतिनिधि यानी, पार्षद, एमआईसी मेंबर, अध्यक्ष और महापौर की सालाना निधि दोगुनी कर दी गई थी। महापौर मालती राय ने सिटी बसों के लिए महापौर स्मार्ट पास शुरू करने की घोषणा की थी, जो एक साल में भी शुरू नहीं हो पाई। भोपाल में प्रॉपर्टी टैक्स में 10 प्रतिशत, पानी और ठोस-अपशिष्ट पर 15 प्रतिशत टैक्स की बढ़ोतरी की गई। इससे भोपाल के पौने 3 लाख नल कनेक्शन और 5.62 लाख प्रॉपर्टी टैक्स उपभोक्ता प्रभावित हो रहे हैं।

भोपाल नगर निगम का 2026-27 बजट, घाटे का अनुमान

भोपाल नगर निगम का वित्तीय वर्ष 2026-27 का प्रस्तावित बजट 3938 करोड़ 45 लाख 28 हजार रुपए का रखा गया है, जिसमें आय और व्यय दोनों बराबर हैं। हालांकि, राजस्व आय का 5त्न सुरक्षा निधि के रूप में 138 करोड़ 89 लाख 29 हजार रुपए अलग रखने के कारण बजट में उतने ही राशि का संभावित घाटा सामने आ रहा है। महापौर मालती राय ने कहा कि समूह के संस्थापक रमेशचंद्र जी अग्रवाल की स्मृति में हर साल नगर निगम पुरुस्कार देगा। हर साल उनके पत्रकारिता और मूल्यों को जीने वाले 6 पत्रकार साथियों का हर साल सम्मान करेगी। हर साल तीन इलेक्ट्रॉनिक और तीन प्रिंट मीडिया के पत्रकार होंगे।

निगमकर्मियों के बच्चों को अब मिलेंगे 15 हजार रुपए

नगर निगम के अधिकारी-कर्मचारियों के मेद्यावी बच्चों को प्रोत्साहन राशि भी दी जाएगी। कक्षा 10वीं और 12वीं में मेरिट प्राप्त बच्चों को इस बजट में राशि बढ़ाकर 15 हजार रुपए प्रति छात्र-छात्रा किया गया है। हादसे में यदि कोई कर्मचारी आकस्मिक दुर्घटना का शिकार होता है तो उसे सहायता प्रदान की जाएगी। अधिकारी-कर्मचारियों को समय-समय पर महंगाई भत्ते और अन्य सुविधाओं का लाभ दिया जाएगा। सफाई मित्रों को वर्दी और रैन कोट दिए जाएंगे। इसके लिए 2.70 करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान किया गया है। बजट पेश करते हुए महापौर मालती राय ने कहा कि जलप्रदाय फिल्टर प्लांट पर सौर ऊर्जा प्लांट की स्थापना का काम भी पिछले बजट में किया था। श्यामला हिल्स, ईदगाह हिल्स, पुल बोगदा आदि प्लांट पर सौर ऊर्जा प्लांट लगाने से हर महीने बिजली बिल में 6 लाख रुपए तक की कमी आई है। चांदबड़ जोन कार्यालय पर भी सौ ऊर्जा प्लांट लगाया गया है। निगम के नए मुख्यालय भवन पर भी सिस्टम लगाया जा रहा है। भोपाल निगम की जरूरत को देखते हुए नीमच जिले में स्थापित 10 मेगावॉट क्षमता के सौर प्लांट का सफल संचालन किया जा रहा है। वहीं, अन्य 10 मेगावॉट सौर ऊर्जा संयंत्र को भी अगले 3 महीने में शुरू करने का टॉरगेट रखा गया है।

मुख्य सड़कों पर स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था के लिए 3 करोड़ रुपए खर्च होंगे

भोपाल नगर निगम सीमा के अंतर्गत म्यूजियम, सामुदायिक भवन, सम्मेलन केंद्र, ऑडिटोरियम निर्माण के लिए इस बजट में 6 करोड़ 50 लाख रुपए का प्रावधान है। वहीं, सामुदायिक भवनों के संधारण और मरम्मत में 4 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। शहर की मुख्य सड़कों पर स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था के लिए 3 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, पत्रकारिता, महापुरुषों एवं खेलकूद से संबंधित पुरुस्कार भी दिए जाएंगे। बजट में 3 करोड़ रुपए की राशि का प्रावधान रखा है। वार्ड नंबर-84 के हनुमंत नरेला क्षेत्र के विकास के लिए प्रस्ताव तैयार कर कार्य तैयार कराएंगे। शहर में सांस्कृतिक एवं अन्य विभिन्न आयोजनों को बढ़ावा देने के लिए मानस भवन का निर्माण मुख्यमंत्री अधोसंचरना के तहत प्रगतिरत है। इसके लिए बजट रखा गया है। पुराने भोपाल में स्थानीय जरूरतों के अनुसार, सत्संग हॉल भवन का निर्माण किया जाएगा। बजट भाषण में महापौर ने कहा कि राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर भोपाल की पहचान को और अधिक बढ़ाने के लिए इस साल रानी कमलापति की स्मृति में सांस्कृतिक झील महोत्सव का आयोजन करेंगे। इसके लिए बजट में 3 करोड़ रुपए का प्रावधान रखा गया है। 2026-27 के बजट में शिक्षा उप कर से शालाओं के अधोसंचरना निर्माण, विकास, पेयजल, शौचालय और अन्य कार्यों के लिए 34 करोड़ 35 लाख रुपए का प्रावधान है।

सियासी दलों की चुनाव जीतने की शॉर्ट टर्म नीति चिंतनीय : ओ.पी. रावत

भोपाल। राजनैतिक दलों और नेताओं की चुनाव जीतने की शॉर्ट टर्म नीति चिंतनीय और विचारणीय विषय है। यह बात भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ओ.पी. रावत ने कही। भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ने भारतीय लोक प्रशासन संस्थान की मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ क्षेत्रीय शाखा द्वारा मध्यप्रदेश प्रशासन अकादमी भोपाल में सामयिक मुद्दा केंद्रीय एवं राज्य बजट 2026 - 2027 विषय पर आयोजित विमर्श के दौरान कहा कि भारत में यह देखने में आ रहा है कि राजनीतिक दल और राजनेता शॉर्ट टर्न नीति अपनाकर चुनाव जीतने का प्रयास करते हैं जबकि वह बजट में रिफ्लेक्ट नहीं होती है। यह प्रैक्टिस बिल्कुल भी जनहितकारी नहीं है।

राजनीतिक दलों को नेताओं को और समाज के सभी तबकों को इस पर विचार करना चाहिए। रावत ने कहा कि देश में बहुत तेज़ी के साथ जॉब गारंटीड डिग्री दी जा रही हैं, जो कि बिल्कुल भी सही नहीं है इसके कई कारण हैं । इससे जुड़े अंश भी बजट में रिफ्लेक्ट नहीं होते हैं । डिग्री मिलने के बाद लोग नौकरी का क्लेम करने लगते हैं। उन्होंने कहा कि सरकारों और प्राइवेट इंस्टीट्यूशन को इस पर विशेष गौर करने की जरूरत है। यह समाज के समक्ष चिंतनीय और विचारणीय विषय है।

विषय प्रवर्तन आईआईपीए के चेयरमैन और संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे रिटार्ड आईएएस अधिकारी के.के. सेठी ने किया। वरिष्ठ पत्रकार और डिजिटल मीडिया के जानकार सरमन नगेले ने कहा कि केंद्र सरकार ने बजट में आईटी सेवाओं के लिए सेफ हार्बर सुविधा के लिए 300 करोड़ रुपये की सीमा को बढ़ाकर 2000 करोड़ रुपये किया गया। भारत में विदेशी क्लाउड सेवा प्रदाता को 2047 तक टैक्स हॉलीडे दिए जाने का बजट में उल्लेख है। भारत सेमीकंडक्टर मिशन, डेटा सेंटर के निर्माण, एक बहु-भाषी एआई उपकरण के रूप में भारत-विस्तार कृषि पोर्टलों के अलावा अन्य डिजिटल सेक्टर के कार्यों के लिए किये गए बजट प्रावधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

नगेले ने बताया कि हाल ही में 16 से 21 फरवरी 2026 तक, नई दिल्ली में इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 का आयोजन हुआ। एआई समिट ने वैश्विक स्तर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। नगेले ने कहा कि एआई-आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस स्किल्ड हुए बिना भविष्य में सरकारी और निजी क्षेत्र में नौकरी मिलना मुश्किल होगा। जिस तरह बिना टाइपिंग, कंप्यूटर के बेसिक सर्टिफिकेशन कोर्स किये बिना नौकरी नहीं मिलती थी वैसा ही इस एआई के दौर में होगा इसकी पूरी संभावना है। विमर्श के दौरान वक्ताओं ने कहा भारत सरकार को टेक्नोलॉजी इनोवेशन, शिक्षा, स्वास्थ, अकादमिक और रिसर्च के क्षेत्र में में विशेष फोकस करना चाहिए । देश और प्रदेश में निरंतर हो रहे विकास, अधोसंरचना, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, स्टार्टअप, एमएसएमई, आईआईटी, विद्यार्थियों के विश्वविद्यालयीन स्तर की शिक्षा के लिए किये गए बजट प्रावधान और बजट के उपयोग पर चर्चा की गई। साथ फ्री बीज की योजनाओं के कारण राज्यों के विकास पर पढ़ने वाले प्रभाव पर भी संवाद हुआ।

विमर्श में मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव, एससी बेहार , मध्यप्रदेश के पूर्व डीजीपी, एससी त्रिपाठी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मैनेजमेंट (IIFM), भोपाल के पूर्व निदेशक, डॉ. राम प्रसाद, पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, नरेंद्र प्रसाद, डी.पी. तिवारी, के.सी. श्रीवास्तव, अमोद कुमार गुप्ता, एस सी तिवारी, विवेक गुप्ता,एच, एन, मिश्रा, प्रोफ़ेसर धनंजय वर्मा, समेत अनेक पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों ने अपने - अपने विचार साझा किये।

सीएम के नेतृत्व में जल गंगा संवर्धन अभियान का शंखनाद

- **सीएम बोले-जल स्रोतों के पुनर्जीवन से संवरेगा प्रदेश का भविष्य**

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व एवं दूरदर्शी निर्देशों के अनुरूप मध्यप्रदेश में जल संसाधनों के संरक्षण और संवर्धन के लिये 'जल गंगा संवर्धन अभियान' का शुभारंभ 19 मार्च से हो गया है। यह अभियान 139 दिनों तक निरंतर संचालित किया जाएगा, जिसका मुख्य ध्येय प्रदेश की जीवनदायिनी नदियों, ऐतिहासिक घाटों, पुरातन कुओं और पारंपरिक जल स्रोतों को उनके मूल स्वरूप में वापस लाना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की मंशानुसार, प्रदेश के सभी जिलों में प्रशासन और आमजन कंधे से कंधा मिलाकर इस पुनीत कार्य में अपनी सक्रिय सहभागिता दे रहे हैं। अभियान के अंतर्गत समस्त नगरीय निकायों में जल संरक्षण की दिशा में व्यापक स्तर पर कार्य किए जा रहे हैं। भू-जल स्तर को सुदृढ़ करने के लिए 'भू-जल पुनर्भरण' और पर्यावरण संतुलन के लिये 'हरित क्षेत्र विस्तार' को प्राथमिकता दी जा रही है। प्रदेश के जलाशयों और तालाबों की शुचिता बनाए रखने के लिए सफाई के विशेष सत्र आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें स्थानीय विधायकों एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा स्वयं उपस्थित होकर नेतृत्व प्रदान किया जा रहा है। यह सामूहिक प्रयास केवल शासकीय आयोजन न रहकर अब एक जन-आंदोलन का रूप ले चुका है। विभिन्न स्तरों पर आयोजित किए जा रहे इन कार्यक्रमों का केंद्र बिंदु 'श्रमदान' है, जहाँ समाज का हर वर्ग अपनी माटी और पानी के प्रति उत्तरदायित्व निभा रहा है। जल संवर्धन के इस अभियान को जन-जन से जोड़ने के लिए सामूहिक शपथ ग्रहण के कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं। नागरिकों को जल की प्रत्येक बूंद के महत्व के प्रति जागरूक किया जा रहा है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। यह अभियान मध्यप्रदेश को जल-समृद्धि की दिशा में एक नई पहचान दिलाने के लिए संकल्पित है।

भिंड सांसद रॉय ने मप्र सरकार को दिखाया आइना : संगीता शर्मा

लोकसभा में रेत उत्खनन का मामला उठाने के बाद सियासत तेज, कांग्रेस ने मोहन सरकार पर साधा निशाना

भोपाल। मध्यप्रदेश में अवैध रेत उत्खनन पकड़ने गई पुलिस टीम पर हमला और भिंड से सांसद संध्या राय द्वारा लोकसभा में रेत उत्खनन का मामला उठाने से यह सिद्ध हो गया है कि प्रदेश सरकार रेत उत्खनन रोकने में पूरी तरह विफल है। प्रदेश कांग्रेस की प्रवक्ता सुश्री संगीता शर्मा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट करते हुए कहा कि भाजपा की ही सांसद ने मध्यप्रदेश सरकार को आईना दिखा दिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश में रेत माफिया बेलगाम हो चुके हैं और स्थिति इतनी गंभीर है कि सत्तारूढ़ दल के जनप्रतिनिधियों को ही यह मुद्दा संसद में उठाना पड़ रहा है।

संगीता शर्मा ने अपने पोस्ट में सवाल उठाया कि क्या राज्य सरकार रेत माफिया पर नियंत्रण नहीं कर पा रही है या फिर सरकार के संरक्षण में ही अवैध उत्खनन हो रहा है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि रेत कारोबार से होने वाला कमीशन ऊपर तक पहुंच रहा है, जिसकी वजह से माफिया के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई नहीं हो पा रही है।

कांग्रेस प्रवक्ता ने यह भी कहा कि पहले भाजपा के कुछ विधायकों ने भी इस मुद्दे पर सरकार के खिलाफ आवाज उठाई थी और अब भिंड की सांसद द्वारा लोकसभा में मामला उठाना इस बात का संकेत है कि प्रदेश में अवैध रेत उत्खनन गंभीर समस्या बन चुका है। उन्होंने केंद्र सरकार से भी इस मामले में हस्तक्षेप कर कठोर कार्रवाई करने की मांग की है।

'किशोरी से मातृत्व तक' महिलाओं के हर चरण में स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करेगा शक्ति केंद्र : शुक्ल

शक्ति केंद्र महिलाओं के स्वास्थ्य सशक्तिकरण की दिशा में बड़ा कदम, काटजू हॉस्पिटल भोपाल में शक्ति केन्द्र का किया शुभारंभ

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार महिलाओं और बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। उन्होंने कहा कि एक स्वस्थ महिला ही स्वस्थ परिवार और सशक्त समाज की नींव रखती है। सरकार 'किशोरी से मातृत्व तक' महिलाओं के हर चरण में स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष पहल कर रही है। 'शक्ति केन्द्र' इसी सोच का प्रतिफल है, जहां महिलाओं को उनकी सभी स्वास्थ्य आवश्यकताओं के लिए एक ही स्थान पर समग्र, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कैलाश नाथ काटजू सिविल अस्पताल भोपाल में 'शक्ति केन्द्र - वन स्टॉप संपूर्ण महिला स्वास्थ्य केन्द्र' का शुभारंभ किया।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में देश में स्वास्थ्य सेवाओं का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है और स्वास्थ्य अवसंरचना को

मजबूत करने के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आयुष्मान भारत योजना ने गरीब, वंचित और कमजोर वर्गों के लिए तृतीयक स्तर की स्वास्थ्य सेवाओं के द्वार खोल दिए हैं, जिससे अब आर्थिक अभाव उपचार में बाधा नहीं बन रहा है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक विस्तार हुआ है और मेडिकल कॉलेजों एवं सीटों की संख्या में निरंतर वृद्धि की जा रही है, जिससे भविष्य में स्वास्थ्य सेवाएं और अधिक सुदृढ़ होंगी।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने केन्द्र का विस्तृत निरीक्षण किया और वहां उपलब्ध अत्याधुनिक मशीनों एवं सेवाओं का अवलोकन किया। उन्होंने विशेषज्ञ चिकित्सकों से संवाद कर सेवाओं की गुणवत्ता की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि 'शक्ति केन्द्र' महिलाओं को जागरूक, स्वस्थ और सशक्त बनाने की दिशा में एक अभिनव और महत्वपूर्ण पहल है, जो उन्हें एक ही छत के नीचे समग्र, आधुनिक और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर उनके जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में सहायक सिद्ध होगा। उन्होंने केन्द्र प्रभारी एवं आईईसी डायरेक्टर डॉ. रचना दुबे को बधाई देते हुए कहा कि यह केन्द्र महिलाओं में जागरूकता बढ़ाने और समय पर उपचार सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

संचालक आईईसी एवं केंद्र प्रभारी डॉ. रचना दुबे ने केन्द्र की अवधारणा, उद्देश्य और सेवाओं की विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि 'शक्ति केन्द्र' (स्प्रेडिंग हेल्थ अवेयरनेस नॉलेज थ्रू टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन) महिलाओं के लिए एक समग्र स्वास्थ्य समाधान के रूप में विकसित किया गया है, जहां शारीरिक के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य पर भी समान ध्यान दिया जाता है।

साम्राज्यवाद प्रतिरोध हेतु प्रेरक है भगत सिंह का क्रान्तिकारी चिंतन

भोपाल। महान क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु के शहादत दिवस को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने 'साम्राज्यवाद विरोधी दिवस' के रूप में मनाया।

भाकपा के देश व्यापी आव्हान के तहत भोपाल में 23 मार्च को स्थानीय इतवारा क्षेत्र में आयोजित प्रदर्शन में 'भगत सिंह की शहादत को लाल सलाम', 'इन्कलाब ज़िंदाबाद' ,'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद', 'पूंजीवाद मुर्दाबाद' के गगनभेदी नारों के साथ शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मध्य प्रदेश के राज्य सचिव कॉमरेड शैलेन्द्र शैली ने कहा कि ' महान क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह की शहादत का मकसद सिर्फ़ भारत की आज़ादी तक ही सीमित नहीं था ,भगत सिंह भारत की जनता की साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के शोषण- तन्त्र से भी मुक्ति चाहते थे। भगत सिंह के इन्कलाब का अर्थ साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के खिलाफ जनता को एकजुट करना भी था।

एटक मध्य प्रदेश के महासचिव कॉमरेड शिवशंकर मौर्य ने अमेरिकी साम्राज्यवाद का मोहरा बनी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार की फासीवादी प्रवृत्तियों का उल्लेख कर इसका कड़ा प्रतिरोध करने की अपील की। कॉमरेड बालकृष्ण नामदेव ने भगत सिंह के क्रान्तिकारी विचारों की प्रासंगिकता को प्रतिपादित किया।

भाकपा के प्रदर्शन में फिदा हुसैन, लाखन सिंह रघुवंशी,नवाब उद्दीन,महफूज अल्तमश,इब्राहिम, शेर सिंह, जितेन्द्र,जब्बार भाई, सईद खान,जमुना प्रसाद ,शकील, लाल सिंह चड्ढा ,दीपक सहित बड़ी संख्या में स्थानीय लोग शामिल हुए।

भव्य उद्घाटन से शुरू हुई KAI सीनियर नेशनल कराटे चैंपियनशिप-2026

भोपाल। एलएनसीटी यूनिवर्सिटी में आयोजित KAI सीनियर नेशनल कराटे चैंपियनशिप-2026 का सोमवार को भव्य एवं गरिमामय शुभारंभ हुआ। इस आयोजन ने शहर को राष्ट्रीय खेल मानचित्र पर एक नई पहचान दिलाई।

उद्घाटन समारोह में विश्वास सारंग मंत्री सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण , आशीष उषा अग्रवाल (प्रदेश मीडिया प्रभारी, बैकुंठ सिंह अध्यक्ष, KAI, डॉ. पंकज शुक्ला उपाध्यक्ष, KAI एवं योगेश कालरा महासचिव, KAI की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में राज्य अध्यक्ष जयदेव शर्मा, रेफरी आयोग के अध्यक्ष अमित गुप्ता सहित विभिन्न राज्यों से आए पदाधिकारी एवं अधिकारी उपस्थित थेद्य इस अवसर मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि 'कराटे केवल एक खेल नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक सशक्त कला है, जो अनुशासन, आत्मविश्वास और मानसिक दृढ़ता का निर्माण करती है। मैं सभी प्रतिभागियों से आग्रह करता हूँ कि वे खेल भावना के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

करें और देश का नाम रोशन करें।

इस दो दिनी प्रतियोगिता में देश के 19 राज्यों से लगभग 450 खिलाड़ियों ने भाग लिया, जिन्होंने कुमिते और काता की विभिन्न श्रेणियों में अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रतिस्पर्धा की।

इस अवसर पर डॉ. पंकज शुक्ला ने प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए कहा कि' श्रृंगार बने हथियार' जैसी पहल के माध्यम से हम महिलाओं को भी सशक्त बना रहे हैं, ताकि वे आत्मनिर्भर और निडर बन सकें।

आरएनटीयू में गूंजा भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वर

भोपाल। रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल में भारतीय नववर्ष के पावन अवसर पर 'भारतीय नववर्ष एवं भारतीय काल गणना की वैज्ञानिकता' विषय पर एक भव्य एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान का आयोजन कथा सभागार में किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्कृत, प्राच्य भाषा एवं भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र, मानविकी एवं उदार कला संकाय तथा विश्व रंग फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता दीपक शर्मा ने अपने विस्तृत एवं शोधपरक व्याख्यान में भारतीय काल गणना प्रणाली को पावरपॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने जंतर मंतर से प्राप्त खगोलीय उपकरणों एवं संरचनाओं की तस्वीरों के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि प्राचीन भारत में समय-गणना केवल परंपरा नहीं, बल्कि खगोल विज्ञान और गणितीय सटीकता पर आधारित एक विकसित वैज्ञानिक प्रणाली थी।

उन्होंने 'युगाब्द' एवं 'होरा' जैसे सूक्ष्म समय-मानकों की विस्तार से व्याख्या करते हुए बताया कि भारतीय काल गणना पद्धति अत्यंत वैज्ञानिक एवं सुसंगत है। साथ ही उन्होंने उपनिवेशवादी काल में अंग्रेजों की नीतियों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा को कमजोर करने के प्रयास किए गए, किंतु इसकी प्रासंगिकता आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अमिताभ सक्सेना ने की।

कार्यक्रम के शुभारंभ में डॉ. सावित्री सिंह परिहार नेअतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम संचालन डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने तथा आभार प्रदर्शन कुलसचिव डॉ. संगीता जौहरी ने किया गया।

संपादकीय

मोदी का अनोखा रिकॉर्ड

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम अब एक अनोखा रिकॉर्ड दर्ज हो गया है। उन्होंने राज और केन्द्र में सत्ता के शीर्ष पर अधिकतम समय रहने का रिकॉर्ड बनाया है। हालांकि दोनों को अलग-अलग करके देखें तो इस मामले में पहले से स्थापित रिकॉर्ड में वो अभी पीछे हैं। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 मार्च 2026 को भारत में सबसे लंबे समय तक सरकार के प्रमुख (मुख्यमंत्री व प्रधानमंत्री) रहने का ऐतिहासिक रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने 8 हजार 931 दिनों से अधिक समय तक लगातार शासन करके सिक्किम के पूर्व मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग का कुल 8 हजार 930 दिनों का रिकॉर्ड तोड़ा है। यह 7 अक्टूबर 2001 से जारी उनके अटूट सेवा काल को दर्शाता है। मोदी के नाम यह निर्बाध शासनकाल का रिकॉर्ड भी है। पहले वो 2001 से लेकर 2014 तक सीएम और 2014 से अब लगातार प्रधानमंत्री हैं। वो तीसरे प्रधानमंत्री हैं, जो मुख्यमंत्री भी रहे। इसके अलावा 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में पहली बार शपथ लेने के बाद से मोदी ने 3 बार गुजरात के सीएम और लगातार 3 लोकसभा चुनाव जीतने वाले प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया है। खास बात यह भी है कि 24 साल से देश की निरंतर सेवा करते समय मोदीजी ने एक दिन का भी अवकाश नहीं लिया। साथ ही अपनी पार्टी और गठबंधन को लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटाया। मोदी के नाम एक और रिकॉर्ड पिछली बार बना था, जब इंस्टाग्राम पर उनके 100 मिलियन फॉलोअर्स हो गए थे। यह संख्या अमेरिकी राष्ट्रपति के फॉलोअर्स की संख्या से दोगुनी है। इसी तरह यू-ट्यूब पर उनके सबस्क्राइबर्स की संख्या 3 करोड़ से ज्यादा हो चुकी है। अगर मोदी के प्रधानमंत्री के रूप में ही कार्यकाल की बात करें तो अभी पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा श्रीमती इंदिरा गांधी के पीएम के रूप में कार्य दिनों से मोदी पीछे हैं। उदाहरण के लिए नेहरूजी कुल 6129 दिन प्रधानमंत्री रहे। यानी देश की आजादी 15 अगस्त 1947 से लेकर 27 मई 1964 तक। इसी तरह श्रीमती इंदिरा गांधी 14 जनवरी 1966 से लेकर 1977 तक तथा 14 जनवरी 1980 से लेकर 31 अक्टूबर 1984 तक प्रधानमंत्री रहीं। लेकिन पंडित नेहरू तथा श्रीमती गांधी कभी भी मुख्यमंत्री नहीं रहे। प्रधानमंत्री के योगदान की प्रशंसा करते हुए केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि मोदीजी के कार्यकाल ने विकास की पहल, जनकल्याण के उपायों और देश की वैश्विक प्रतिष्ठा को मजबूत करके भारत को एक नया रूप दिया है। सोशल मीडिया पर अपनी पोस्ट में उन्होंने कहा कि मोदीजी की दशकों की सेवा ने अपने आप में एक युग का निर्माण किया है। चाहे वह गरीबों को उनके अधिकार दिलाना हो, या विकास में नए कीर्तिमान स्थापित करना हो, वैश्विक मंचों पर देश का गौरव बढ़ाना हो, मोदी युग ने भारत को पूरी तरह से बदल दिया है। इसीलिए लोगों का उन्हें सच्चा प्यार मिला। और समर्थन हर गुजरते दिन के साथ और भी बढ़ता गया। वह भारत के सच्चे प्रधानसेवक हैं। जहां तक मोदीजी की कार्यशैली की बात है तो उन्होंने इस मामले में अपनी अलग छाप छोड़ी है। अपनी कट्टर हिंदूवादी छवि को सहेजते हुए भी उन्होंने दुनिया के सभी देशों के राजनेताओं को प्रभावित किया है। देश में भी एक विकास पुरूष की छवि निर्मित की है। हालांकि उनकी विदेश नीति को लेकर कई बार सवाल उठते रहे हैं, लेकिन मोदी ने सभी के अच्छे सम्बन्ध की तलवार की धार पर चलने वाली नीति अख्तियार की है। बावजूद इसके विश्व के सभी बड़े राजनेताओं से उनके अच्छे रिश्ते रहे हैं। हालांकि देश को मोदी के अवदान का आकलन तो भावी इतिहास ही करेगा।

संवैधानिक मर्यादा का खुलेआम अतिक्रमण

नजरिया

अवधेश कुमार

लेखक स्तंभकार हैं।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और प्रशासन का अपने राज्य में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के साथ हुआ व्यवहार हर दृष्टि से अस्वीकार्य और डर पैदा करने वाला है। ममता बनर्जी ने कहा कि राष्ट्रपति भाजपा के एजेंडा में फंस गई हैं। भाजपा उनसे अपना एजेंडा पूरा करवा रही है। ममता बनर्जी इसके राज्यपाल से लेकर चुनाव आयोग केंद्रीय एजेंसियां और यहां तक की कई बार न्यायपालिका को भी इसी भाषा में आरोपित कर चुकी हैं। अभी तक राष्ट्रपति का पद उनके अपमान और दुर्व्यवहार से बचा हुआ था। राष्ट्रपति को आरोपित करना वास्तव में राजनीतिक पतन की पराकाष्ठा है। आखिर हमारी राजनीति कहां पहुंच गई है जहां नेता यह भी नहीं समझ रहे कि किसी प्रतिस्पर्धी पार्टी या चुनाव के लिए हम जो कुछ कर रहे हैं इसका कितना भयानक असर हो सकता है। राष्ट्रपति के पद को स्तरहीन दलीय राजनीति से बाहर रखा जाना चाहिए। ममता बनर्जी कह रहीं हैं कि आप 50 बार आयें तो सभी कार्यक्रमों में उपस्थित होना संभव नहीं होगा। भाजपा की चिंता सत्ता होती है और मेरी चिंता मेरे राज्य की जनता होती है। यानी वह कह रहीं हैं कि आप भाजपा का एजेंडा पूरा करने के लिए बार-बार पश्चिम बंगाल आतीं हैं और उम्मीद करती हैं कि मैं आपके स्वागत के लिए रहूं तो ऐसा नहीं हो सकता। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की बंगाल यात्रा के दौरान ममता बनर्जी एसआईआर को लेकर धरने में शामिल थीं। क्या ममता बनर्जी की इस तरह की भाषा और व्यवहार को सामान्य लोकतांत्रिक मर्यादा और संविधान की भावनाओं के अनुरूप भी माना जा सकता है?

राष्ट्रपति मुर्मू पश्चिम बंगाल में एक कार्यक्रम को संबोधित करने गई थीं। 9वां अंतरराष्ट्रीय संथाल फिल्म महोत्सव व कॉन्फ्रेंस बागडोगरा हवाई अड्डा के पास सिलीगुड़ी महकमा परिषद के गोंसाईपुर में आयोजित किया गया। दरअसल, कार्यक्रम विधाननगर में आयोजित होना था लेकिन पश्चिम बंगाल प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था एवं अन्य कारणों का हवाला देते हुए इसे स्थानांतरित कर दिया। कार्यक्रम के लिए प्राप्त स्थान तक पहुंचना कठिन था और इतना छोटा था कि ज्यादा लोग शामिल नहीं हो सकते थे। स्वाभाविक था कि राष्ट्रपति विधान नगर भी गईं, संथाल भाई-बहन वहां भी थे। वहां उन्हें अपना असंतोष प्रकट करने तथा सच्चाई अभिव्यक्त करने को बाध्य होना पड़ा। वस्तुतः बंगाल की धरती पर उतरने के समय से ही सरकार द्वारा राष्ट्रपति की अवहेलना और अपमान की शुरुआत हो गई। हवाई अड्डे पर राष्ट्रपति पद के प्रोटोकॉल के अनुसार कोई उपस्थित नहीं था। सामान्य प्रोटोकॉल और परंपरा के अनुसार राष्ट्रपति का स्वागत करने के लिए राज्यपाल रहते हैं, सामान्य तौर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री या अगर किसी कारणवश वह नहीं आ सकीं तो उनकी जगह कोई मंत्री रहते हैं। इसके साथ प्रदेश के पुलिस महानिदेशक और मुख्य सचिव भी उपस्थित रहते हैं। वहां कोई नहीं था। सिलीगुड़ी के मेयर ने उनका स्वागत किया। केंद्रीय जनजाति मामलों के राज्यमंत्री दुर्गादास उइके इसलिए थे क्योंकि कार्यक्रम जनजाति समुदाय का था। स्वतंत्र भारत के इतिहास में यह ऐसी पहली घटना है। ऐसा कभी नहीं हुआ जब कोई राज्य सरकार राष्ट्रपति के कार्यक्रम के लिए उपयुक्त जगह की अनुमति न दे, उनकी पूरी तरह अवहेलना करें और असंतोष व्यक्त करने पर प्रतिक्रिया ऐसी दे जैसे अपने किसी राजनीतिक प्रतिस्पर्धी से टकरा रही है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू शांत स्वभाव की मानी जाती है और कभी भी अशांत या गुस्सैल प्रतिक्रिया देते देखा नहीं गया। द्रौपदी मुर्मू ने यही कहा कि उन्हें व्यक्तिगत तौर पर कोई समस्या नहीं है कि कोई रिसीव करने आए या ना आए किंतु राष्ट्रपति पद के प्रोटोकॉल का पालन होना चाहिए। राष्ट्रपति देश के संवैधानिक अभिभावक होते हैं। सभी का उस पद की गरिमा और स्थापित परंपरा के अनुरूप सम्मान देना है। दूसरी और राष्ट्रपति का भी दायित्व है कि परंपरा गरिमा और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आगाह करें। उन्हें सार्वजनिक रूप से ऐसा बोलने को विवश होना पड़ा तो निश्चित रूप से स्थिति अस्वीकार्य थी। क्या राष्ट्रपति मौन रहकर इस तरह के व्यवहार को प्रोत्साहित करने की भूमिका निभातीं? आज एक राज्य में ऐसा हुआ कल दूसरे में होगा और जो एक राष्ट्रपति के साथ हो रहा है वह दूसरे के साथ भी हो सकता है। इसलिए राष्ट्रपति के नाते इस विषय को पूरी गंभीरता से सामने रखना उनका दायित्व है।

अगर उन्हें इसकी जानकारी मिली कि यहां कार्यक्रम में संथाल जनजाति के लोग इसलिए नहीं नहीं आ पाए क्योंकि कार्यक्रम पहले दूसरी जगह निर्धारित था तो प्रशासन के सहयोग की पूरी जानकारी मिलने के बाद उनके वहां जाना भी स्वाभाविक था। क्या ममता मानती हैं कि उन्हें चुपचाप वापस आ जाना चाहिए था? उन्होंने यही कहा कि यह बड़ा मैदान था और मुझे जब मालूम हुआ कि आप लोग यहां हैं तो मैं सोची कि मुझे जाकर आपसे मिलनी चाहिए। मुझे नहीं पता कि ऐसा क्यों किया गया क्योंकि यह मैदान दिया जाता तो सब लोग आ जाते। राष्ट्रपति द्वारा इस तरह अपनी भावना व्यक्त करने को भी मुख्यमंत्री के नाते ममता बनर्जी को गंभीरता से लेना चाहिए था। उन्हें शांत और संतुलित प्रतिक्रिया व्यक्त कर अपने पद की भी गरिमा प्रदर्शित करनी थी। इसकी जगह वह राष्ट्रपति को ही कठघरे में खड़ा कर रहीं हैं। उन्होंने यहां तक कहा कि सम्मेलन के बारे में उनके पास कोई जानकारी नहीं थी, उसकी फंडिंग के बारे में, आयोजकों के बारे में उन्हें कुछ भी पता नहीं था। राष्ट्रपति के किसी प्रदेश में दौरा की सूचना राज्य सरकार के पास पहले जाती है। उसमें उनके सारे कार्यक्रम वर्णित होते हैं। राष्ट्रपति भवन के अधिकारी प्रदेश सरकार के साथ संपर्क में रहते हैं और लगातार बातचीत होती रहती है। उसके अनुसार उनका प्रोटोकॉल, कार्यक्रम में सुरक्षा और अन्य व्यवस्थाएं होती हैं? क्या ममता बनर्जी के प्रशासन ने राष्ट्रपति के कार्यक्रम के बारे में उनको जानकारी ही नहीं दी? अगर ऐसा है तो इसकी जांच होनी चाहिए। किंतु ममता बनर्जी के व्यवहार से ऐसा लगता नहीं कि उन्हें कुछ पता नहीं था। पश्चिम बंगाल की मीडिया ने राष्ट्रपति की यात्रा और कार्यक्रम के बारे में पूर्व समाचार दिया था। सब कुछ सामने होते हुए इस तरह का व्यवहार और वक्तव्य साबित करता है कि ममता बनर्जी की हनक के समक्ष भारत देश के शीर्ष पद का भी कोई सम्मान नहीं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा इसे शर्मनाक और ममता सरकार द्वारा सारी हदें पार करने घटना बताना बिल्कुल सही है। प्रधानमंत्री या ऐसे शीर्ष पदों पर बैठे व्यक्तियों के सामने प्रतिक्रिया व्यक्त करने में भी मर्यादाएं सामने रहती हैं अन्यथा इसकी निंदा और विरोध के लिए कोई भी शब्द छोटे हैं। जनजाति समाज का कार्यक्रम और राष्ट्रपति की उपस्थिति के साथ जब ऐसा दर्दनाक व्यवहार है तो फिर सामान्य संगठन और राजनीतिक दलों के कार्यक्रम के साथ प्रशासन का कैसा व्यवहार होता होगा इसकी कल्पना करिए। पश्चिम बंगाल में जनजाति समुदाय की बड़ी संख्या है और उनकी परंपराओं ने केवल राज्य नहीं , भारत की संस्कृति को समृद्ध किया है स्वतंत्रता के संघर्ष में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वयं राष्ट्रपति जनजाति समुदाय से आती हैं। ममता बनर्जी स्वयं को आदिवासी समाज के लिए संघर्ष करने वाली और उनका हितैषी घोषित करतीं हैं। इस घटना के बाद क्या यह बताने की आवश्यकता है कि जनजाति समुदाय के प्रति उनके अंदर वाकई संवेदनशीलता और सम्मान है? वास्तविकता का साक्षात प्रमाण सामने है। विडंबना देखिए, सभी?

भाजपा विरोधी दल इस पर मौन हैं। इन दलों का व्यवहार हतप्रभ करने वाला है। राष्ट्रपति कह रही हैं कि ऐसी स्थिति पैदा की गई ताकि कार्यक्रम न हो और उन्हें वापस पड़े। देश के सभी विवेकशील लोगों को विचार करना पड़ेगा कि क्या सत्ता की राजनीति इस सीमा तक चली जाएगी जहां प्रशासन द्वारा राष्ट्रपति के कार्यक्रम की व्यवस्था करने की जगह उसे हर स्तर पर विफल कर देने का व्यवहार हो? अगर आपका उत्तर नहीं है तो यह विचार करिए ऐसे व्यवहार का प्रतिकार कैसे हो ताकि आगे कभी इसकी पुनरावृत्ति न हो सके। ऐसा नहीं हुआ तो देश इस तरह की भयानक अराजकता में फंसेगा जहां किसी पद या विधान की मर्यादा नहीं बचेगी। ममता बनर्जी के कार्यकाल में तृणमूल सरकार ने बंगाल को ऐसे राज्य में बदल दिया है जहां कानून, संविधान, चुनाव, संवैधानिक संस्थायें सब कुछ दांव पर लग चुका है।

पाठशालाओं में छात्रों को बाल जिहादी बनाने का खेल

सामयिक

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं ।

पाकिस्तान और गुलाम जम्मू-कश्मीर में जैश-ऐ-मोहम्मद और लश्करे-तैयबा की नई साजिश अब बाल जिहादी पैदा करने की शुरू हो गई है। आतंकी शिविरों, धार्मिक सम्मेलनों और जुलूसों के बाद अब पाठशालाओं में छात्रों को बाल जिहादी बनाने के लिए प्रशिक्षित करने का खेल शुरू हो गया है। इन आतंकी संगठनों ने इस्लाम, पीओके में जिहाद और शिक्षा के बहाने आतंकियों की नई फौज खड़ी करने के लिए छात्रों की भर्ती आरंभ की है। इसके लिए बकायदा विज्ञापन व पोस्टर जारी कर माता-पिताओं से कहा जा रहा है कि वे 7 से 13 साल तक के बच्चों को उनके द्वारा संचालित मदरसों में भर्ती करें। यहां उन्हें शिक्षा के साथ मुफ्त खाना, मासिक भत्ता और इस्लाम की मान्यताओं के अनुसार जंग में लड़ने की तालीम भी दी जाएगी। यही नहीं आतंकी संगठनों के उत्प्रेरक पीओके के सरकारी व गैर-सरकारी स्कूलों में जाकर जिहादी भाषण दे रहे हैं। छात्रों के लिए इन स्कूलों में नाटकों के जरिए आतंकियों की वेशभूषा में प्रतियोगिताएं कराई जा रही हैं, जिससे बालपन से ही इन छात्रों में आतंकी मानसिकता विकसित हो जाए। यह खेल सितंबर 2025 से चल रहा है। ये संगठन मुख्य रूप से गरीब बच्चों के अभिभावकों को बरगला रहे हैं।

इन सब कारणों के चलते वैश्विक आतंकवाद सूचकांक-2026 के अनुसार पाकिस्तान सूचकांक के शीर्ष पर होने के साथ आतंकवाद से सबसे अधिक प्रभावित देश बना हुआ है। जबकि अफगानिस्तान में हालात सुधर रहे हैं। इस कारण यह देश अब शीर्ष 10 देशों की सूची से बाहर हो गया है। हालांकि दक्षिण एशिया अभी भी आतंकवाद से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र बना हुआ है। बावजूद भारत के लिए यह अच्छी बात है कि यहां आतंकी घटनाओं में 43 प्रतिशत की कमी आई है। दुनियाभर में 2025 में आतंकवाद से होने वाली मौतों में 28 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। कुल मिलाकर आतंक से ग्रस्त 81 देशों में स्थिति सुधरी है, जबकि 19 देशों में बदतर हुई है। इनमें सबसे खराब स्थिति पाकिस्तान की है। क्योंकि वह आतंकी हालात से उबरने की बजाय अपने ही देश के बाल-गोपालों को जिहादी बना देने का क्रूरतम खेल खेलने में लंबे समय से लगा है। पाकिस्तान स्थित प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन जैष-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिद्दिन ने जम्मू-कश्मीर में सेना और सुरक्षा बलों पर जो भी आत्मघाती हमले कराए हैं, उनमें बड़ी संख्या में मासूम बच्चों और किशोरों का इस्तेमाल किया गया था। इस सत्य का खुलासा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् की 'बच्चे एवं सशस्त्र संघर्ष' नाम से आई रिपोर्ट में भी किया गया था। रिपोर्ट के मुताबिक ऐसे आतंकी संगठनों में शामिल किए जाने वाले बच्चे और किशोरों को आतंक का पाठ मदरसों में पढ़ाया गया है। पुलवामा जिले में मुठभेड़ के दौरान 15 साल का एक नाबालिग मारा गया था और नाबालिग सज्जाद बट षामिल था, जिसे अगस्त-2020 में सुरक्षाबलों ने मार गिराया था। मुबंई के ताज होटल पर हुए आतंकी हमले में भी पाक द्वारा प्रशिक्षित नाबालिग अजमल कसाब शामिल था।

इस रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान में मौजूद आतंकी संगठनों ने ऐसे वीडियो जारी किए हैं, जिनमें किशोरों को आत्मघाती हमलों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पाकिस्तान में सशस्त्र समूहों द्वारा बच्चों व किशोरों को भर्ती किए जाने और उनका इस्तेमाल आत्मघाती हमलों में किए जाने की लगातार खबरें मिल रही हैं। कुछ साल पहले तहरीक-ए-तालिबान ने एक वीडियो जारी किया था, जिसमें लड़कियों सहित बच्चों को सिखाया जा रहा है कि आत्मघाती हमले किस तरह किए जाते हैं। दरअसल पाक की अवाम में यह मंसूबा पल रहा है कि 'हंस के लिया पाकिस्तान, लड़के लेंगे हिंदुस्तान।' इस मकसदपूर्ति के लिए मुस्लिम कोम के उन गरीब और लाचार बच्चों, किशोर और युवाओं को इस्लाम के बहाने आतंकवादी बनाने का काम में किया जा रहा है, जो अपने परिवार की आर्थिक बदहाली दूर करने के लिए आर्थिक सुरक्षा चाहते हैं। पाक सेना के भेष में यही आतंकी अंतरराष्ट्रीय नियंत्रण रेखा को पार कर भारत-पाक सीमा पर छद्म युद्ध लड़ रहे हैं। कारगिल युद्ध में भी इन छद्म बहरुपियों की मुख्य भूमिका थी। इस सच्चाई से पर्दा संयुक्त राष्ट्र ने तो बहुत बाद में उठाया, पाक के पूर्व लेफ्टिनेंट जनरल एवं पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई के सेवानिवृत्त अधिकारी रहे, शाहिद अजीज ने 'द नेशनल डेली अखबार' में पहले ही उठा दिया था। अजीज ने कहा था कि 'कारगिल की तरह हमने कोई सबक नहीं लिया है। हकीकत यह है कि हमारे गलत और जिद्दी कामों की कीमत हमारे बच्चे अपने खून से चुका रहे हैं।' इसे पाकिस्तान के बच्चों का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि वह आज भी आतंकी बनाए जाने के लिए 'गिनी-पिग' बनाए जा रहे हैं।

आतंकवाद के बहाने धार्मिक कट्टरवाद का जहर मुस्लिम समाज की भीतरी सतहों को संकीर्ण बनाने का काम कर रहा है। यह संकीर्णता मुसलिम बहुलता वाले देशों में रहने वाले अल्पसंख्याकों के लिए तो घातक साबित हो ही रही है, इस्लाम धर्म से जुड़ी विभिन्न नस्लों को भी आपस में लड़ाने का काम कर रही है। अफगानिस्तान, इराक, मिश्र, नाइजरिया, सीरिया, पाकिस्तान में अलकायदा और आईएस आखिरकार किससे लड़े थे ? यह लड़ाई सिया,सुन्नी,कुर्द अहमदिया और बहावी इस्लाम धर्मावालंबियों में ही तो परस्पर हुई थी। अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच चल रहे युद्ध में हम देख रहे हैं कि ईरान मुस्लिम देशों को ही ध्वस्त करने में लगा है। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के काबुल में एक नशा-मुक्ति अस्पताल पर हवाई हमले करके 400 से भी अधिक लोगों को मार डाला। पाक में शिया-सुन्नियों के बीच भी हिंसक वारदातें निरंतर होती रहती है। पाक में सुन्नी-मुस्लिमों के हालात इसलिए ठीक नहीं हैं, क्योंकि ईरान पाकिस्तानी शियाओं के हित साधता रहा है। पाक को इस लाचारी का सामना इसलिए करना पड़ता हैं, क्योंकि ईरान अरबों रुपए पाकिस्तान को मदद के रूप में देता है। लिहाजा आर्थिक लाभ मिले तो पाकिस्तान अपने ही देष की भिन्न नस्लों को आपस में लड़ाने से नहीं चूकता है। अतएव दुनिया के मुस्लिम देश यह नहीं कह सकते कि दुनिया के मुस्लिम एक हैं ? वैश्विक स्तर पर यह नारा इसलिए खोखला हो चुका है,क्योंकि मुस्लिम कौमों की आपसी लड़ाई ने कई मुस्लिम देशों के अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया है। ईरान मध्य एशिया के इस्लामिक देशों पर हमले करके इस तथ्य को पुष्ट करने में लगा है।

डिजिटल खेल भी बच्चों को पढ़ा रहे हैं आतंक का पाठ

पूरी दुनिया में इस समय डिजिटल खेलों का कारोबार बढ़ रहा है। इस कारण दुनिया इनके निर्माण और निर्यात में दिलचस्पी ले रही है। नतीजतन इसका रूप दैत्याकार होता जा रहा है। फिलहाल विश्व में लोकप्रिय डिजिटल खेलों में मोबाइल प्रीमियर लीग (एमपीएल), फेंटेसी स्पोर्ट्स प्लेटफार्म, माइनक्राफ्ट, रोबलॉक्स, ड्रीम-11, कोरियन लवर गेम और लूडो किंग हैं। ये सभी खेल पाकिस्तान में भी प्रचलन में हैं। इन खेलों के अमेरिका, चीन, भारत, ब्राजील और स्पेन बड़े खिलाड़ी हैं। कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा के बढ़ते चलन के चलते दुनिया के विद्यार्थियों की मुट्ठी में एनरॉयड मोबाइल जरूरी हो गया था। मनोविज्ञनी और समाजशास्त्री इसके बढ़ते चलन पर निरंतर चिंता प्रकट कर रहे हैं। पालक बच्चों में खेल देखने की बढ़ती लत और उनके स्वभाव में आते परिवर्तन से चिंतित व परेशान हैं। पालक बच्चों को मनोचिकित्सकों से उपचार कराने के बावजूद लत से मुक्ति दिलाने में कठिनाई का सामना कर रहे हैं। दरअसल बच्चों का मोबाइल या टेबलैट की स्क्रीन पर बढ़ता समय आंखों की दृष्टि को खराब कर रहा है। साथ ही अनेक शारीरिक और मानसिक बीमारियों की गिरफ्त में भी बच्चे आ रहे हैं। पोर्न फिल्में भी देखते बच्चे पाए गए हैं।

ऑनलाइन खेल आंतरिक श्रेणी में आते हैं, जो भौतिक रूप से मोबाइल पर एक ही किशोर खेलता है, लेकिन इनके समूह बनाकर इन्हें बहुगुणित कर लिया जाता है। वैसे तो ये खेल सकारात्मक होते हैं, लेकिन ब्लू व्हेल, पब्जी, माइनक्राफ्ट और रोबलॉक्स जैसे खेल उत्सुकता और जुनून का ऐसा मायाजाल रचते हैं कि मासूम बालक के दिमाग की परत पर नकारात्मकता की पृष्ठभूमि रच देते हैं। मनोचिकित्सकों और स्नायु वैज्ञानिकों का कहना है कि ये खेल बच्चों के मस्तिष्क पर बहुआयामी प्रभाव डालते हैं। ये प्रभाव अत्यंत सूक्ष्म किंतु तीव्र व तीक्ष्ण होते हैं, इसलिए ज्यादातर मामलों में अस्पष्ट होते हैं। दरअसल व्यक्ति की आंतरिक शक्ति से आत्मबल दृढ़ होता है और जीवन क्रियाशील रहता है। किंतु जब बच्चे निरंतर एक ही खेल खेलते हैं तो दोहराव की इस प्रक्रिया से मस्तिष्क कोशिकाएं परस्पर घर्षण के दौर से गुजरती हैं, नतीजतन दिमागी द्वंद्व बढ़ता है और बालक मनोरोगों की गिरफ्त से लेकर नस्लीय गिरफ्त में आता जाता है, जो उसे आतंक की राह में धकेलने का काम कर देते हैं। ये खेल हिंसक और अश्लील होते हैं, इसलिए बच्चों के आचरण में आक्रामकता और गुस्सा देखने में आने लगता है। दरअसल इस तरह के खेल देखने से मस्तिष्क में तनाव उत्पन्न करने वाले डोपाइन जैसे हार्मोनों का स्त्राव होने लगता है। इस द्वंद्व से भ्रम और संशय की मनस्थिति निर्मित होने लगती है और बच्चों का आत्मविश्वास छीजने के साथ विवेक अस्थिर होने लगता है, जो आत्मघाती कदम उठाने को विवश कर देता है।

सांड-सांड की लड़ाई में बागड़ का नुकसान

कटाक्ष

शांतिलाल जैन

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आप देख रहे हैं लड़ाई सांडों की। वेन्यू फ़ारस की खाड़ी का, एरीना ईरान में। दो सांड एक तरफ, एक सांड दूसरी तरफ। जोड़ी में एक सांड अंकल सैम का, एक सांड ज़ायोनिस्टों का। दूसरी तरफ एक अकेला सांड, पर्शियन नस्ल का। ये क्या!! शुरू मेई बेईमानी ! पास के वेन्यू ओमान में शांतिवार्ता चल रही थी कि जोड़ीदार सांडों ने पर्शियन सांड को अकेला पा कर अटैक कर दिया। ज़ुबां शांति की, अंगुलियाँ मिसाईलों के ट्रिगर पे। बुल फाईट में नुकसान बागड़ का। कुवैत, बहरीन, क़तर इस बागड़ पर ज़ख्मी तो लेबनान उस बागड़ पर। नुकसान तो दूर देशों तक पसरी बागड़ का भी हो रहा है। जम्बूद्वीप जैसे देश जो दो रोज़ पहले ही जाकर 'आ सांड मुझे मार' कर आए थे, लहुलुहान वे भी कम नहीं है। सांड लड़ वहाँ रहे हैं, सिलेंडर की कतार में हम और आप यहाँ खड़े हैं। बाज़ार की दुनिया के सांड वाल-स्ट्रीट से दलाल-स्ट्रीट तक हर जगह दुबक गए हैं, बीयर हावी हैं। क्षत-विक्षत है बागड़ इन्वेस्टर्स की। मज़े में हैं तो बस चीन और रूस। चतुर हैं, बागड़ पर नहीं दर्शक दीर्घा में जा बैठे हैं। माल भी कमा रहे हैं और मज़े भी ले रहे हैं। उनकी कम्पनियाँ मुनाफ़े में है और तीसरी दुनिया लॉस में। आप देख रहे हैं बुल-फाईट में दुनिया की शेष बागड़ का सत्यानाश।

आगे का हाल सुनाने से पहले हम आपको बताते चलें दो सांडों की जोड़ी मान कर चल रही थी एक अकेला, दुबला-पतला, कमज़ोर सांड रमजान में क्या तो खुद को बचा पाएगा, क्या आक्रमण कर पाएगा। अनावृत्त मानकर चल रहे थे उसे। सोचा क्या तो नहाएगा, क्या तो निचोड़ेगा। पर्शियन नस्ल को वे चुटकियों में मसल देंगे। मगर ऐसा होता दीख नहीं रहा। सांडो की लड़ाई जलिकट्टू की लड़ाई नहीं है। ये न परंपरा के लिए है, न मनोरंजन के लिए। असल मकसद तो पर्शियन सांड के कब्ज़े वाली उस दुधारू गाय का अपहरण करना है जिसे तेल का कुआँ कहा जाता है। आँखों में सपने पेट्रो डॉलर के हैं। फाईट टफ़ है, नुकसान जबरजस्त।

और ये दांव। धोबी पछाड़। जोड़ीदार सांडों का पॉवर मूव। प्रतिबंध के सींगों में फँसा कर विचारधारा बदलने का दांव... ओह्ह मूव फिर फेल हुआ। पर्शियन सांड फिर बच निकला। अबकि बार निज़ाम से बेदख़ल कराने डबल-लेग टेकडाउन लगाया गया है। पर्शियन सांड को सींगों की बजाए पैरों में घुसकर पकड़ने का दांव लगाया गया है। मगर ये क्या... अधिनायकवादी निज़ाम से बेदख़ल कराने निकले अंकल सैम का अपना चेहरा अधिनायकवादी निकल आया है। पर्शियन सांड है कि लीडरान-दर-लीडरान मारे जाने के बाद भी अंकल सैम के काबू में आ नहीं रहा। अलबत्ता, ड्रोननुमा छोटे छोटे सींगों से अंकल सैम को हलाकान किए दे रहा है। अभी तक दो सांडों की जोड़ी एक भी राउंड पूरी तरह से जीत नहीं पाई है। 'परमाणु खतरे को रोकना है और मध्यपूर्व में स्थिरता लानी है' कहते हुए अंकल सैम का सांड एक बार फिर आगे बढ़ा, एक बार फिर मुँह की खाई। न यार मिला, न विसाले सनम। न परमाणु बम मिला न ख़तरा। जोड़ीदार सांड का हर दांव फेल हो रहा है। वे बार बार मुँह की खा रहे हैं, मगर अभी चुके नहीं हैं। अंकल सैम यूरोप से ला कर एडिशनल सांड्स उतारने के मूड में हैं। लेकिन ये क्या!! सांड-सखाओं ने मना कर दिया। बुल जर्मनी का हो, इटली का हो, फ़्रांस या ऑस्ट्रेलिया का, सबने अंकल सैम को अंगूठा दिखा दिया है। कह रहे हैं कि भांडों के लिए सांडों के सींग नहीं पकड़े जाते। अलग-थलग पड़ता जा रहा है पॉवरफुल पेयर ऑफ़ सांड्स। हारने की कगार पर दीखते तो हैं मगर मैच अभी ख़त्म नहीं हुआ है। तरकशों में तीर बाकी हैं। कुछ भी हो सकता है। जो यूरेनियम बुझा सींग मार दिया तो मनुष्यता की बागड़ का गहरे तक झुलस जाना तय है।

जंग जारी है। वैश्विक बागड़ पर बैठे अबोध, निहत्थे, निर्दोष नागरिकों को कभी ये सांड कुचल रहा है कभी वो। न कोई अस्पताल बख्श रहा है न स्कूल, न बीमार न अपाहिज, न औरतें न बच्चे, न गरीब न मजलूम। रहम किस चिड़िया का नाम है!! आप देख रहे हैं लड़ाई सांडों की। वेन्यू फ़ारस की खाड़ी का, एरीना ईरान में।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दरवाज़ा खुला है

वक्रोक्ति

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

लेखक व्यंग्यकार हैं।

शहर के उस आखिरी छोर पर, जहाँ कंक्रीट के जंगल की सांसें फूलने लगती हैं, वह 'शांति विला' खड़ा था। विला का नाम 'शांति' शायद इसलिए रखा गया था क्योंकि यहाँ का सन्नाटा कब्रिस्तानों को मात देता था। लोहे के विशाल फाटक पर जंग की ऐसी परतें थीं, जैसे वक्त ने खुद उसे छूना छोड़ दिया हो।

अनिरुद्ध ने अपनी महँगी चमड़े की जैकेट को झाड़ा। छह साल बाद ऑस्ट्रेलिया की चकाचौंध से वह इस धूल भरे सन्नाटे में लौटा था। टैक्सी ड्राइवर ने सामान उतारते हुए अजीब नज़रों से उसे देखा।

'साहब, इस घर में कोई रहता है क्या? बड़ी भारी महक आ रही है बाहर तक।'

अनिरुद्ध ने नाक सिकोड़ी। 'मेरी माँ रहती हैं। बूढ़ी हैं, शायद सफाई नहीं करवा पातीं। तुम अपना किराया लो और निकलो।'

उसने जैसे ही धक्का दिया, दरवाज़ा बिना किसी आवाज़ के खुल गया। वह बंद नहीं था। उसे लगा था कि अंदर से मां की आवाज़ आएगी– 'अरे अनु! तू आ गया?' पर अंदर से सिर्फ एक गाढ़ा, चिपचिपा अंधेरा बाहर आया। वह अंधेरा जो छह महीनों से इस विला की दीवारों के बीच पक रहा था।

'माँ? सो रही हो क्या? देखो, मैं सिडनी से सीधे आ रहा हूँ। बहुत थक गया हूँ, एक कप चाय तो पिला दो।'

बहुत दिनों बाद कमरे में कोई स्वर गूँज रहा था। सोफे पर जो था, वह अब माँ नहीं थी। वह हड्डियों का एक ढांचा था, जिस पर चमड़ी का बचा-कुचा भूरा लिबास लिपटा था। प्रकृति ने अपना काम बखूबी किया था– कीड़े अपना हिस्सा ले चुके थे, अब केवल अवशेष बचे थे। अनिरुद्ध की चीख गले में ही सूख गई। उसे लगा कि यह कोई प्रैंक है, पर वह गंध? वह गंध किसी मजाक की नहीं, बल्कि एक अंतिम सत्य की थी।

मेज पर एक कागज का टुकड़ा पड़ा था। धूल की परतों के नीचे दबे उस कागज पर कोई वसीयत नहीं थी, न ही गहनों का हिसाब। उस पर सिर्फ एक ही वाक्य हज़ारों बार लिखा गया था, जैसे कोई पागल मंत्र जपा गया हो– 'बेटा, दरवाज़ा खुला है, तू बस आ जाना।'

अनिरुद्ध का हाथ कांपने लगा। उसने रोशनी कागज के निचले हिस्से पर डाली। वहाँ खून और आंसुओं के सूखे काले धब्बे थे, जहाँ लिखा था– 'मैं मर नहीं रही अनु, बस सो रही हूँ ताकि जब तू आए तो मुझे जगा सके। ऑस्ट्रेलिया में बहुत ठंड होती है न? सुना है वहाँ लोग अपनों को भूल जाते हैं, पर तू तो मेरा बेटा है। स्वेटर पहन लेना, तुझे जुकाम जल्दी होता है।'

तभी अनिरुद्ध की नज़र उस कंकाल के सूखे, काले पड़ चुके हाथ की मुट्ठी पर पड़ी। मुट्ठी कसी हुई थी। उसने हिम्मत जुटाकर उन ठंडी, पत्थर जैसी उंगलियों को खोला। अंदर एक छोटा सा, नीले रंग का ऊनी स्वेटर दबा था। वह आधा बुना हुआ था। एक सलाई अभी भी ऊन के गोलों में फंसी थी। यह स्वेटर अनिरुद्ध के उस बेटे के लिए था, जिसकी तस्वीर उसने तीन साल पहले व्हाट्सएप पर भेजी थी।

'माँ...' अनिरुद्ध के गले से एक घिघियाहट निकली।

वह 'शांति विला' अब एक कटघरा बन गया था। उसे याद आया, छह महीने पहले माँ का आखिरी फोन आया था। उसने झिड़क कर कह दिया था– 'मम्मी, यहाँ प्रोजेक्ट की डेडलाइन है, आप रोज़ वही 'कब आओगे' का राग मत अलापा करो।'

शायद उसी रात माँ ने दरवाज़ा खुला छोड़ा होगा। शायद उसी रात उन्होंने यह तय किया होगा कि अब वे नहीं जागेंगी, क्योंकि जागते हुए इंतज़ार करना बहुत दर्दनाक था। उन्होंने मौत को एक नींद का नाम दे दिया था, ताकि बेटे पर हत्या का इल्जाम न आए।

खिड़की से आती चांद की ठंडी रोशनी ने उस कंकाल की आँखों के गड्ढों को भर दिया। उन खाली कोटरों में अब भी एक भयावह इंतज़ार जमा हुआ था। एक ऐसा इंतज़ार जो मौत की सरहद पार करने के बाद भी खत्म नहीं हुआ था। अनिरुद्ध ने उस आधे बुने स्वेटर को अपने चेहरे से लगा लिया। वह ऊन अब मुलायम नहीं थी, वह कांटों की तरह चुभ रही थी।

उस बड़े से विला में, करोड़ों की संपत्ति के बीच, अनिरुद्ध अकेला खड़ा था। उसके पास ऑस्ट्रेलिया का पीआर था, बैंक बैलेंस था, और एक शानदार भविष्य था। पर उसके पास वह नींद नहीं थी, जिसे उसकी माँ छह महीने से ओढ़े बैठी थी।

उसने सिसकते हुए माँ के उस कंकाल नुमा हाथ को पकड़ लिया और धीरे से फुसफुसाया, 'माँ, उठो... देखो मैं आ गया। दरवाज़ा बंद कर दो, अब मुझे कहीं नहीं जाना।'

पर माँ नहीं जागीं। उन्होंने अपना वादा पूरा कर दिया था। वे सो चुकी थीं ताकि बेटा उन्हें जगा सके। पर बेटा इतनी देर से आया था कि अब जगाने के लिए कोई शरीर नहीं, सिर्फ एक पछतावा बचा था।

हवा के एक झोंके ने उस कागज को फर्श पर उड़ा दिया। आखिरी पंक्ति अब साफ दिख रही थी– 'दरवाज़ा खुला है, क्योंकि तू तो पराया हो गया, पर मेरी ममता अब भी तेरी राह देख रही है।'

अनिरुद्ध उसी ठंडे फर्श पर बैठ गया। बाहर शहर की रोशनी चमक रही थी, पर 'शांति विला' के उस कोने में एक ऐसा अंधेरा छा गया था, जिसे दुनिया का कोई भी सूरज कभी नहीं मिटा सकता था।

दृष्टिकोण

ब्रजेश कानूनगो

लेखक स्तंभकार हैं!

बोझिल भविष्य में सुख देंगी कलाएं

ललित कला और प्रदर्शन कला मानवीय अभिव्यक्ति के दो सबसे सुंदर स्तंभ हैं। जहाँ ललित कला को हम देख और महसूस कर सकते हैं, वहीं प्रदर्शन कला (परफॉर्मिंग आर्ट) को समय और गति के माध्यम से जिया जाता है। ललित कला का मुख्य उद्देश्य सौंदर्य और दृश्य आनंद पैदा करना है। यह अक्सर 'स्थिर' होती है और इसे भौतिक माध्यमों (जैसे रंग, मिट्टी या पत्थर) से बनाया जाता है। जैसे चित्रकला,मूर्तिकला,वास्तुकला,,रेखांकन आदि जिनमें कलाकार स्वयं रचनात्मक रूप से सक्रिय रहता है। वहीं प्रदर्शन कला (परफॉर्मिंग आर्ट) में कलाकार अपने शरीर, आवाज और चेहरे के हाव-भाव का उपयोग करके कला का प्रदर्शन करते हैं। यह 'क्षणभंगुर' होती है—यानी यह प्रदर्शन के साथ ही घटित होती है और समाप्त हो जाती है। इन कलाओं में संगीत, नृत्य, नाटक और कुछ हद तक मार्शल आर्ट को शामिल किया जा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और प्रौद्योगिकी में हम जिस तेजी से आगे बढ़ रहे हैं इससे लगता है कि दुनिया भर के,हर क्षेत्र और हर विषय के ज्ञान से हम कुछ समय बाद लबालब भरे होंगे। बल्कि हमारा ज्ञान छलक छलक कर बाहर आने को बेताब होगा। यह एक नई ऊब हमारे जीवन मे ला सकती है। कुछ पाने के लिए हमारे पास करने को कुछ नहीं होगा जिससे जीवन मे प्रवाह,उमंग और उत्साह बढ़ता रहे। ऐसे में मुझे लगता है हमारे संतोष और खुशी मे केवल उन कलाओं की भूमिका ही रह जाएगी जो हमारी आदिम सभ्यता का हिस्सा रहीं हैं। जो हमारे मनुष्य होने से संभव हुई हैं। जिन्हें हम प्रदर्शन कलाओं और ललित कलाओं के नाम से पुकारते हैं।

ललित कला (Fine Arts) और प्रदर्शन कला (Performing Arts) मानवीय अभिव्यक्ति के दो सबसे सुंदर स्तंभ हैं। जहाँ ललित कला को हम देख और महसूस कर सकते हैं, वहीं प्रदर्शन कला (परफॉर्मिंग आर्ट) को समय और गति के माध्यम से जिया जाता है। ललित कला का मुख्य उद्देश्य सौंदर्य और दृश्य आनंद पैदा करना है। यह अक्सर 'स्थिर' होती है और इसे भौतिक माध्यमों (जैसे रंग, मिट्टी या पत्थर) से बनाया जाता है। जैसे चित्रकला,मूर्तिकला,वास्तुकला,,रेखांकन आदि जिनमें कलाकार स्वयं रचनात्मक रूप से सक्रिय रहता है। वहीं प्रदर्शन कला (परफॉर्मिंग आर्ट) में कलाकार अपने शरीर, आवाज और चेहरे के हाव-भाव का उपयोग करके कला का प्रदर्शन करते हैं। यह 'क्षणभंगुर' होती है—यानी यह प्रदर्शन के साथ ही घटित होती है और समाप्त हो जाती है। इन कलाओं में संगीत, नृत्य, नाटक और कुछ हद तक मार्शल आर्ट को शामिल किया जा सकता है।

जब मनुष्य के पास सब कुछ होगा तो वह अपनी खुशी के लिए चित्र बनाएगा, धातुओं,काष्ठ में मूर्ति या चट्टानों में शिल्प गढ़ेगा या फिर गाने, बजाने और शारीरिक प्रस्तुतियों से खुद को और समाज को आनंदित होने का अवसर देगा। नृत्य करेगा, अभिनय के माध्यम से लोक कथाएं या कहानियां देखी सुनी जाएंगी। दरअसल, एक ट्रैवल वीडियो में पश्चिम अफ्रीका के आइवरी कोस्ट (Ivory Coast) के गौरो (Guro) समुदाय के प्रसिद्ध 'ज़ौली' (Zaouli) नृत्य को देखते हुए जो खुशी और आनंद की अनुभूति हुई उसने हमारा विश्वास दृढ़ किया कि चाहे जितना हम विकास कर लें, प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बौद्धिकता से सब कुछ पा लें लेकिन हमारी प्राचीन कलाएं सदैव हमारे साथ बनी रहेंगीं। हमारे जीवन में रस घोलती रहेंगी।

ज़ौली' (Zaouli) नृत्य अपनी अविश्वसनीय गति और जटिल फुटवर्क के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। ज़ौली (Zaouli) नृत्य की सबसे बड़ी विशेषता इसकी लय और ताल है, जिसे विशिष्ट पारंपरिक वाद्ययंत्रों के माध्यम से जीवंत किया जाता है। संगीत और नर्तक के पैरों की गति के बीच का तालमेल ही इस प्रदर्शन को जादुई बनाता है। ज़ौली में संगीत केवल बैकग्राउंड में नहीं बजता, बल्कि यह नर्तक के लिए एक 'चुनौती' की तरह होता है। ड्रमर एक जटिल ताल बजाता है, और नर्तक को अपने पैरों से ठीक उसी ताल को दोहराना होता है। जैसे-जैसे ड्रम की गति बढ़ती है, नर्तक को अपनी शारीरिक क्षमता की सीमाओं को पार करते हुए और भी तेज़ी से थिरकना पड़ता है। संगीत में अचानक आने वाले ठहराव (Breaks) पर नर्तक को बिल्कुल स्थिर हो जाना पड़ता है, जो दर्शकों के लिए सबसे रोमांचक क्षण होता है।

इस नृत्य की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। माना जाता है कि यह एक सुंदर लड़की 'ज़ौली' (Zaouli) से प्रेरित है। यह नृत्य स्त्री सौंदर्य और अनुग्रह (Grace) का सम्मान करने के लिए किया जाता है, हालांकि इसे पारंपरिक रूप से पुरुषों द्वारा ही प्रदर्शित किया जाता है। 2017 में, इस नृत्य को इसकी सांस्कृतिक विशिष्टता के कारण यूनेस्को (UNESCO) की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' (Intangible Cultural Heritage) की सूची में शामिल किया गया था। हमने वीडियो के जरिए आभासी आनंद लेते हुए देखा कि इसमें नर्तक एक चमकीले रंग का लकड़ी का मुखौटा पहनता है, जो अक्सर किसी जानवर या सुंदर महिला के चेहरे को दर्शाता है। यह मुखौटा गौरो शिल्पकारों की बेहतरीन कला का नमूना होता है। नर्तक शरीर पर रंगीन बुने हुए कपड़े और पैरों में घंटियाँ पहनता है। हाथों में अक्सर पूंछ के बालों से बने 'फ्लाइविस्क' (Fly-whisks) होते हैं, जो नृत्य के दौरान हवा में लहराते हैं। यह नृत्य दुनिया के सबसे चुनौतीपूर्ण नृत्यों में से एक माना जाता है क्योंकि नर्तक के पैर इतनी तेज़ी से चलते हैं कि वे आंखों से धुंधले दिखने लगते हैं। यह शरीर के ऊपरी हिस्से को स्थिर रखते हुए किया जाता है। नृत्य पूरी तरह से ड्रम और बांसुरी की थाप पर आधारित होता है। नर्तक और ड्रमर के बीच एक गहरा संवाद होता है; हर कदम ड्रम की एक विशिष्ट बीट के साथ मेल खाता है। यह शारीरिक रूप से बहुत थका देने वाला होता है, इसलिए एक प्रदर्शन के लिए नर्तक को बहुत अभ्यास और ताकत की आवश्यकता होती है। ट्रैवलर को स्थानीय निवासी बताते हैं कि यह नृत्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह गांवों के बीच एकता का प्रतीक भी है। इसे शादी, उत्सवों और कभी-कभी अंतिम संस्कार के समय भी प्रदर्शित किया जाता है ताकि समुदाय के बीच भाईचारा बढ़े।

यदि अपने देश के संदर्भ में बात करें तो भारत में शास्त्रीय नृत्य कलाएं और लोक नृत्य कलाएं दोनों ही अपनी अनूठी शैली और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं। तमिलनाडु का भरतनाट्यम नृत्य अपनी भावपूर्ण भंगिमाओं और जटिल पदचाप के लिए जाना जाता है।उत्तर प्रदेश का कथक नृत्य तेज़ ताल और पैरों की जटिल तकनीक के लिए प्रसिद्ध है। केरलम का कथकली नृत्य रंगीन मेकअप, वेशभूषा और नाटकीय अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है। आंध्र प्रदेश का कुचिपुड़ी नृत्य नाटक और नृत्य का सुंदर संगम है। मणिपुर का मणिपुरी नृत्य अपनी कोमलता और लयबद्धता के लिए जाना जाता है। केरलम का मोहिनीअट्टम नृत्य स्त्रीत्व और लालित्य का प्रतीक है। ओडिशा का ओडिसी नृत्य मंदिरों से जुड़ा है और भक्ति भावनाओं से ओतप्रोत है। असम का सत्रिया नृत्य अपनी अनूठी शैली और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है। इन शास्त्रीय नृत्यों के अलावा हमारे देश में अनेक लोक नृत्य कलाएं भी बहुत प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं असम का बिहू अपनी ऊर्जा और उत्साह के लिए जाना जाता है। पंजाब का भांगड़ा अपनी जोशीली और उत्साही शैली के लिए प्रसिद्ध है। गुजरात का गरबा अपनी अनूठी शैली और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है। महाराष्ट्र की लावणी अपनी भावपूर्ण और आकर्षक शैली के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान का घूमर नृत्य अपनी अनूठी शैली और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता है।

इन विविध नृत्य कलाओं से समृद्ध देश होने के कारण हम आश्वस्त हो सकते हैं कि भविष्य में सब कुछ पा लेने के भारी बोझ के बीच भी हमारे लिए अपने आनंद की राह निकाल लेना कठिन नहीं होगा।

चैत्र नवरात्रि

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

प्रकृति के नवोदय और कृषि जीवन का उत्सव

वसंत ऋतु के इस दौर में पेड़-पौधों पर नई कोपलें फूटती हैं, खेतों में रबी की फसलें पककर तैयार होती हैं और वातावरण में एक विशेष प्रकार की ताजगी अनुभव होती है। ऐसे समय में मनुष्य का मन भी नवसृजन और ऊर्जा से भर जाता है। चैत्र नवरात्रि इसी प्राकृतिक बदलाव का सांस्कृतिक उत्सव है, जिसमें देवी शक्ति की आराधना के साथ-साथ जीवन के पुनर्निर्माण की भावना भी जुड़ी होती है। यह पर्व हमें यह समझने का अवसर देता है कि भारतीय संस्कृति में प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं माना गया, बल्कि उसे जीवनदाता के रूप में सम्मान दिया गया है। खेतों में उगने वाली फसलें केवल भोजन का साधन नहीं, बल्कि किसान के श्रम, धैर्य और प्रकृति के सहयोग का परिणाम होती हैं। इसलिए जब फसल पकती है, तो उसका उत्सव मनाना केवल आर्थिक खुशी नहीं, बल्कि कृतज्ञता का भाव भी होता है।

भारतीय जीवन पद्धति में ऋतुओं, खेती और आस्था के बीच एक गहरा और जीवंत संबंध दिखाई देता है। यही कारण है कि यहाँ के अधिकांश पर्व केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति और श्रम के प्रति सम्मान व्यक्त करने के अवसर भी होते हैं। इस बार चैत्र नवरात्रि, 19 मार्च से 27 मार्च तक मनाई जा रही है । चैत्र नवरात्रि इसी परंपरा का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जो वर्ष के उस समय आता है जब धरती नए जीवन की आहट से भर उठती है।

वसंत ऋतु के इस दौर में पेड़-पौधों पर नई कोपलें फूटती हैं, खेतों में रबी की फसलें पककर तैयार होती हैं और वातावरण में एक विशेष प्रकार की ताजगी अनुभव होती है। ऐसे समय में मनुष्य का मन भी नवसृजन और ऊर्जा से भर जाता है। चैत्र नवरात्रि इसी प्राकृतिक बदलाव का सांस्कृतिक उत्सव है, जिसमें देवी शक्ति की आराधना के साथ-साथ जीवन के पुनर्निर्माण की भावना भी जुड़ी होती है। यह पर्व हमें यह समझने का अवसर देता है कि भारतीय संस्कृति में प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं माना गया, बल्कि उसे जीवनदाता के रूप में सम्मान दिया गया है। खेतों में उगने वाली फसलें केवल भोजन का साधन नहीं, बल्कि किसान के श्रम, धैर्य और प्रकृति के सहयोग का परिणाम होती हैं। इसलिए जब फसल पकती है, तो उसका उत्सव मनाना केवल आर्थिक खुशी नहीं, बल्कि कृतज्ञता का भाव भी होता है।

चैत्र नवरात्रि का समय किसानों के लिए विशेष महत्व रखता है। महीनों की मेहनत के बाद जब खेतों में सुनहरी फसल लहराती है, तो वह केवल उत्पादन नहीं, बल्कि आशा और संतोष का प्रतीक होती है। यही कारण है कि कई क्षेत्रों में नई फसल को पहले ईश्वर को समर्पित करने की परंपरा देखने को मिलती है। यह परंपरा हमें सिखाती है कि प्रकृति से प्राप्त हर चीज के प्रति विनम्रता और आभार का भाव होना चाहिए।

इस पर्व का एक और महत्वपूर्ण पहलू है बीज और जीवन के संबंध की समझ। नवरात्रि के दौरान कई स्थानों पर मिट्टी में बीज बोकर उसकी वृद्धि को देखा जाता है। यह एक प्रतीकात्मक प्रक्रिया है, जो यह दर्शाती है कि छोटे से बीज में भी विशाल जीवन की संभावना छिपी होती है। यह हमें धैर्य, देखभाल और समय के महत्व को समझने का संदेश देती है ठीक वैसे ही जैसे

किसान बीज बोकर उसकी देखभाल करता है और समय आने पर फसल प्राप्त करता है।

चैत्र नवरात्रि का संबंध केवल बाहरी प्रकृति से ही नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर की प्रकृति से भी है। उपवास और सात्विक जीवनशैली के माध्यम से शरीर और मन को शुद्ध करने की परंपरा इस पर्व का अभिन्न हिस्सा है। यह आत्मसंयम और अनुशासन का अभ्यास है, जो हमें संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में यह संदेश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

पर्यावरणीय दृष्टि से भी इस पर्व का विशेष महत्व है। आज जब जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब चैत्र नवरात्रि का मूल संदेश हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने की याद दिलाता है। यह पर्व हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम प्रकृति के साथ उतना ही सम्मानजनक व्यवहार कर रहे हैं, जितना हमारी परंपराएँ हमें सिखाती हैं। ग्रामीण समाज में यह पर्व सामाजिक जीवन को भी सशक्त बनाता है। लोग एक-दूसरे के साथ मिलकर पूजा, भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। इससे आपसी सहयोग और सामुदायिक भावना मजबूत होती है। यह केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक जुड़ाव का भी माध्यम है।

शहरी जीवन में भले ही खेती से सीधा संबंध कम होता जा रहा हो, लेकिन चैत्र नवरात्रि जैसे पर्व हमें हमारी जड़ों की याद दिलाते हैं। यह हमें बताता है कि हमारी समृद्धि का आधार कहीं न कहीं प्रकृति और कृषि पर ही टिका है। यदि हम इस संबंध को समझें और उसका सम्मान करें, तो हम अधिक संतुलित और जिम्मेदार जीवन जी सकते हैं।

चैत्र नवरात्रि को केवल देवी पूजा के रूप में देखना इसकी व्यापकता को सीमित कर देना होगा। यह पर्व जीवन के उस चक्र का उत्सव है, जिसमें प्रकृति, श्रम, आस्था और समाज एक साथ जुड़े हुए हैं। यह हमें सिखाता है कि विकास केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने में ही निहित है।

इस नवरात्रि यदि हम केवल अनुष्ठानों तक सीमित न रहकर इसके गहरे अर्थ को समझें, तो यह पर्व हमारे जीवन में नई दृष्टि और सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है। यही इसकी वास्तविक सार्थकता है।

दूसरा पहलू

अरुण कुमार उनायक

लेखक समाजसेवी हैं।

कालगणना का प्रश्नः इतिहास, परंपरा और भ्रम

भारतीय कालगणना के प्रश्न पर 'सुबह सबेरे' में हाल ही में प्रकाशित डॉ. मुरलीधर चांदनीवाला का आलेख पहली दृष्टि में राष्ट्रवादी सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित प्रतीत होता है, किंतु गहराई से विश्लेषण पर उसमें अनेक ऐतिहासिक, अभिलेखीय और वैज्ञानिक तथ्यों का सरलीकरण तथा कुछ स्थानों पर तथ्यात्मक असंगतियाँ भी दिखाई देती हैं। इस विषय पर विचार करते समय भावनाओं के बजाय प्रमाण, इतिहास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आधार बनाना आवश्यक है।

सबसे पहले उस दावे पर विचार करें जिसमें कहा गया है कि लगभग 2083 वर्ष पूर्व शकों को पराजित कर मालव गणराज्य की स्थापना हुई और उसी के उपलक्ष्य में विक्रम संवत प्रारंभ हुआ। विक्रम संवत की आरंभ-तिथि 57 ईसा पूर्व मानी जाती है और विक्रमादित्य से जुड़ी वीरता, न्यायप्रियता व आदर्श शासन की कथाएँ सिंहासन बत्तीसी तथा बेताल पच्चीसी जैसे लोकसाहित्य में अवश्य मिलती हैं, किंतु उनके द्वारा शकों की पराजित करने का कोई प्रमाणित ऐतिहासिक विवरण अनुपलब्ध है। वास्तव में शकों का पराभव किसी एक घटना का परिणाम नहीं था, बल्कि सातवाहनों–विशेषतः गौतमीपुत्र सातकर्णी–के साथ संघर्षों से उनकी शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हुई और अंततः चौथी शताब्दी ईस्वी में चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा पश्चिमी क्षत्रपों की पराजय के साथ उनका राजनीतिक प्रभुत्व समाप्त हुआ। आधुनिक इतिहासलेखन भी पौराणिक कथाओं को प्रत्यक्ष ऐतिहासिक तथ्य के रूप में स्वीकार नहीं करता।

विक्रमादित्य की ऐतिहासिकता पर विचार आवश्यक है। यह किसी एक प्रमाणित शासक का व्यक्तिगत नाम नहीं, बल्कि एक उपाधि रही है, जिसे विभिन्न राजाओं ने धारण किया–जिसमें गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय प्रमुख हैं। परंपरा में उज्जैन के विक्रमादित्य (भर्तृहरि के भाई माने जाने वाले) का उल्लेख मिलता है, किंतु उपलब्ध साक्ष्य इसकी स्पष्ट पुष्टि नहीं करते। जैन अनुश्रुतियों में उनका उल्लेख है, पर उन्हें विक्रम संवत का वास्तविक प्रवर्तक मानना निर्विवाद रूप से सिद्ध नहीं है। प्रारंभिक शताब्दियों के शिलालेखों में 'विक्रम संवत्' नाम का अभाव है, जो संकेत देता है कि इसका नामकरण और पहचान बाद में विकसित हुई। इसका व्यापक प्रचलन सातवीं से नौवीं शताब्दी के बीच अधिक स्पष्ट दिखता है। इसलिए, विक्रम संवत को किसी अप्रमाणित ऐतिहासिक घटना या व्यक्ति से जोड़ना इतिहास की कसौटी पर पूरी तरह टिकता नहीं है।

इसके विपरीत, शक संवत का आधार अपेक्षाकृत स्पष्ट और अभिलेखीय है। 78 ईस्वी से प्रारंभ होने वाले पंचांग का मथुरा सहित विभिन्न अभिलेखों में इसका उल्लेख मिलता है। इसे 'विदेशी' कहकर खारिज करना भी भारतीय इतिहास की उस समन्वयकारी प्रवृत्ति की उपेक्षा है, जिसमें बाहरी तत्व भी भारतीय जीवन का अंग बन गए। जवाहरलाल नेहरू ने 'भारतीय सभ्यता' को इसी समन्वयकारी परंपरा का परिणाम बताया था–जहाँ शक, कुषाण और अन्य समूह भारतीय जीवन का हिस्सा बन गए।

डॉ. चांदनीवाला का एक अन्य दावा भी असंगत है कि शक संवत, विक्रम संवत से 21 वर्ष पुराना है। वस्तुतः विक्रम संवत 57 ईसा पूर्व से और शक संवत 78 ईस्वी से प्रारंभ होता है–दोनों के बीच लगभग 135 वर्षों का अंतर है।

विक्रम संवत को '57 ईसा पूर्व' कहना अनुचित नहीं है। हर कालगणना की एक आधार-तिथि होती है, जिसे आधुनिक इतिहासलेखन में ईसा पूर्व/ईस्वी सन् के रूप में व्यक्त किया जाता है। अतः 'विक्रम संवत 1' और '57 ईसा पूर्व'–दोनों एक ही तथ्य के भिन्न प्रस्तुतीकरण हैं।

डाक्टर चांदनीवाला द्वारा यह दावा किया गया कि स्वतंत्र भारत की सरकार ने धर्मनिरपेक्षता के दबाव में विक्रम संवत् को पीछे कर शक संवत को आगे किया। लेकिन उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाण इस धारणा का समर्थन नहीं करते। यह उल्लेखनीय है कि 1952 में गठित पंचांग सुधार समिति प्रशासनिक निकाय नहीं थी। खगोल भौतिकी के विद्वान् मेघनाद साहा की अध्यक्षता में गठित इस समिति में खगोलशास्त्री (एन.सी. लाहिड़ी), इतिहासकार (ए.सी. बनर्जी), गणितज्ञ (गोरख प्रसाद), विधिवेत्ता (के.के. दफ्तरी), पारंपरिक ज्योतिर्विद (जे.एस. करंदीकर) और नीतिगत स्तर पर भारत सरकार में मंत्री (रफी अहमद किदवई) सदस्य शामिल थे। इससे स्पष्ट है कि राष्ट्रीय पंचांग का चयन किसी एक विचारधारा का परिणाम नहीं, बल्कि वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और परंपरागत दृष्टियों के समन्वय का निष्कर्ष था। इसका उद्देश्य प्रशासनिक एकरूपता और अंतरराष्ट्रीय समन्वय था, न कि किसी सांस्कृतिक परंपरा का अवमूल्यन।

यह सही है कि राष्ट्रीय पंचांग को ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ तालमेल रखने के लिए सौर आधार पर व्यवस्थित किया गया। वर्ष का आरंभ, महीनों की लंबाई और तिथियों की स्थिरता इस दृष्टि से निर्धारित की गई कि प्रशासनिक कार्य, वैज्ञानिक गणना और वैश्विक संचार में सुविधा हो। यह भी महत्वपूर्ण है कि राष्ट्रीय कैलेंडर और पारंपरिक पंचांग के उद्देश्य भिन्न होते हैं।

इतिहास में कभी भी एक ही कालगणना का वर्चस्व नहीं रहा। मुगल काल में प्रशासनिक कार्यों में हिजरी संवत का उपयोग होता था, जबकि समाज में विक्रम संवत और अन्य पंचांग समानांतर रूप से चलते रहे। ब्रिटिश शासन ने प्रशासनिक सुविधा के लिए ग्रेगोरियन कैलेंडर अपनाया, किंतु इससे पारंपरिक प्रणालियाँ समाप्त नहीं हुईं। आज भी इथियोपिया जैसे देश अपने पारंपरिक कैलेंडर का उपयोग करते हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय कार्यों के लिए ग्रेगोरियन प्रणाली अपनाते हैं।

लेखक द्वारा विक्रम संवत को केवल 'हिंदू पंचांग' कहना पूर्णतः उपयुक्त नहीं है। यह एक व्यापक भारतीय कालगणना परंपरा का हिस्सा है, जिसकी आधारभूमि खगोलीय और गणितीय गणनाओं में निहित है। डॉ. सम्पूर्णानंद ने भी भारतीय पंचांग को एक विकसित खगोलीय प्रणाली माना है। साथ ही उन्होंने स्वीकार किया कि विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित पंचांगों के कारण तिथियों में असंगति उत्पन्न होती है, जिसे दूर करने के लिए सुधार आवश्यक है। यह दृष्टिकोण दर्शाता है कि भारतीय परंपरा और आधुनिक वैज्ञानिकता परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं।

विक्रम संवत् और शक संवत में तीज, त्योहार, विवाह आदि के मुहूर्त एक ही तिथि पर पड़ते हैं। इनमें मुख्य अंतर केवल 'वर्ष' की गिनती का है। विक्रम संवत् की व्यापक लोकमान्यता केवल तिथि-गणना का विषय नहीं, बल्कि गहरे सांस्कृतिक, धार्मिक और भौगोलिक आधारों तथा राजा विक्रमादित्य की गौरवपूर्ण छवि पर टिकी है। उत्तर, पश्चिम और मध्य भारत में अधिकांश त्योहार और विवाह-मुहूर्त पारंपरिक पंचांगों से विक्रम संवत के अनुसार ही निर्धारित होते हैं, जिससे यह जनजीवन से स्वाभाविक रूप से जुड़ गया है। यद्यपि विभिन्न क्षेत्रों में विविधताएँ हैं–उत्तर भारत में वर्षारंभ चैत्र से होता है, गुजरात में दीपावली के बाद कार्तिक से; उत्तर में महीना पूर्णिमा से शुरू होता है और इसे पूर्णिमांत पंचांग कहा जाता है, जबकि गुजरात व महाराष्ट्र में अमांत अर्थात अमावस्या से माह शुरू होता है–इससे माह के नामों में लगभग 15 दिन का अंतर रहता है, किंतु तीज-त्योहारों की वास्तविक तिथियाँ समान रहती हैं। शक संवत् का पारंपरिक सामाजिक उपयोग अपेक्षाकृत कम व्यापक रहा है ।

विक्रम संवत को 'अस्पृश्य' कहना भावुक अभिव्यक्ति हो सकती है, किंतु सरकार द्वारा इसके उपयोग पर कोई वैधानिक रोक नहीं है। भारत की विविधता में अनेक पंचांगों का सह-अस्तित्व संभव है और यही इसकी विशेषता भी है।

अंततः यह स्पष्ट है कि भारतीय कालगणना की परंपरा बहुआयामी और समन्वयकारी रही है, जिसमें सांस्कृतिक मान्यता और ऐतिहासिक प्रमाण दोनों के अपने-अपने स्थान हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी परंपराओं का सम्मान करते हुए उन्हें प्रमाण और तर्क की कसौटी पर परखें। इतिहास का उद्देश्य केवल गौरवगान नहीं, बल्कि सत्य की खोज है–और यही दृष्टिकोण इस बहस को संतुलित और सार्थक दिशा दे सकता है।

भगवान परशुराम जन्मोत्सव पर 151 जोड़े करेंगे भगवान धारेश्वर में रुद्राभिषेक

गोपूजन से होगी भगवान परशुराम जन्मोत्सव की शुरुआत

धार। सर्व ब्राह्मण समाज जिला धार की बैठक संपन्न हुई। बैठक में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भगवान श्री परशुराम जन्मोत्सव समारोह 19 अप्रैल रविवार को धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर सर्व ब्राहण समाज धार जिलाध्यक्ष पं. विश्वास पाण्डे, जिला कार्यवाहक अध्यक्ष पं. धर्मेन्द्र जोशी, परशुराम जन्मोत्सव यात्रा प्रभारी पं. ऋषि भार्गव, जिला संयोजक अशोक शास्त्री, वरिष्ठ मार्गदर्शक, पं. ज्ञानेन्द्र त्रिपाठी,उपाध्यक्ष गोटू शुक्ला, सचिव प्रवीण शर्मा, युवा जिलाध्यक्ष प्रशांत रावल, युवा इकाई नगर अध्यक्ष चेतन शर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे। बैठक में लिए गए निर्णयानुसार 19अप्रैल को सुबह 9 बजे धारेश्वर में भगवान परशुराम का रुद्राभिषेक 151 जोड़े द्वारा किया जाएगा। वहीं शाम 5 बजे धारेश्वर मंदिर प्रांगण में सर्वधर्म समभाव को प्रतिपादित करते हुए विभिन्न समाजजनों द्वारा महाआरती की जाएगी। पश्चात भगवान परशुराम की भव्य शोभायात्रा शहर के प्रमुख स्थानों से होकर लालबाग परिसर में संपन्न होगी। जहां प्रसादी का आयोजन होगा।

इसी प्रकार 18 अप्रैल को गोपूजन से भगवान परशुराम जन्मोत्सव की शुरुआत की जाएगी। प्रातः 9 बजे प्रकृति वात्सल्य गौशाला 34 वी बटालियन धार में समाजजनों द्वारा गौपूजन और गौ आरती की जाएगी। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा । बैठक में सर्वानुमति से विभिन्न ब्राह्मण समाज संगठनों से समन्वय स्थापित कर कार्यक्रम की भव्यता बढ़ाने की जिम्मेदारी भी दी गयी है।

बैठक में समाज के वरिष्ठ प्रेम रावल,संतोष पुरोहित नारायण जोशी, मोहन जोशी, निलेश जोशी,कैलाश तिवारी, डॉ अभिषेक वैद्य, अजय जोशी अभिषेक चतुर्वेदी, भगवती जोशी, अमित मंडलोई, सुरेश तिवारी, अखिलेश शर्मा, धीरज बाजपेई, राजेश जोशी, जितेंद्र पण्डया, विजय दवे, मनीष भार्गव, पुनीत तिवारी, सूर्य दुबे, धर्मेंद्र शर्मा,राजा शर्मा, दीपक शर्मा, संजय शर्मा, नमन रावल, वरदान तिवारी, जगदीश जोशी, मनोज शर्मा सहित बड़ी संख्या में ब्राह्मण समाज जन उपस्थित थे। बैठक के अंत में यूजीसी के विरुद्ध एक निंदा प्रस्ताव भी पास किया गया। जानकारी समाज के वरिष्ठ ज्ञानेंद्र त्रिपाठी द्वारा दी गई।

'जल गंगा संवर्धन अभियान '

पलकमती नदी में करीबन 10 नालों का गंदा पानी मिलता है

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत विगत दिवस नगर पंचायत परिषद सहित जनप्रतिनिधियों ने पलकमती नदी के रिपटे के पास कार्यक्रम का आयोजन किया था। जिसमें कार्यक्रम स्थल की सफाई करके वाहवाही बटोरी गई थी। जिसमें कुछ जनप्रतिनिधि सफाई के स्थान की सफाई झाड़ू के साथ करते दिख रहे थे। लेकिन इस स्थल से करीबन 30,35 कदम की दूरी पर कचरे का ढेर लगा हुआ था एवं इस समाचार लिखे जाने तक कचरे का ढेर लगा हुआ है। यदि सफाई ही करने थी ।तो चित्र में साझा किए कचरे के जले हुए कचरे के ढेर की करनी थी। लेकिन नहीं। चित्र में सफाई स्थान एवं थोड़ी दूरी पर पड़ा कचरा स्पष्ट दिखाई दे रहा है।वहीं थोड़ी देर के लिए पलकमती नदी पर जेसीबी मशीन से कुल स्थान समतल करावा दिया गया।अब हम आते हैं प्रदेश सरकार के मुखिया मुख्यमंत्री मोहन यादव के द्वारा जून तक चलने वाले जल गंगा संवर्धन अभियान की । इसके लिए हम करते हैं पलकमती नदी की बात। कभी यह विख्यात नदी नगरवासियों के लिए जीवनदायिनी थी। इस नदी के तीरे धार्मिक भावनाओं से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। जिसमें डोल

ग्यारस पर भगवान् को जलाभिषेक होता था। वहीं भुजरियो एवं ज्वारों का विर्सजन यहीं श्रद्धालु करते थे। इस नगर के मध्य बहनें वाली नदी को अमेरिका की विकीपीडिया ने सबसे उत्कृष्ट सुन्दर पलकमती नदी होना का उल्लेख किया था। लेकिन धीरे-धीरे नगर की जनसंख्या में इजाफा हुआ। वैसे वैसे पलकमती नदी में भी शने शने गंदे नालों का पानी पलकमती नदी में जाता रहा। लेकिन जनप्रतिनिधियों ने पलकमती नदी की सेहत पर ध्यान देना उचित नहीं समझा। वर्तमान में पलकमती नदी में करीबन 10 से अधिक गंदे नालों का पानी मिल रहा है। जिससे नदी में हरी हरी काई ही दिखाई दे रही है। वहीं उसके साथ बहते कचरे ने नदी को बदबूदार बना दिया है। वहीं पलकमती नदी सफाई अभियानों को लेकर नगर पंचायत परिषद के सभी अध्यक्षीय कार्यकाल में सफाई ने नाम पर पलकमती नदी का रेता,बजरा निकाल कर दोहन ही किया गया था । जिसका उपयोग सत्ताधारियों ने अपनी-अपनी जरूरत के समयबार बार किया गया था। यह बात सोहागपुर की जनता जनार्दन से कोई छिपी नहीं है। वर्तमान में नगर पंचायत परिषद को नगर के समस्त गंदे पानी के नालों को पलकमती नदी में न मिलने के रास्तों को खोजना होगा। यही पलकमती नदी को साबरमती बनाने के लिए एक क़दम होगा।इसके लिए नगर पंचायत परिषद को नगरीय प्रशासन विभाग को योजना बनवाकर प्रेषित करके आवश्यक कार्यवाही करनी चाहिए। ताकि पलकमती नदी पुनः अपने स्वरूप में नगरवासियों को दिखाई दे। अन्यथा वहीं ढाक के दो पात वाली कहावत सिद्ध होकर पलकमती नदी की सफाई हो जाएगी।हालांकि क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह के माध्यम से पलकमती नदी पर घाट एवं स्टाप डेम निर्माण कार्य प्रगति पर है।

हर्ष फायरिंग के मामले में निष्पक्ष जांच की मांग, ज्ञापन सौंपा

सोहागपुर। शिवम शर्मा निवासी ग्राम जमुनिया के द्वारा पुलिस अधीक्षक को झूठा आवेदन प्रस्तुत कर अभयपुरी गोस्वामी पिता कमलेशपुरी गोस्वामी निवासी सेमरी हरचंद के खिलाफ पुरानी रंजिश और आपसी विवाद के चलते झूठा

मुकदमा दायर करने के लिये आवेदन दिया गया था । इस आशय का ज्ञापन अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी को युवकों ने सौंपा। इस ज्ञापन में आरोप लगाया गया है कि शिवम शर्मा आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है

उसके खिलाफ कई अपराध पंजीबद्ध है। शिवम शर्मा ने झूठा आवेदन देकर श्री गोस्वामी को फंसाया है। इस मामले में नागरिकों ने निष्पक्ष जांच की मांग की है। इस अवसर पर ज्ञापन का वाचन भी किया गया।

'पलकमती नदी पुल' ज्वाईंट खुलने से धम्म की आवाज से निकलते हैं वाहन

सोहागपुर। नर्मदापुरम पिपरिया राज्य मार्ग 22 प्रदेश का महत्वपूर्ण मार्ग है। इसी बीच में सोहागपुर पलकमती नदी का महत्वपूर्ण पुल भी पड़ता है। प्रदेश के मंत्री एवं आला अधिकारी इसी रास्ते से विश्व प्रसिद्ध पचमढ़ी को जाते। वहीं इस नगर की स्थिति ऐसी है कि 15वार्डो के नगर में आधे एक तो दूसरी तरफ आने वार्ड आते हैं। जिसमें सोहागपुर के वाशिंदे निवास करते हैं। वहीं एक तरफ बाजार सरकारी दफ्तर, पुलिस थाना, तो दूसरी तरफ बैंकों एवं स्कूल, महाविद्यालय आता है। इस रास्ते में प्रतिदिन इस ओर से उस पार जाते रहते हैं। वहीं प्रतिदिन सैकड़ों वाहन एवं मार वाहक भी इसी रास्ते से निकलते हैं। लेकिन जैसी ही पलकमती पुल से गुजरते हैं।तभी सभी पलकमती नदी पुल के खुले स्थान से धम्म की आवाज के साथ वाहन चालकों को भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा नर्मदापुरम से पिपरिया का रास्ते जाते समय दिखाई देता है गोलाकार गड्ढा।यह गड्ढा दो पहिया वाहनों के लिए खतरनाक है। जिससे दुर्घटना की संभावना बनी रहती है।इस दो पहिया वाहनों एवं चार पहिया वाहनों के पुर्जे भी टूट जाते हैं। नागरिकों ने इस महत्वपूर्ण मार्ग की मरम्मत करने की मांग की है।

नगर पंचायत को नहीं दिख रहे गड्ढे

सोहागपुर। इस नवीन नगर पंचायत परिषद को लगता है। जनता जनार्दन के ज्वलंत मुद्दों दिखाई नहीं देते हैं। सोहागपुर रेल्वे स्टेशन रोड स्थित स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सामने मालवीय काम्प्लेक्स के सामने कई आन लाइन दुकानें हैं।इसी रास्ते से नागरिकों का अधिकांश आवागमन है। इस व्यस्ततम रास्ते में सड़क का एप्रोच रोड गड्ढों में तब्दील हो चुका है। यहां लगभग प्रतिदिन दो पहिया वाहन सिलिप हो जाते हैं। इसका कारण यह है कि यह रास्ता सिलोप में बना हुआ है। ऊपर से रास्ता ऊंचा है।जो नीचे की तरफ काफी निचाई वाली सड़क है। हाल की बैमौसम बरसात नै रही सही कसर पूरी कर दी।उसकी गिट्टी उखड़ गई है।

मुंह जुबानी हर साल का कलेंडर याद रखने वाले दिनेश खुराना ने दुनिया को कहा अलविदा

कैंसर की बीमारी के चलते हुआ निधन, गंज में हुई अंत्येष्टि

बैतूल। सालों के कैलेंडर मुंह जबानी याद रखने वाले बैतूल के समाजसेवी एवं व्यवसायी दिनेश खुराना ने शनिवार को दुनिया को अलविदा कह दिया। श्री खुराना अपने आप मे कई खूबी रखते थे। उन्हें किसी भी महीने की तारीख व दिन को पता करने के लिए कलेंडर पलटने की जरूरत नहीं होती थी। वे पलक झपकते ही सबकुछ बता देते थे। यहां तक देश विदेश में

होने वाली प्रमुख घटनाएं तक उन्हें तारीख और दिन के साथ याद रहती थी। दोस्तों की शादी से लेकर उनके बच्चों के जन्मदिन तक याद थे। उनकी इस याददाश्त के सभी कायल थे। राजनीतिक क्षेत्र में भी उनका दखल था। स्वर्गीय विनोद डागाजी कब पहली बार विधायक बने थे और मुन्नी भैया यानी विजय कुमार खंडेलवाल कब पहली बार सांसद बने, इसकी तारीख और दिन भी उन्हें याद था। कई बार ऐसे मौके भी आए, जब उन्होंने अपने दोस्तों को ही उनकी शादी की तारीख और दिन बताकर चौंका दिया था। अपनी इस याददाश्त की बदौलत बैतूल शहर में वे प्रसिद्धि बटोर चुके थे, लेकिन वह अब इस दुनिया में नहीं है । उन्होंने एक दिन मुझ से अपनी इन खूबियों पर चर्चा करते हुए, ये बात बताई थी। उस समय मैने इनका एक समाचार बनाया था। उनका कहना था कि व्यवसाय से जुड़े होने के कारण हर बात उन्हें याद रखनी पड़ती थी, इसलिए आदत में आ गया और कलेंडर को याद रखने की एक ट्रिक है, इसकी बदौलत वे दिन और तारीख बता देते हैं। डॉक्टर भी उनकी इस याददाश्त को लेकर कहते थे कि किसी व्यक्ति में याद रखने की प्रवत्ति तेज होती है। इसके कारण उन्हें सबकुछ याद रहता है। बहरहाल उनकी दुनिया से विदाई के बावजूद उन्हें इस बहाने हमेशा याद किया जाता रहेगा। उल्लेखनीय है कि वे बैतूल के व्यवसायी स्वर्गीय देशराज खुराना के बड़े बेटे थे। करीब दो माह पहले आंतों के कैंसर का पता चला। पाढर के कैंसर अस्पताल में वे भर्ती थे। डाक्टर के व्दारा दवाई का कोई असर न होने की सलाह पर उन्हें शनिवार दोपहर बाद घर बैतूल लेकर आ गए थे, जहां उनका निधन हो गया। कोठीबाजार राम मंदिर किराना दुकान के व्यवसायी दिनेश खुराना अपने पीछे पत्नी सुनीता, बेटा रोहित और बेटी साक्षी को छोड़ गए।

साधक जब तक देहाभिमान रूपी समुद्र नहीं पार करेगा तब तक सीता दर्शन दुर्लभ हैं : पं. निर्मल कुमार शुक्ल

श्री हनुमत कथा महोत्सव पंचम दिवस

बैतूल। भगवान श्री राम ने वानरों को सीता का पता लगाने के लिए भेजा और ए वानर समुद्र किनारे तक तो पहुंच गये किन्तु संपाती ने बताया कि सीता सौ योजन सागर के उस पार अशोक वाटिका में बैठी हैं जो समुद्र पार कर जाएगा उसे उनका दर्शन हो जाएगा। सारे वानरों ने अपने अपने बल का वर्णन किया किंतु सौ योजन तक जाने में कोई समर्थ नहीं हो सका। युवराज अंगद ने घोषणा किया मैं सागर पार तो जा सकता हूं किन्तु वापस लौटने में संदेह है।वस्तुतः समारा अभिमान ही सागर है और जिसमें मैं पना भरा हुआ है वह अभिमान सागर को नहीं पार कर सकता। इन वानरों ने निज निज बल सब काहू भाखा। अपने अपने बल का वर्णन किया अपने बल से कोई अभिमान सागर कैसे पार करेगा यह अभिमान समुद्र तो भगवान के बल और उनकी कृपा से ही पार किया जा सकता है। अंत में जामवंत ने हनुमान को जगाया जिसने अपने मान अभिमान और अपमान से मुक्ति पा लिया हो वही हनुमान है। हनुमान जी जब भगवान श्री राम को हृदय में धारण करके लंका की ओर प्रस्थान करते हैं तो मार्ग में उनके सामने चार बाधाएं आई। वस्तुतः साधना के मार्ग में यही चार बाधाएं हर साधक के सामने आती है जो इन्हें पार कर जाता है उसे ही आदिशक्ति सीता का

दर्शन होता है। पहली बाधा के रूप में मैनाक पर्वत आया यह स्वर्ण का पर्वत है और हनुमान के पिता पवन देव का मित्र है।जब इंद्र ने पर्वतों के पंख काटने शुरू किए तो पवन देव ने इसे उड़ाकर सागर के गहरे जल में छिपा दिया। उसने पिता का ऋण चुकाने के लिए इन्हें पीठ पर बिठाना चाहा किन्तु हनुमान ने प्रणाम करके उसे विदा कर प्रकार लोभ पर विजय प्राप्त किया। दूसरी बाधा के रूप में सुरसा आई क्योंकि हनुमान ने लोभ के स्वरूप मैनाक पर विजय पाया है।

सोहागपुर थाने की कमान राहुल रायकवार को, उषा मरावी पहुंचेगी नर्मदापुरम

सोहागपुर। पुलिस अधीक्षक श्री साईं कृष्ण थोटा ने नर्मदापुरम जिले में पुलिस विभाग में फेर-बदल किया है। जिसमें सोहागपुर नगर निरीक्षक उषा मरावी को रक्षित केन्द्र नर्मदापुरम पुलिस अधीक्षक का रीडर नियुक्त किया है। वहीं कावा निरीक्षक राहुल रायकवार अजाक नर्मदापुरम से सोहागपुर नगर निरीक्षक की कमान दी है। सोहागपुर पुलिस थाने के अंर्तगत ग्राम शोभापुर चौकी प्रभारी सुरेश चौहान को इटारसी एवं उप निरीक्षक राहुल पटेल को इटारसी से ग्राम शोभापुर चौकी प्रभारी के पद पर भेजा है। वहीं सोहागपुर पुलिस थाने के तहत ग्राम सेमरी हरचंद के चौकी प्रभारी उप निरीक्षक आकाशदीप पचाया को थाना माखननगर एवं उप निरीक्षक विवेक यादव को ग्राम सेमरी हरचंद चौकी प्रभारी नियुक्त किया है।

नर्मदापुरम कमिश्नर ने किया तहसील कार्यालय का निरीक्षण

सोहागपुर। नर्मदापुरम कमिश्नर श्री कृष्ण गोपाल तिवारी ने सोहागपुर तहसील कार्यालय का आकस्मिक निरीक्षण किया। इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी तहसीलदार आर एस झरबड़े आदि उपस्थित थे। श्री तिवारी ने तहसील कार्यालय में सबसे पहले नाजरात शाखा में

निरीक्षण के नाजिर से बिलिंग प्रक्रिया, सेलरी भुगतान की प्रक्रिया का निरीक्षण किया। वहीं तहसील नाजिर रामविलास अहिरवार क़ो कंप्यूटर में दक्ष होने हेतु निर्देश दिए । इसके उपरांत कानूनगो शाखा में राहुल साहू बाबू से कानून गो सम्बंधित कार्य क़ो देखा एवं जांचा।तहसीलदार कार्मेयालय में प्रकरणों का निरीक्षण किया । अंत में एसडीएम कार्यालय में ई आफिस के सफल क्रियान्वयन क़ो देखा। एवं नजूल संबंधी प्रकरणों की जांच की ।

सर्व ब्राह्मण समाज युवा संगठन धार नगर के पदाधिकारियों की घोषणा

धार। सर्व ब्राहण समाज धार जिलाध्यक्ष पं. विश्वास पाण्डे, जिला कार्यवाहक अध्यक्ष पं. धर्मेन्द्र जोशी, परशुराम जन्मोत्सव यात्रा प्रभारी पं. ऋषि भार्गव, वरिष्ठ मार्गदर्शक, पं. ज्ञानेन्द्र त्रिपाठी, जिला संयोजक अशोक शास्त्री, सचिव प्रवीण शर्मा, युवा जिलाध्यक्ष प्रशांत रावल की अनुशंसा पर सर्व ब्राह्मण समाज युवा संगठन के नगर अध्यक्ष चेतन शर्मा ने सर्वब्राहण समाज युवा संगठन धार नगर के पदाधिकारियों की घोषणा की ।

कार्यकारी अध्यक्ष पं सूर्या दुबे, उपाध्यक्ष पं अनूप त्रिवेदी, यश तिवारी, राजा शर्मा,अक्षत शर्मा,यश उपाध्याय, लकी शर्मा,आदर्श चौबे,कार्तिक शर्मा, हर्ष शर्मा, आदित्य जोशी, पियुष मंडलोई, अंकुर शुक्ला, महामंत्री पं अश्मित शर्मा एवं शिवम शर्मा, मंत्री पं अक्षत उपाध्याय,मोहित शास्त्री,समर्थ उपाध्याय, प्रिंस पंचोली, कनिष्क रावल, स्वप्निल भार्गव, उत्तम पांडे, स्वज्ञ व्यास, गोराख भार्गव, अथर्व प्रधान, मन दुबे, मृत्युंजय व्यास,भीम शर्मा,कोषाध्यक्ष पं आंचल व्यास, सह कोषाध्यक्ष हर्ष शर्मा, सचिव चेरी अवस्थी, सह सचिव अवी पांडे, कार्यालय मंत्री अवी शर्मा, सह कार्यालय मंत्री मयूर पांडे, विधि प्रकोष्ठ रूद्र शर्मा,पवन तिवारी, प्रवक्ता प्रथम तिवारी,मीडिया प्रभारी अमन तिवारी, सह मिडिया काशी दुबे ,सोशल मीडिया पीयूष शर्मा, अक्षत त्रिवेदी, प्रचार प्रसार मंत्री किशन द्विवेदी को नियुक्त किया गया।

सभी एसडीएम जिले में उपलब्ध संसाधनों का समुचित आकलन कर नरवाई प्रबंधन सुनिश्चित करें : कलेक्टर सोनिया मीना

सोहागपुर। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना ने रविवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिले में नरवाई प्रबंधन, गेहूं उपार्जन कार्य एवं एलपीजी आपूर्ति व्यवस्था की विस्तृत समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक सुधारात्मक निर्देश दिए। इस बैठक में कलेक्टर ने नरवाई प्रबंधन हेतु तैयार कार्ययोजनाओं की अनुविभागवार समीक्षा की। आपने गेहूं कटाई के अनुपात में उत्पन्न होने वाले फसल अवशेषों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि किसानों को नरवाई न जलाने के लिए जागरूक किया जाए । इसके अलावा आधुनिक कृषि तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा दिया जाए। आपने सभी एसडीएम नर्मदापुरम को निर्देशित किया कि अनुविभाग स्तर पर सुस्पष्ट कार्ययोजना तैयार करें एवं क्षेत्र में उपलब्ध गौशालाओं की भूसा भंडारण क्षमता का आकलन कर नरवाई से भूसा बनाने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार एसडीएम पिपरिया को भी स्पष्ट कार्ययोजना तैयार कर किसानों को जागरूक करने तथा नरवाई प्रबंधन के अधिक से अधिक विकल्प

तलाशने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर ने फसल अवशेष प्रबंधन हेतु आवश्यक कृषि यंत्रों की उपलब्धता का आकलन करने तथा पब्लिक, प्राइवेट एवं शासकीय समन्वय से प्रभावी प्रबंधन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।गेहूं उपार्जन की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने निर्देशित किया कि सभी अनुविभागीय अधिकारी रकबा सत्यापन में किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतें। साथ ही उन्होंने यह निर्देश भी दिए की प्राप्त उपार्जन केंद्र के प्रस्तावों का अनुमोदन करवाते हुए संबंधित समितियों का प्रशिक्षण भी शीघ्र करवाया जाए। जिन उपार्जन केंद्रों के प्रस्ताव को अंतिम रूप नही दिया गया है वे भी शीघ्र प्रस्ताव प्रेषित कर अनुमोदन करवाए। कलेक्टर सोनिया मीना ने जिले में एलपीजी की सतत आपूर्ति सुनिश्चित किए जाने के लिए समस्त अनुविभागीय अधिकारियों को अधिक मुस्तैदी के साथ कार्य करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने निर्देशित किया कि व्यवसायिक संस्थानों जैसे होटल रिसोर्ट आदि स्थान पर निरंतर जांच करें तथा यह सुनिश्चित करें कि ऐसे किसी भी स्थान पर घरेलू सिलेंडरों का उपयोग न किया जा रहा हो। इस दौरान कलेक्टर सुश्री मीना ने यह निर्देश भी दिए कि सभी संबंधित अधिकारी एलपीजी आपूर्तिकर्ता संस्थाओं के स्टॉक तथा सप्लाई चेन की भी निरंतर निगरानी करें। सर्वर समस्या के कारण नागरिकों में किसी भी प्रकार की भ्रांति की स्थिति न उत्पन्न हो यह भी सुनिश्चित करे। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को सतर्कता एवं समन्वय के साथ कार्य करते हुए व्यवस्थाओं को सुचारू बनाए रखने के निर्देश दिए।

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर के निर्देशन में निरंतर सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण में अग्रणी है रायसेन जिला

रायसेन,(निप्र)। राज्य स्तर से सीएम हेल्पलाइन शिकायतों के निराकरण में माह फरवरी 2026 की ग्रेडिंग गत दिवस जारी की गई, जिसमें रायसेन जिले ने 87.96 प्रतिशत वेटेज स्कोर के साथ पुनः प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा के निर्देशन में जिले में सीएम हेल्पलाईन शिकायतों का अंतिम और संतुष्टिपूर्ण निराकरण सुनिश्चित किया जा रहा है तथा विगत एक वर्ष से रायसेन जिला निरंतर सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण में अग्रणी बना हुआ है। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सभी अधिकारियों के प्रयासों और मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि यहां रुकना नहीं है। सभी अधिकारी और अधिक मेहनत करें तथा जो सीएम हेल्पलाइन शेष हैं उनका भी प्राथमिकता से अंतिम निराकरण सुनिश्चित कराएं। उन्होंने बी और सी ग्रेड प्राप्त करने वाले विभागों के अधिकारियों को स्थिति में सुधार करने तथा डी ग्रेड वाले विभागों को कड़ी मेहनत और समयबद्ध निराकरण के लिए सख्त हिदायत दी है। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा नियमित रूप से विभागवार और अधिकारीवार सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण की गहन समीक्षा और सतत् मॉनीटरिंग की जा रही है। साथ ही अधिकारियों को गंभीरता तथा व्यवहारिक दृष्टिकोण के साथ सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण हेतु प्रेरित किया जा रहा है। जिसके निरंतर सकारात्मक परिणाम परिलक्षित हो रहे हैं।

दीवानगंज स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का सीएमएचओ ने किया निरीक्षण

रायसेन,(निप्र)। जिले में दीवानगंज स्थित शासकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का सीएमएचओ डॉ एचएन मांडरे द्वारा आकस्मिक निरीक्षण किया गया। इस दौरान विभिन्न कक्षों में जाकर निरीक्षण किया। साथ ही ओपीडी रजिस्टर, दवाओं की उपलब्धता, प्रतिदिन औसतन आने वाले मरीजों की संख्या, उपचार सुविधा आदि की जानकारी लेते हुए मरीजों को बेहतर और त्वरित स्वास्थ्य सेवाओं उपलब्ध कराने हेतु निर्देशित किया।

गुरोद के सगड़ नदी क्षेत्र में रेत खनन में प्रयुक्त सामग्री लावारिस स्थिति में मिली

विदिशा,(निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के द्वारा निर्देश दिए गए हैं कि जिले में कहीं भी अवैध उत्खनन ना होने पाए। प्राप्त निर्देशों के अनुपालन में नदी क्षेत्र के पास भ्रमण निरीक्षण का कार्य अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है। इसी क्रम में आज नटेरन तहसील क्षेत्र भ्रमण के दौरान राजस्व विभाग की टीम द्वारा ग्राम गुरोद के पास सगड़ नदी क्षेत्र में रेत खनन में प्रयुक्त सामग्री जप्त करने की कार्यवाही की गई है। तहसीलदार श्री आनंद कुमार जैन ने बताया कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान ग्राम गुरोद के सगड़ नदी क्षेत्र में रेत निकालने का सामान जिनमें दो इंजन , एक छन्ना, दो फुटबॉल हरे रंग की, 4 इंची 1 फुटबॉल हरे रंग की, 3 इंची 12 काले रंग के पाइप लावारिस स्थिति में पाए गए थे, जिन्हें टीम द्वारा जप्त कर नटेरन थाने में सुरक्षार्थ रखवाया गया है। इस कार्यवाही के दौरान थाना प्रभारी भी मौजूद रहे। क्षेत्र में अवैध उत्खनन पाए जाने पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

विश्व जल दिवस पर जल गंगा संवर्धन अभियान 2026 के तहत दिया जल संरक्षण का संदेश

जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीणों को पर्यावरण संरक्षण की दिलाई शपथ

बैतूल ,(निप्र)। विश्व जल दिवस के उपलक्ष्य में मप्र जन अभियान परिषद द्वारा आयोजित ÷जल गंगा संवर्धन अभियान 2026 जल शक्ति से नव भक्ति कार्यक्रम प्रथम चरण÷के अंतर्गत जिले के सभी विकासखंडों में मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नगर के मार्गदर्शन में जल संरक्षण गतिविधियां आयोजित की गईं।

जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने बताया कि बैतूल विकासखंड के प्रस्फुटन ग्राम किला खण्डरा स्थित जटाशंकर महादेव मंदिर परिसर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सीएमसीएलडीपी के विद्यार्थियों की कक्षा भी आयोजित हुई। विद्यार्थियों द्वारा ध्यान, पूजन, मानस पाठ, संकीर्तन एवं आरती-अर्चन किया गया तथा जल स्रोत के समीप मानव श्रृंखला बनाकर सभी को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई। इसके साथ ही ग्राम किला खण्डरा की प्राचीन बावड़ी का निरीक्षण कराया गया। बावड़ी के जल स्रोत का पूजन परामर्शदाता श्री आशीष कोकने द्वारा किया गया तथा आगामी माह में बावड़ी स्वच्छता अभियान चलाने के लिए कार्ययोजना भी तैयार की गई।

ग्राम दुराला मढदेव में जल संरचनाओं के संरक्षण के लिए चलाया अभियान

चिचोली विकासखंड के ग्राम दुराला मढदेव में जल संरचनाओं के संरक्षण के लिए वृहद सफाई अभियान चलाया गया। इस दौरान स्वच्छता, भक्ति एवं सामाजिक समरसता का अनूठा संगम देखने को मिला।

ग्राम झिरनादादु में अमृत सरोवर की साफ- सफाई की

मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद विकास खंड भीमपुर की नवांकुर संस्था नव एकलव्य मानव सेवा समिति खुर्दा के द्वारा विश्व जल दिवस पर ग्राम पंचायत बटकी के ग्राम झिरनादादु में बने अमृत सरोवर की साफ- सफाई की गई। जिसमें ग्राम पंचायत बटकी के सरपंच ,एवं पंचों का विशेष सहयोग रहा। अन्य विकासखंडों में भी सीएमसीएलडीपी कक्षाओं के माध्यम से जल संगोष्ठियों और रैली का आयोजन कर जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाई गई। मुलताई में भी जलस्त्रोत के पास श्रमदान किया गया। इस अभियान के माध्यम से जल संरक्षण, सामाजिक जागरूकता एवं सामुदायिक सहभागिता का सशक्त संदेश दिया गया।

नवांकुर संस्थाओं, प्रस्फुटन समितियों, सीएमसीएलडीपी के छात्र-छात्राओं एवं ग्राम पंचायत प्रतिनिधियों ने मिलकर तालाब, नदी एवं कुओं की व्यापक सफाई की तथा वृक्ष एवं जल पूजन कर प्रकृति संरक्षण का संकल्प लिया।

ब्लॉक समन्वयक श्री राजू मांडवे ने अभियान की विस्तृत जानकारी दी। इसी प्रकार घोड़ाडोंगरी विकासखंड के पचामा ग्राम में प्रस्फुटन समिति एवं ग्रामीणों के सहयोग से जल स्त्रोतों हैंडपंप एवं आसपास क्षेत्र की साफ-सफाई की गई तथा जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीणों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई।

ऑनलाइन शॉपिंग का रिफंड लेने गूगल पर सर्च किया नंबर

लिंक पर क्लिक करते खाते से उड़े 99 हजार रुपए

नर्मदापुरम,(निप्र)। नर्मदापुरम के रसूलिया इलाके में ऑनलाइन शॉपिंग के बाद रिफंड पाने के चक्कर में एक महिला 99 हजार रुपए की साइबर ठगी का शिकार हो गई। महिला ने गूगल से कंपनी का कस्टमर केयर नंबर सर्च कर कॉल किया था, जिसके बाद जालसाजों ने रिफंड के नाम पर एक लिंक भेजी और उस पर क्लिक करते ही खाते से रकम कट गई। शिकायत मिलने के बाद देहात थाना पुलिस ने दो मोबाइल नंबर धारकों के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। देहात थाने से मिली जानकारी के अनुसार, रसूलिया निवासी रुबी फौजदार ने एक ऑनलाइन कंपनी से कपड़े ऑर्डर किए थे। जब कपड़े नहीं आए, तो उन्होंने अपने पैसे वापस (रिफंड) लेने के लिए गूगल पर सर्च कर कस्टमर केयर का नंबर निकाला।

रिफंड के लिए भेजी लिंक, क्लिक करते ही कटे पैसे

रुबी ने जब सर्च किए गए नंबर पर कॉल किया, तो दूसरी तरफ बात कर रहे जालसाजों ने कहा कि वे पैसे वापस भेज देंगे, इसके लिए एक लिंक दे रहे हैं। जैसे ही रुबी ने जालसाजों द्वारा भेजी गई लिंक पर क्लिक किया, उनके बैंक खाते से 99 हजार रुपए कट गए।

देहात पुलिस ने 2 मोबाइल नंबर धारकों पर दर्ज की एफआईआर

ठगी का अहसास होने पर पीड़िता ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। देहात थाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर मोबाइल नंबर 8282955076 और 8982011298 के धारकों पर धोखाधड़ी करने का केस दर्ज किया है।

सायबर पुलिस की चेतावनी- सर्च इंजन पर मिलते हैं फर्जी नंबर

सायबर पुलिस के अनुसार, ऑनलाइन साइट्स या गूगल सर्च में कई बार कंपनियों के कस्टमर केयर के नंबर फर्जी और धोखाधड़ी करने वाले होते हैं। इस मामले में भी ऐसा ही हुआ है। महिला ने जहां से कपड़े बुलाए थे, वो सही कंपनी थी, लेकिन रिफंड के लिए गूगल से जो नंबर निकालकर बात की गई, वह जालसाजों का था। पुलिस मामले की विस्तृत जांच कर रही है।

सीहोर जिले में नरवाई जलाने पर कलेक्टर ने लगाया प्रतिबंध, नरवाई जलाने पर होगी कार्यवाही

सीहोर,(निप्र)। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्री बालागुरु के. द्वारा सीहोर जिले में खेतों में नरवाई जलाने पर प्रतिबंध लगाया गया है। जारी आदेशानुसार फसल कटाई के बाद अगली फसल की तैयारी के लिए कुछ किसानों द्वारा खेतों में आग लगाकर नरवाई नष्ट की जाती है, जिससे हानिकारक गैसों का उत्सर्जन होता है और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही इससे मिट्टी की उर्वरता भी कम होती है, सूक्ष्म जीव नष्ट होते हैं, जनसंपत्ति और प्राकृतिक वनस्पति को नुकसान पहुंचता है तथा आगजनी की घटनाओं की आशंका भी बनी रहती है। जिले में रोटावेटर जैसे वैकल्पिक साधन उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग कर खेत साफ किए जा सकते हैं। आदेश का उल्लंघन करने पर कार्रवाई की जाएगी। जारी आदेशानुसार नरवाई जलाने पर पर्यावरणीय क्षति की भरपाई के लिए जुर्माने का प्रावधान भी किया गया है, जिसके तहत 02 एकड़ से कम भूमि वाले कृषकों पर 2500 रुपये प्रति घटना, 02 से 05 एकड़ तक भूमि वाले कृषकों पर 5000 रुपये प्रति घटना और 05 एकड़ से अधिक भूमि वाले कृषकों पर 15000 रुपये प्रति घटना पर्यावरणीय मुआवजे के रूप में वसूले जाएंगे। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने किसानों से अपील की है कि पर्यावरण संरक्षण एवं जनहित को दृष्टिगत रखते हुए नरवाई न जलाएं और नरवाई प्रबंधन के वैकल्पिक उपाय अपनाएं।

कलेक्टर ने की किसानों से नरवाई नहीं जलाने की अपील

ओलावृष्टि से प्रभावित फसलों को हुई क्षति का राजस्व अधिकारियों ने खेतों में पहुंचकर किया निरीक्षण

विदिशा,(निप्र)। विदिशा जिले के शमशाबाद, नटेरन व कुरवाई सहित अन्य क्षेत्रों के जिन ग्रामों में गत दिवस हुई ओलावृष्टि के कारण फसल क्षति हुई है उन ग्रामों में आज संबंधित क्षेत्र के राजस्व अधिकारियों एसडीएम, व तहसीलदार ने मय अमले के साथ पहुंचकर निरीक्षण व सर्वे किया है। जिन ग्रामों में फसलों को क्षति हुई थी उन ग्रामों में किसानों के खेतों में पहुंचकर राजस्व अधिकारियों ने फसलों का प्राथमिक आंकलन कर आवश्यक कार्यवाही की है। निरीक्षण के दौरान राजस्व अधिकारियों ने किसानों के खेत में बारीकी से फसल क्षति का निरीक्षण किया और किसानों से संवाद कर उन्हें हर संभव मदद का आश्वासन दिया है। विदिशा तहसील के ग्राम अंडिया में जिन किसानों के खेतों में ओलावृष्टि से फसल को नुकसान हुआ वहां अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर , विदिशा एसडीएम श्री क्षितिज शर्मा के द्वारा मौके पर पहुंच कर फसल का सर्वे किया है। इसके अलावा विदिशा तहसील के ग्राम ढोलखेड़ी में भी राजस्व विभाग की टीम ने खेतों में पहुंचकर फसल क्षति का आंकलन किया है और शमशाबाद एसडीएम श्री अजय प्रताप सिंह पटेल, तहसीलदार ने नटेरन तहसील क्षेत्र के ग्राम तोफाखेड़ी, पिपरिया और हीरापुर पहुंचकर किसानों के खेतों में ओलावृष्टि से प्रभावित फसलों स्थल निरीक्षण किया।

शनिवार को प्रातः से ही ओलावृष्टि से प्रभावित फसलों को हुई क्षति का सर्वे कार्य प्रशासन द्वारा सतत जारी रहा। गुलाबगंज के ग्राम संतापुर , अंडिया कलां और गूलरखेड़ी में ग्यारसपुर एसडीएम श्रीमती शशि मिश्रा व तहसीलदार ने मौके पर पहुंचकर ओलावृष्टि से प्रभावित फसल का मौका मुआयना किया।

विदिशा जिले की जिन तहसील क्षेत्र के ग्रामों में ओलावृष्टि से फसलों को नुकसान हुआ उन क्षेत्रों में राजस्व विभाग की टीम ने किसानों के खेतों का निरीक्षण तो किया ही साथ ही किसानों को शासन से हर संभव मदद दिलाए जाने का आश्वासन भी दिलाया।

बिहार- दिल्ली के कृषि अधिकारियों ने ई-उर्वरक टोकन व होम डिलीवरी प्रणाली का किया अध्ययन

विदिशा,(निप्र)। बिहार एवं दिल्ली राज्य के कृषि अधिकारियों के लगभग 15 सदस्यीय दल ने विदिशा जिले का भ्रमण कर यहां लागू की गई ई-विकास उर्वरक वितरण प्रणाली का गहन अध्ययन किया। मध्य प्रदेश शासन द्वारा 1 अक्टूबर 2025 से पायलट प्रोजेक्ट के रूप में तीन जिलों में शुरू की गई इस प्रणाली का विदिशा में सफल क्रियान्वयन हुआ है, जो अब अन्य राज्यों के लिए भी मॉडल बनता जा रहा है। भ्रमण के दौरान अधिकारियों को बताया गया कि रबी सीजन में जिले के लगभग 90 प्रतिशत कृषकों ने ई-उर्वरक टोकन वितरण प्रणाली के माध्यम से उर्वरक प्राप्त किया। इस प्रणाली के तहत किसानों को पारदर्शी, सुगम एवं समयबद्ध तरीके से उर्वरक उपलब्ध कराया गया। विशेष बात यह रही कि जिले में उर्वरकों की होम डिलीवरी व्यवस्था का भी सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया, जिससे किसानों को अतिरिक्त सुविधा मिली। अधिकारियों के दल ने किसानों से सीधे संवाद कर उनके अनुभव साझा किए। किसानों ने इस नई व्यवस्था को सरल, पारदर्शी एवं समय की बचत करने वाली बताते हुए संतोष व्यक्त किया। दल ने विपणन संघ के भंडारण केंद्र रामलीला गोदाम , इमलाई सेवा सहकारी समिति तथा रमन एग्रो प्राइवेट लिमिटेड के होलसेल एवं रिटेल पॉइंट का भी निरीक्षण किया। यहां उन्होंने ई-टोकन बुकिंग से लेकर बुकिंग उपरांत उर्वरक वितरण की पूरी प्रक्रिया को नजदीक से देखा और समझा। भ्रमण के अंत में अधिकारियों ने विदिशा जिले में किए गए इस नवाचार की सराहना करते हुए इसे अन्य राज्यों में लागू करने की संभावनाओं पर सकारात्मक संकेत दिए। यह पहल न केवल किसानों को सुविधा प्रदान कर रही है, बल्कि उर्वरक वितरण व्यवस्था में पारदर्शिता और दक्षता भी सुनिश्चित कर रही है।

जिले में अनेक स्थानों पर जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत अनेक जल संरक्षण गतिविधियां आयोजित

सीहोर,(निप्र)। शासन के निर्देशानुसार प्रदेश के साथ ही सीहोर जिले मे 19 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जनभागीदारी के माध्यम से कुओं, तालाओं, नदियों एवं अन्य जल स्त्रोतों की साफ सफाई एवं गहरीकरण का कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही आमजन को जल संरक्षण के प्रति जागरूक भी किया जा रहा है। अभियान के तहत जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार के लिए जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं नागरिक मिलकर श्रमदान कर रहे हैं, ताकि जल स्त्रोतों का संरक्षण हो सके। इसी क्रम जल संरक्षण गतिविधियों के अंतर्गत 21 मार्च को सीहोर जनपद सीईओ श्रीमती नमिता बघेल सहित अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा ग्राम लसूड़िया परिहार में तालाब की साफ सफाई का कार्य किया गया। इसी प्रकार बुधनी में नगर परिषद के कर्मचारियों द्वारा नर्मदा किनारे साफ सफाई की गई और जल संरक्षण क संदेश दिया गया। उल्लेखनीय है कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में जल संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित खेत, तालाब, अमृत सरोवर, परकोलेशन टैंक, डगवेल, तालाब जीर्णोद्धार, जनभागीदारी के कार्य, कूप एवं बाउंड्री मरम्मत के कार्य किए जा रहे हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान का प्रमुख उद्देश्य जनभागीदारी से जल संरक्षण तथा संवर्धन सुनिश्चित करना है।

इस अभियान के अंतर्गत समाज की भागीदारी तथा और विभिन्न सहयोगी विभागो की समेकित पहल से जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण, भूजल संवर्धन, पूर्व से मौजूद जल संग्रहण संरचनाओं की साफ सफाई एवं जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। अभियान के तहत जल संरक्षण जागरूकता के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया भी किया जा रहा है।

ग्राम दानवाखेड़ा में लगाया गया हैंडपंप, ग्रामीणों को होगी शुद्ध पेयजल की आपूर्ति

बैतूल,(निप्र)। जिले के घोड़ाडोंगरी जनपद अंतर्गत ग्राम दानवाखेड़ा में ग्रामीणों की पेयजल समस्या के समाधान की दिशा में प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई की है। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी की पहल पर वन विभाग के समन्वय से लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा ग्राम में तत्काल बोर करवाकर हैंडपंप स्थापित किया गया है।

इस व्यवस्था से अब ग्रामीणों को सुरक्षित एवं स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो सकेगा। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री मनोज बघेल ने बताया कि हैंडपंप से निकलने वाले पानी की गुणवत्ता की जांच की गई है, जो निर्धारित मानकों के अनुरूप पाई गई है। हैंडपंप स्थापित होने से ग्रामवासियों को बड़ी सुविधा मिलेगी तथा स्वास्थ्य संबंधी जोखिम में भी कमी आएगी।

उल्लेखनीय है कि पूर्व में ग्रामीण झिरिया के जल का उपयोग कर रहे थे। ग्राम आरक्षित वन क्षेत्र में स्थित होने के कारण नलकूप खनन की अनुमति प्राप्त नहीं हो पा रही थी। ग्रामीणों की निरंतर पेयजल मांग एवं दूषित जल उपयोग की शिकायत को देखते हुए कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने तत्काल संज्ञान लेकर वन विभाग के वरिष्ठ एवं स्थानीय अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर अनुमति दिलाई तथा पीएचई विभाग को शीघ्र नलकूप खनन कर हैंडपंप स्थापित करने के निर्देश दिए। निर्देशों के पालन में पीएचई विभाग द्वारा मशीन लगाकर नलकूप खनन किया गया और हैंडपंप स्थापित कर शुद्ध पेयजल प्रदाय प्रारंभ कर दिया गया है। साथ ही ग्राम के पारंपरिक पेयजल स्त्रोतों का क्लोरीनेशन कार्य भी कराया गया है, जिससे ग्रामीणों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध हो सके।

स्वास्थ्य विभाग की टीम भी सक्रिय

ग्राम दानवाखेड़ा में त्वचा संबंधी बीमारी की सूचना मिलते ही स्वास्थ्य विभाग ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 6 सदस्यीय चिकित्सा टीम को गांव भेजकर ग्रामीणों की जांच एवं उपचार सुनिश्चित किया। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी के निर्देश पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज हुरमाड़े द्वारा चिकित्सा दल का ड्यूटी रोस्टर निर्धारित कर ग्राम दानवाखेड़ा के लिए समर्पित टीम गठित की गई है, जो निरंतर स्वास्थ्य परीक्षण, उपचार एवं आवश्यक परामर्श प्रदान कर रही है।

राइट क्लिक

ढोंगी बाबाओं के जाल में फंसी 'रूपालियों' के चेहरे बेनकाब होने ही चाहिए

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

यूं राजनीति में आजकल इस्तीफे अमूमन कम ही होते हैं, और किसी ढोंगी बाबा से संदिग्ध रिश्तों के कारण किसी महिला नेत्री के त्यागपत्र का संभवतः यह पहला मामला है। ऐसे में महाराष्ट्र में वहां की राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष रूपाली चाकणकर के इस्तीफे का स्वागत इसलिए किया जाना चाहिए, क्योंकि यह इस्तीफा जिस कारण से इस्तीफा लिया गया है, वह हमारे समाज की सड़ांध का आईना है। रूपाली चाकणकर पर आरोप है कि उनके महाराष्ट्र के एक ढोंगी बाबा 'कैप्टन अशोक खरात' के साथ संदिग्ध रिश्ते रहे हैं। खुद को 'गॉडमैन' और न्यूरोलॉजिस्ट बताने वाले इस कथित बाबा को हाल में महाराष्ट्र पुलिस ने एक महिला को तीन साल तक नशीली दवाएं पिलाकर रेप करने तथा उसके पास से 58 अश्लील वीडियो बरामद होने के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस को दी शिकायत में पीड़िता ने कहा कि उसकी शादी के बाद 2022 में खरात ने उसे अपने कार्यालय में बुलाया और कहा कि महिला की ज्योतिषीय गणना उसके पति के जीवन को खतरे की ओर इशारा करती हैं। इससे बचने के लिए कुछ अनुष्ठान करने की आवश्यकता है। महिला के अनुसार खरात ने उसे बेहोशी की दवा मिला पेय पिला कर दुष्कर्म किया। वह तीन साल तक उसका यौन उत्पीड़न करता रहा। इसी बीच खुलासा हुआ कि इस फर्जी के बाबा के समर्पित भक्तों में रूपाली चाकणकर भी हैं। कहा जाता है कि रूपाली और उनके कारोबारी पति ने हाल में बाबा के कहने पर एक तांत्रिक अनुष्ठान भी किया, जिसके लिए जरूरी रक्त रूपाली ने अपनी अनामिका को काट कर दिया। रूपाली एक पढ़ी-लिखी महिला हैं और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की महिला राज्य इकाई की भी अध्यक्ष भी हैं। वो राजनीतिक परिवार से हैं। उनकी सास भी पूर्व में राकांपा से पार्षद रहीं हैं। लेकिन रूपाली ने भी राजनीति में आगे बढ़ने के लिए ढोंगी बाबा का सहारा लिया। रूपाली तो एक उदाहरण हैं। इस देश में कई राजनेता फर्जी साधुओं और ढोंगी बाबा के जाल में बुरी तरह उलझे हैं। गहराई से पड़ताल करें तो तकरीबन हर पार्टी में दस-बीस चेहरे आप को मिल जाएंगे, जो अपने राजनीतिक, व्यावसायिक अथवा सत्ता स्वार्थों को पूरा करने के लिए ऐसे ढोंगी बाबाओं की शरण में हैं और उन पर पैसा लुटाते हैं। कुछ यह काम खुलेआम करते हैं तो कई चोरी छिपे। ऐसे में सवाल यह उठता है कि यह देश आगे जा रहा है या पीछे? वैसे भी इस मुल्क में आजादी के बाद जो धंधा सबसे ज्यादा फला-फूला है, वो बाबाओं और साधुओं का है। इनमें से ज्यादातर तो वो हैं, जिनकी न कोई धार्मिक वैधता है और न ही जिनके पास कोई गहरा धार्मिक ज्ञान है, लेकिन वो लोगों की भावनाओं और मजबूरियों का शोषण करने में पीएचडी से भी ज्यादा योग्यता रखते हैं। खास बात ये कि इस धंधे में कभी मंदी नहीं आती, क्योंकि यहां लाखों लोग आस्था के नाम पर मूर्ख बनने और अपना सब कुछ गंवाने के लिए उधार बैठे हैं।

यूं भी आजकल ढोंगी (और कई असली भी!) बाबाओं का धंधा चमकाने और राजनेताओं को अपनी दुकान चलाते रहने के लिए ऐसे बाबाओं का आश्रय लेना जरूरी लगता है। ये रिश्ता परस्परपूरक है। राजनेताओं की दिलचस्पी बाबा की सिद्धी और साधना से ज्यादा उसके भीड़ जुटाने के कौशल में रहती है तो बाबा राजनेताओं से इसलिए वैधता चाहते हैं कि इससे उनके धंधे को सुरक्षा कवच और विस्तार मिल जाता है। राजनेता किसी सत्तारूढ़ पार्टी से जुड़ा हो तो और अच्छा तथा ऐसे किसी बाबा का किसी धर्मस्थल पर कब्जा हो तो सोने में सुहागा। क्योंकि इससे आम श्रद्धालु के मन की रही सही शंका भी दफन हो जाती है और बाबा के हर कृत्य को वह 'गौमाता के पवित्र' भाव से देखता है, भले ही उसकी भीतरी तस्वीर कितनी ही गंदी क्यों न हो। ढोंगी बाबा अशोक खरात की कहानी भी कुछ ऐसी है। वह अपने नाम के आगे 'कैप्टन' लिखता है। बताते हैं कि वह कभी मर्चेंट नेवी में रहा था। उस कठिन नौकरी से बाहर आने के बाद उसने बाबागिरी के सौ टंच फायदे वाले धंधे में कदम रखा। वह खुद को न्यूमरोलॉजिस्ट (अंकशास्त्री) बताकर दूसरों का भविष्य बताने लगा। बाबा की इस तरक्की के पीछे उस पर महाराष्ट्र के सभी राजनीतिक दलों की मेहरबानी रही है। बाबागिरी के धंधे में उतरने के बाद खरात ने नासिक जिले के मिरगांव में ईशान्येश्वर मंदिर की स्थापना की। इसे शिवनिका संस्थान के नाम से जाना जाता है। अशोक खरात इस 'श्री ईशान्येश्वर देवस्थान ट्रस्ट' का अध्यक्ष बना और रूपाली भी इसमें ट्रस्टी थी। खरात का सरकार में इतना असर था कि उसके संस्थान को गंगापुर बांध से पानी देने का फैसला हुआ। इसके लिए 48 किमी लंबी पाइपलाइन भी डाली गई। हालांकि सरकार ने अब इस आदेश को रद्द कर इसकी जांच की घोषणा की है। लेकिन इसके पीछे महाराष्ट्र के तत्कालीन जल संसाधन मंत्री और शरद पवार के करीबी जयंत पाटिल का नाम सामने आ रहा है। इससे इतना तो साफ है कि राष्ट्रवादी कांग्रेस में खरात की गहरी पैठ थी। अशोक खरात ने अपने हुनर से जल्द ही महाराज का दर्जा का पा लिया, खासी दौलत कमाई और कई जगह निवेश भी किया। बाबा की ख्याति और अंध भक्तों की बढ़ती भीड़ नेताओं के चुनावी अरमानों को हवा देने लगती है। रूपाली भी राकांपा अजित पवार गुट में हैं। उन्हें महिला स्व सहायता समूह के लिए अच्छा काम करने के लिए पुरस्कार भी मिल चुका है। गठबंधन की राजनीति ने उसे महाराष्ट्र राज्य महिला आयोग जैसी महत्वपूर्ण संस्था का अध्यक्ष बना दिया। ऐसा संगठन जिस पर महिला अधिकारों की रक्षा का जिम्मा था, उसी की अध्यक्ष एक ढोंगी और बलात्कारी बाबा के जाल में फंसकर उसके लिए समर्पित थी। हालांकि अपने बचाव में रूपाली ने कहा कि उन्हें फंसाया गया है। किसी बाबा के प्रति आस्था रखना उनका निजी मामला है। उन्होंने यह भी कहा कि इस 'षड्यंत्र' के पीछे कौन है, सरकार इसकी जांच कराए। हालांकि वो नैतिक आधार पर इस्तीफा दे रही हैं। रूपाली ने में बचाव में कहा कि वह ढोंगी बाबा को 2019 से जानती हैं, लेकिन उसके काले कारनामों से अनजान थीं। अब इस भोली अदा पर कौन न मर जाए, ऐ खुदा।

रूपाली तो एक उदाहरण है, जो सामने आ गया है। ऐसे नेताओं की लिस्ट लंबी है जो खुले या छुपे तौर पर ऐसे फर्जी बाबाओं के सेवादार अथवा उनके संरक्षक हैं। ढोंगी बाबा की गिरफ्तारी भी उसी महिला की रिपोर्ट पर हुई है, जिसके साथ वह बलात्कार करता आ रहा था। पुलिस में रिपोर्ट करने के बाद बाबा ने उस महिला के पति की हत्या करवाने की धमकी भी दी। उधर पुलिस ने नासिक के 'कनाडा कॉर्नर' स्थित अशोक खरात के कार्यालय 'ओक्स प्रॉपर्टी डीलर एंड डेवलपर' पर छापा मारा तो कई अहम सबूत हाथ लगे। जिनमें 58 अश्लील वीडियो भी शामिल हैं, जिसमें कई हाई प्रोफाइल महिलाएं भी शामिल हैं। खरात की कई बड़े राजनेताओं के साथ तस्वीरें भी मिली हैं। विपक्षी शिवसेना (उद्धव) की फायर ब्रांड नेता सुषमा अंधारे ने रूपाली चाकणकर और ढोंगी बाबा खरात के रिश्तों पर सवाल उठाए। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने महाराष्ट्र नरबलि और अघोरी प्रथा एवं काला जादू निवारण अधिनियम का हवाला देते हुए ठाकरे ने कहा कि 'यदि कानून का पालन करने वाले लोग ऐसे फर्जी बाबाओं का अनुसरण कर रहे हैं, तो राजनीति में दिखाई देने वाले ऐसे फर्जी अनुयायियों के खिलाफ भी कार्रवाई होनी चाहिए।'' ऐसे लोगों में राज्य के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे का नाम भी आ रहा है।

उधर महाराष्ट्र की देवेन्द्र फडणवीस सरकार ने मामले की गंभीरता को देखते हुए एक आईपीएस अधिकारी तेजस्विनी सातपुते के नेतृत्व में जांच के लिए एसआईटी गठित कर दी है। साथ ही खरात के खिलाफ बीएनएस की विभिन्न धाराओं और 'महाराष्ट्र नरबलि और अन्य अमानवीय, अनिष्टकारी व अघोरी प्रथाएं और काला जादू रोकथाम अधिनियम, 2013' के तहत मामला दर्ज किया है। ये धाराएं: 64(1) [बलात्कार], 74, 352, और 351(1) हैं। साथ ही काला जादू अधिनियमः धारा 3(1) और 3(2) भी लगी है। उधर नासिक कोर्ट ने आरोपी अशोक खरात को 24 मार्च तक पुलिस हिरासत में भेज दिया है। पुलिस अब उन अन्य संभावित पीड़ितों की पहचान करने में जुटी है जो खरात के डर से सामने नहीं आ पाई थीं। यहां असल सवाल यह है कि जिन्हें समाज का रहनुमा माना जाता है, जिन पर देश और प्रदेश और चलाने की जिम्मेदारी है, वो इन ढोंगी बाबाओं के अंधभक्त बनकर आम लोगों को क्या संदेश दे रहे हैं?

मुख्यमंत्री डॉ. यादव बोले–प्रदेश के युवाओं को सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित करना होगा

प्रदेशवासियों को भारतीय सेना की समृद्ध विरासत से परिचित कराना जरूरी

कहा–भोपाल में सेना दिवस 15 जनवरी 2027 को होगी नई दिल्ली की 26 जनवरी जैसी परेड

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना ने हर मौके और मोर्चे पर अदम्य साहस, शौर्य और सामर्थ्य का प्रदर्शन किया है। देश के हर व्यक्ति और परिवार के लिए भारतीय सेना की शौर्य और बलिदान की परंपरा से जुड़ना गर्व का विषय है। प्रदेशवासियों को भारतीय सेना की समृद्ध सैन्य विरासत से परिचित कराने और प्रदेश के युवाओं को भारतीय सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से आगामी सेना दिवस 15 जनवरी 2027 को भोपाल में विशेष परेड आयोजित की जाएगी। भोपाल में सेना दिवस पर होने वाले इन कार्यक्रमों में शामिल होने का अनुभव, गणतंत्र दिवस 26 जनवरी पर नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर होने वाले कार्यक्रमों के समान होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की राजधानी भोपाल में होने वाले इस आयोजन के लिए राज्य सरकार, भारतीय सेना को हरसंभव सहयोग प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन और चीफ़ ऑफ आर्मी स्टॉफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी की उपस्थिति में मुख्यमंत्री समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास)

में आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय श्री नीरज मंडलोई, पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाना तथा सेना के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

सेवानिवृत्त सैनिकों का सम्मान भी होगा- मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में हुई सैन्य अधिकारियों की बैठक में सेना प्रमुख, जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने बताया कि आगामी सेना दिवस 15 जनवरी को भोपाल में भव्य सेना दिवस परेड आयोजित की जाएगी। इसके साथ ही शौर्य संध्या, सेना के हथियारों संसाधनों और उपकरणों पर केंद्रित प्रदर्शनी तथा सैन्य अभ्यास का प्रदर्शन भी होगा। सेवानिवृत्त सैनिकों का सम्मान भी किया जाएगा। सभी गतिविधियां गणतंत्र दिवस 26 जनवरी पर नई दिल्ली में होने वाले कार्यक्रमों की भव्यता और गरिमा के समान संचालित की जाएगी। कार्यक्रम में देश के रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह भी शामिल होंगे। यह आयोजन भारतीय सेना की समृद्ध वीरता और सैन्य परंपरा के प्रदर्शन, सैन्य परेड से जन-जन को जोड़ने, सेना और नागरिक प्रशासन के बीच बेहतर समन्वय एवं पारस्परिक विश्वास की भावना विकसित करने और युवाओं को भारतीय सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। बैठक में बताया गया कि सेना दिवस 15 जनवरी 2027 पर होने वाले इन कार्यक्रमों की शुरुआत 1 नवंबर मध्यप्रदेश स्थापना दिवस से होगी। स्थापना दिवस पर मेरी माटी अभियान के अंतर्गत प्रदेश के विभिन्न जिलों से मिट्टी लाकर भोपाल स्थित शौर्य स्मारक में संकल्प वृक्ष लगाया जाएगा। सेना दिवस 15 जनवरी की परेड के लिए 9,11 और 13 जनवरी को अभ्यास होगा। इसी प्रकार 15 जनवरी की शौर्य संध्या के लिए 11 और 13 जनवरी को अभ्यास का क्रम रखा गया है। सैन्य प्रदर्शनी का आयोजन 7 से 12 जनवरी तक होगा। भोपाल के बड़े तालाब में 11 और 12 जनवरी को सैन्य अभ्यास होगा। सेना की परेड के लिए अटल पथ, एयरोसिटी रोड, भेल कालीबाड़ी मार्ग और भेल लिंक रोड प्रस्तावित किए गए हैं। शौर्य संध्या का आयोजन टी.टी. नगर स्टेडियम में और सैन्य प्रदर्शनी जम्बूरी मैदान में लगाई जाएगी। बड़े तालाब पर वॉटर स्पोर्ट्स, एयर शो और सैन्य अभ्यास गतिविधियां होंगी। प्रारंभिक कार्यक्रम के रूप में प्रदेश के स्थापना दिवस 1 नवंबर 2026 को होने वाले 'मेरी माटी अभियान' के अंतर्गत हॉट एयर बैलून गतिविधि, मोटर साइकिल रैली, दौड़ तथा अन्य गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

एक भारत–श्रेष्ठ भारत के विचार को सशक्त करेंगे

सेना दिवस सेना दिवस प्रतिवर्ष 15 जनवरी को जनरल केएम करियप्पा द्वारा वर्ष 1949 में भारतीय सेना के अंतिम ब्रिटिश कमांडर-इन-चीफ जनरल सर एफआरआर बुचर से भारतीय सेना की कमान संभालने की याद में मनाया जाता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के विचार को सशक्त करने और सेना व नागरिकों के संबंधों को सुदृढ़ करते हुए भारतीय सेना में राष्ट्रव्यापी जनभागीदारी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय आयोजनों के विकेन्द्रीकरण की यह पहल वर्ष 2023 से आरंभ हुई। ऐसे आयोजन देश के लिए शहीद हुए शूरवीरों का स्थानीय स्तर पर सम्मान करने और उन्हें याद करने का भी अवसर देते हैं। सेना दिवस पर इस प्रकार की पहली परेड बैंगलुरू में वर्ष 2023 में, लखनऊ में 2024 में, पुणे में 2025 में और 2026 में जयपुर में आयोजित की गई। इन आयोजनों से युवाओं को भारतीय सेना में सेवाएं देने के लिए प्रेरित करने में भी मदद मिली है। बैठक में लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन, लेफ्टिनेंट जनरल अरविंद चौहान, लेफ्टिनेंट जनरल रंजीत सिंह, मेजर जनरल विकास लाल, ब्रिगेडियर नितिन भाटिया, कर्नल सौरभ कुमार, सन्नी जुनेजा, राजेश बंडले तथा अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

हिन्दी पत्रकारिता की द्विशताब्दी पर सप्रे संग्रहालय में समारोह कल

भोपाल। हिन्दी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष समारोह श्रृंखला की कड़ी में माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थासन, भोपाल में 25 मार्च 2026 को सुबह 10:00 बजे महोत्स व का आयोजन किया गया है। राज्यहपाल मंगूभाई पटेल समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। बरकतउल्लाआ विश्व विद्यालय के कुलगुरु डॉ. एस. के. जैन अध्ययक्षता करेंगे। विजयमनोहर तिवारी, कुलगुरु माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीलय पत्रकारिता एवं संचार विश्ववविद्यालय मुख्यी वक्तां रहेंगे। उल्लेवखनीय है कि 30 मई, 1826 को कोलकाता से पं. युगलकिशोर शुक्लक ने हिन्दीक के पहले समाचारपत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का संपादन-प्रकाशन किया था। इस ऐतिहासिक प्रसंग में हिन्दी पत्रकारिता की 200 साल की गौरवशाली यात्रा का पुनरावलोकन होगा। आत्माावलोकन भी किया जाएगा। 'समग्र भारतीय प संपादन-प्रकाशन किया था। इस ऐतिहासिक प्रसंग में हिन्दी पत्रकारिता की 200 साल की गौरवशाली यात्रा का पुनरावलोकन होगा। आत्माशवलोकन भी किया जाएगा। 'समग्र भारतीय पत्रकारिता'शोध ग्रंथ पर चर्चा होगी। मूर्धन्यत संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी के बलिदान दिवस पर उन्हें स्मवरणांजलि अर्पित की जाएगी। शुभारंभ सत्र के तुरंत बाद राज्यसभा टी.वी. के पूर्व संपादक राजेश बादल की अध्यीक्षता में विचार गोष्ठी होगी।

समारोह में वरिष्ठ संपादक विकास मिश्र (नागपुर) को माधवराव सप्रे सम्मानि, अरुण नैथानी (चण्डीगढ़) को महेश गुप्तान सृजन सम्मान और ब्रजेश शर्मा (नरसिंहपुर) को आंचलिक पत्रकारिता के राज्य स्त्रीय 'अशोक मानोरिया पुरस्कार'से सम्मानित किया जाएगा।

आरजीपीवी की कैंटीन में स्टूडेंट को परोस दी छिपकली

कर्मचारी ने बताया शिमला मिर्च का टुकड़ा, छात्रों ने वीडियो बनाया, प्रबंधन से जांच की मांग

भोपाल। भोपाल के राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (RGPV) की कैंटीन के भोजन में छिपकली मिलने का दावा किया गया है। छात्रों का आरोप है कि डिनर के दौरान परोसी गई सब्जी में छिपकली मिली, जिसे लेकर जब उन्होंने शिकायत की तो कैंटीन कर्मचारी ने उसे शिमला मिर्च का टुकड़ा बताया। छात्रों ने इस घटना का

वीडियो भी बना लिया, जो सोशल मीडिया पर सामने आया है। जानकारी के अनुसार रविवार शाम छात्र डिनर के लिए कैंटीन पहुंचे थे, जहां उन्हें दाल, शिमला मिर्च की सब्जी, रोटी और चावल परोसा गया। खाना शुरू करते ही एक छात्र को सब्जी का स्वाद अजीब लगा। संदेह होने पर जब उसने सब्जी को ध्यान से देखा तो उसमें एक मरी हुई छिपकली दिखाई दी, जो पूरी तरह से सब्जी के साथ तली हुई थी। यह देखते ही वहां मौजूद अन्य छात्र भी चौंक गए और कैंटीन में हड़कंप मच गया।

शिकायत पर कर्मचारी ने किया इनकार

छात्रों ने तुरंत कैंटीन कर्मचारियों को इसकी जानकारी दी, लेकिन आरोप है कि कर्मचारी ने इसे छिपकली मानने से इनकार कर दिया। उसने दावा किया कि वह केवल शिमला मिर्च का टुकड़ा है। घटना के दौरान मौजूद छात्रों ने घटनाक्रम का वीडियो रिकॉर्ड कर लिया। बाद में इसे सोशल मीडिया पर शेयर किया गया। वीडियो सामने आने के बाद अन्य छात्रों और लोगों ने भी कैंटीन व्यवस्था पर सवाल उठाने शुरू कर दिए हैं। छात्रों का कहना है कि कैंटीन के खाने की गुणवत्ता को लेकर पहले भी कई बार शिकायतें की जा चुकी हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि साफ-सफाई और भोजन की गुणवत्ता में लगातार लापरवाही बरती जा रही है, लेकिन प्रबंधन की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जाती। घटना के बाद छात्रों ने विश्वविद्यालय प्रशासन से मामले की जांच कर जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।

अब सिफारिशी चश्मे से नहीं, मर्ज की गहराई से तय होगी मदद

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने स्वेच्छा अनुदान की बहती गंगा पर अब 'कड़ाई का बांध' लगा दिया है। अब तक धारणा यह थी कि अगर आपकी पहुंच 'ऊंची' है और रसूख 'तगड़ा', तो सरकारी खजाने की चाबी आपके इलाज के लिए झट से घूम जाती थी। लेकिन मुखिया ने अब साफ कर दिया है कि फाइव स्टार सुविधाओं वाले

मोहन का मंत्रालय
आशीष चौधरी

उन आलीशान अस्पतालों में एशों-आराम फरमाने वाले 'वीआईपी' मरीजों को अनुदान बांटने की परंपरा अब बीते जमाने की बात हो गई है। मुख्यमंत्री ने अफसरों को दो टूक कह दिया है-मदद सिर्फ उसे, जिसे वाकई जरूरत है। यानी अब फाइव स्टार अस्पतालों के बिलों पर सरकारी मुहर लगना टेढ़ी खीर होगी। अगर बहुत ही अनिवार्य हुआ, तो फाइल सीधे 'बड़े साहब' की मेज पर चर्चा के बाद ही हिलेगी। आम आदमी के हक के लिए उठाया गया यह कदम वाकई काबिले तारीफ है, क्योंकि अब खजाना रसूखदारों की सेहत के लिए नहीं, गरीबों की जान बचाने के लिए खुलेगा।

CM जन्मदिन पर दे सकते हैं 'रिटर्न गिफ्ट'

भाजपा के उन निष्ठावान नेताओं के लिए, जो लंबे समय से 'वेटिंग लिस्ट' में टिकट कटाए बैठे हैं, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अपने जन्मदिन पर खुशियों की सौगात ला सकते हैं। वित्त आयोग में अध्यक्ष की ताजपोशी के बाद अब खाली पड़े तीन दर्जन से अधिक निगम-मंडलों और आयोगों में नियुक्तियों का रास्ता साफ होता दिख रहा है। सत्ता और संगठन के बीच रायशुमारी पूरी हो चुकी है और नामों की लिस्ट पर अंतिम मुहर लगनी बाकी है। कार्यकर्ताओं में कानाफूसी है कि जन्मदिन पर 'रिटर्न गिफ्ट' के तौर पर पद का 'पावर' मिल सकता है। अब देखना यह है कि किसके भाग्य का छींका टूटता है और किसे अभी और 'तपस्या' करनी पड़ती है।

राज्यपाल की हसरत, अध्यक्ष पर मिली राहत

भाजपा के एक ऐसे दिग्गज नेता, जो सालों से राजनीतिक हाशिये पर रहकर 'सही वक्त' का इंतजार कर रहे थे, उन्हें आखिरकार नवरात्रि के शुभ मुहूर्त में 'अध्यक्ष' की कुर्सी नसीब हो गई। गलियारों में चर्चा है कि वरिष्ठ नेता जी के सपने तो किसी राजभवन में 'महामहिम' बनकर राज करने के थे, लेकिन जब दिल्ली और भोपाल के 'हाई कमान' से ठंडी प्रतिक्रिया मिली, तो उन्होंने 'जो मिल जाए वही सही' की तर्ज पर अध्यक्ष पद को ही माथे से लगा लिया। अपनी बेबाक और 'मुखर वाणी' के लिए मशहूर इन नेता जी को कुर्सी देकर संगठन ने फिलहाल उनकी नाराजगी पर 'पद का मरहम' तो लगा ही दिया है।

बिल्डरों की राह के कांटे, खुद ही किनारे हुए

एक प्रमोटी आईएएस अफसर संजीव श्रीवास्तव अब मंत्रालय की चकाचौंध छोड़ 'सिरों की गिनती' यानी जनगणना के काम में अपनी ऊर्जा खपाएंगे। मजेदार बात यह है कि इस 'वनवास' के लिए सरकार ने जब पांच दर्जन अफसरों से पूछा, तो सबने कन्नी काट ली, लेकिन संजीव जी ने खुद ही 'हां' कर दी। चर्चा है कि पीडब्ल्यूडी विभाग में उनकी कार्यशैली ने कुछ रसूखदार बिल्डरों और विभाग के ही कुछ 'अति-सक्रिय' अफसरों की रातों की नींद हराम कर दी थी। श्रीवास्तव जी के रहते फाइलें जिस रफ्तार से रुक रही थीं, उससे विकास की गंगा में 'ब्रेक' लग गया था। अब उनके जनगणना निदेशालय जाने की खबर से मंत्रालय के गलियारों और बिल्डरों के ड्राइंग रूम में राहत है। शायद इसे ही कहते हैं-किसी का जाना, किसी के लिए 'दिवाली' बन जाना।

.....तो सचिवालय में सन्नाटा ही सुखद!

मंत्रालय के एक खास सचिवालय का आलम यह है कि वहां अधिकारियों की फौज तो है, लेकिन अनुशासन की 'वर्दी' नदारद है। मुखिया यदि भोपल से बाहर है तो सचिवालय के डिप्टी सेक्रेटरी से लेकर ऊपर तक के साहबान 'अदृश्य' मोड में चले जाते हैं। दूर-दराज से अपनी फरियाद लेकर आने वाले लोग जब बंद कमरों की कुंडी खटखटाते हैं, तो रटा-रटाया जवाब मिलता है–'साहब प्रभार वाले विभाग की मीटिंग में व्यस्त हैं।' हकीकत तो यह है कि मुखिया की गैरमौजूदगी का फायदा उठाकर अधिकारी 'अन्यत्र' सुख भोग रहे होते हैं। कायदे से तो मुखिया की अनुपस्थिति में काम की रफ्तार दोगुनी होनी चाहिए, लेकिन यहाँ तो साहबों ने 'गायब होने' को ही अपनी मुख्य ड्यूटी मान लिया है।